तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष-8, अंक - 5- 6, अप्रैल - मई 2020, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

विषम हालात से लड़ रहे हैं हम
दूरवर्ती शिक्षा से पढ़ रहे हैं हम

मजबूर हालात

हम मजबूर हैं अपनों की बेरुखी से,
पहाड़ सी लगती, घर की दूरी से।
आये थे हम अपनी मर्जी से,
और लबरेज थे खुद्दगर्जी से।।

ज़िंदगी 'बेचैन' है और 'हालात' से 'बेखबर' भी,
बेदर्दी इधर भी है और उधर भी।
परेशान हम भी हैं और घरवाले भी,
भूख से बेहाल हम भी हैं और बूढ़े माँ-बाप भी।।

न रोटी मिली, न मज़दूरी,
मन को कचोटती, अपनों से दूरी।
असहज करती दहशत और बीमारी।
निकल पड़े पहन 'मास्क', बनाते सामाजिक दूरी।।

लौटने की जिद्द नहीं है 'साहब',
अपनों से बिछड़ने का डर है 'जनाब'।
जिंदगी बसर करनी है, वहाँ भी कर लेंगे 'साहब'
और मरना पड़ा तो अपनों के बीच तो मर लेंगे 'जनाब'

खुशी से घर को छोड़ आने का गम,
पैदल ही घर लौट आने का दम।
टूट गया शासन से सहायता का भ्रम,
और इन्सानी पहचान खोते आप और हम।।

डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

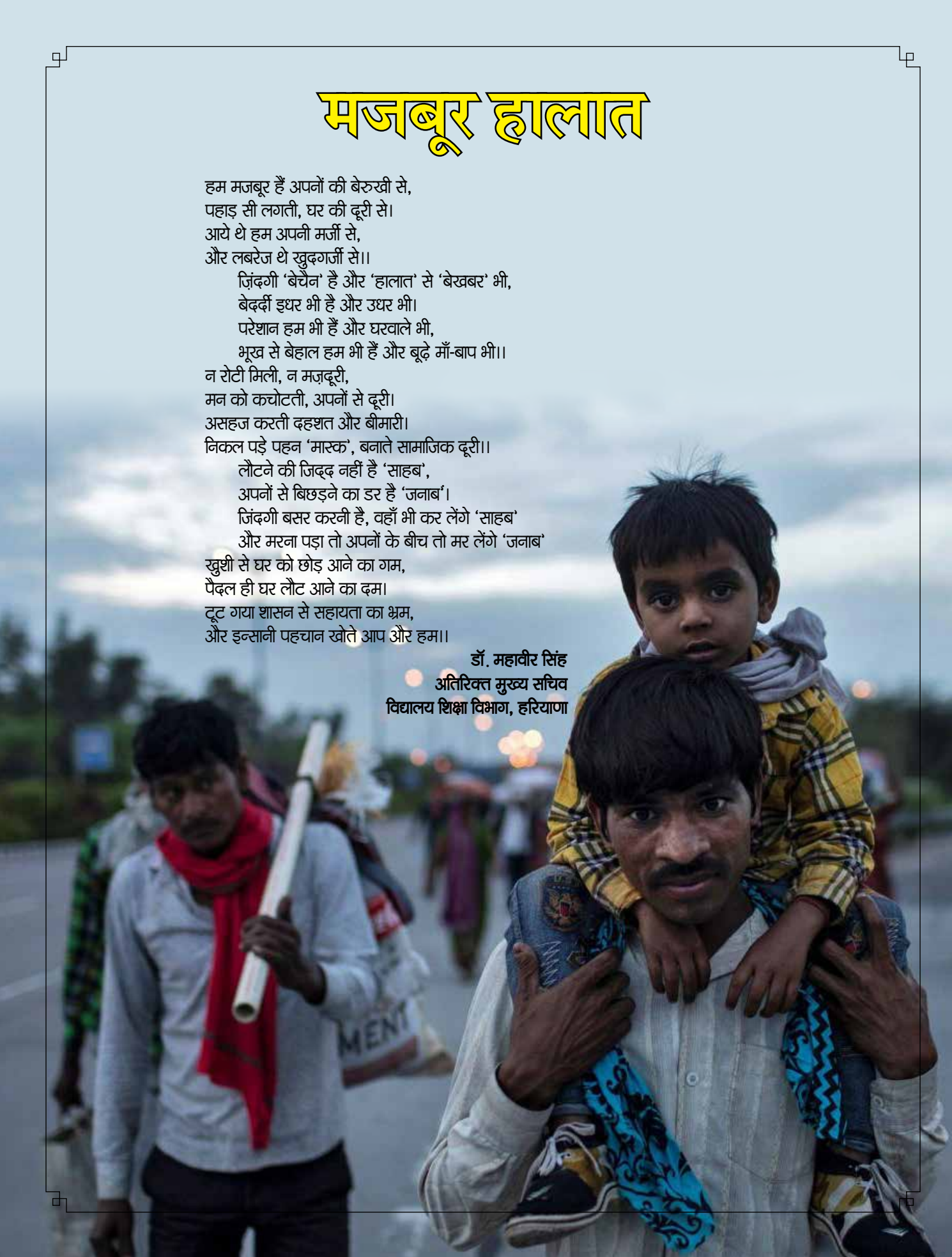

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

अप्रैल - मई 2020

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
अमनीत पी. कुमार
महानिदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

प्रदीप कुमार
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

डॉ. रजनीश गर्ग
राज्य परियोजना निदेशक
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

सतिन्द्र सिवाच
संयुक्त निदेशक (प्रशासन),
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by delhi press patra prakahsna Pvt. Ltd. at its printing press PSPC Press 50, DLF Industrial Estate,

Faridabad- 121003,(Haryana)

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"जहाँ तक दिखाई देता है, वहाँ तक चलिए। वहाँ जाकर आगे भी दिखाई देगा।"

» मजबूर हालात 2
» टीवी के माध्यम से पढ़ाई करवाने वाला पहला राज्य बना हरियाणा : शिक्षामंत्री 5
» लॉकडाउन के कारण शिक्षण-संस्थान बंद हैं, शिक्षण नहीं 6
» सुभीते से चल रहा है दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम 8
» प्रदेश ने अपनाया एनसीईआरटी का वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर 12
» गोहाना की छात्राओं ने रचा इतिहास 13
» कोरोना : नवीनतम जानकारी 14
» अविस्मरणीय रहा अन्तरराष्ट्रीय एडवेंचर कैम्प, पचमढ़ी 16
» मुखिया के प्रयासों से बदले विद्यालय के हालात 20
» अपार क्षमता है साहित्य में 21
» काल के भाल पर संस्कृति का किरीट है विरासत 22
» खेल-खेल में विज्ञान 24
» नृत्य कला का जादू बिखेरती सुनैना लोहान 26
» कविताएँ 27
» बाल-सारथी 28
» पेड़-पौधों से सीखें विषम परिस्थितियों में भी डटे रहना 30
» तस्वीर का रहस्य 31
» Covid-19: Online classes and the digital divide 32
» World Book and Copyright Day 35
» STAYCATION 36
» Mental Health Of Children In Coronavirus Lockdown 38
» Cultivating Adaptability: Pandemic Coping Skill 40
» Humans in a cage: the Earth rejoices 46
» Amazing Facts 48
» The Unseen 49
» आपके पत्र 50

मुखपृष्ठ छाया : प्रदीप मलिक

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

शिक्षक भी हैं कोरोना योद्धा

कोविड-19 के कारण आज हमारा देश और पूरा विश्व भीषण संकट का सामना कर रहा है। देश में लॉकडाउन है। संकट की इस घड़ी में चिकित्सक एवं आवश्यक सेवाओं में लगे लोग दिन-रात विषम परिस्थितियों में कार्य कर रहे हैं। शिक्षा जगत के लिए भी यह स्थिति चुनौतियों से भरी हुई है। शिक्षण संस्थान में नव सत्र के आगमन पर जो चहल-पहल आरंभ हो जाती थी, वह नदारद है। लेकिन हर्ष का विषय है कि प्रदेश सरकार के द्वारा अनेक ऐसे कदम उठाए गए हैं जो संकट की इस घड़ी में शिक्षा जगत के लिए काफी कारगर सिद्ध हुए हैं। माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने राजकीय एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों को 'तीन एस' का सूत्र दिया है- जो है स्टे एट होम, स्टडी एट होम, स्कूल एट होम। प्रदेश के विद्यार्थी इस पर अमल करते हुए घर पर ही शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। ई-संचार के अनेक तरीकों के जरिये विद्यार्थियों के शिक्षण का कार्य प्रदेश में बहुत अच्छी प्रकार से चल रहा है। अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय, महानिदेशक महोदया एवं अन्य अधिकारीगण पल-पल इस बात पर ध्यान दे रहे हैं कि संकट की इस घड़ी में विद्यार्थियों की पढ़ाई निर्बाध रूप से चलती रहे। प्रदेश में पाठ्यपुस्तकों का आदान-प्रदान, टीवी के माध्यम से शिक्षण आदि कई ऐसी पहलकदमी हुई हैं जिन्हें देश भर में प्रशंसा मिली है।

हमारे शिक्षक भी किसी कोरोना योद्धा से कम नहीं हैं जो कभी घर-घर जाकर मिड-डे मील का राशन विद्यार्थियों को वितरित कर रहे हैं तो कभी विभाग या सरकार द्वारा सौंपे गए सर्वेक्षण आदि कार्यों को कर्तव्यनिष्ठा से करने में जुटे हुए हैं। दूरवर्ती शिक्षण के तहत वे निरंतर नवाचार तथा ई-संचार के नवीनतम शिक्षण-तंत्र से जुड़ कर विद्यार्थियों को शिक्षित कर रहे हैं। बहुत से उत्साही शिक्षक इस दौरान ई-लर्निंग की सामग्री तैयार करने में जुटे हैं। आइये! कामना करें कि जल्दी ही संकट की यह घड़ी समाप्त होगी। फिर से विद्यालय बाल-कलरव से गूँजेंगे। तब तक घर में रहिए, सुरक्षित रहिए।

-संपादक

टीवी के माध्यम से पढ़ाई करवाने वाला पहला राज्य बना हरियाणा : शिक्षामंत्री

शिक्षा मंत्री कँवर पाल ने कहा कि राज्य सरकार कोविड-19 के कारण बनी परिस्थितियों के दौरान अपने स्कूली विद्यार्थियों की पढ़ाई निरंतर बनाए रखने के लिए प्रयासरत है। इसमें जहाँ डीटीएच के माध्यम से पाठ्यक्रम का प्रसारण किया जा रहा है, वहीं हरियाणा एजुसेट के चार चैनलों का प्रसारण प्रदेश के सभी केबल आपरेटरों द्वारा किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि प्रतिदिन सात घंटे का विषयवार व कक्षावार प्रसारण किया जा रहा है और वही पाठ्यक्रम उसी दिन फिर से प्रसारित किया जाता है। इसके अलावा, एनसीईआरटी के माध्यम से स्वयंप्रभा चैनल पर भी स्कूल शिक्षा का प्रसारण किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि टीवी के माध्यम से पढ़ाई करवाने की पहल करने वाला हरियाणा पहला राज्य है, जहाँ राजकीय व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों को शिक्षा दी जा रही है। शिक्षा मंत्री ने बताया कि देश में कोरोना वायरस से पैदा हुई परिस्थितियों के कारण हरियाणा में अभी स्कूल बंद हैं। स्कूली विद्यार्थियों की पढ़ाई का नुकसान न हो, इसलिए हरियाणा सरकार ने विद्यार्थियों को ऑनलाइन तथा टीवी के माध्यम से शिक्षा देने की प्रक्रिया शुरू की है। उन्होंने बताया कि वैसे तो एजुसेट के माध्यम से भी विद्यार्थियों को शिक्षा दी जा रही है, फिर जिस क्षेत्र में केबल टीवी नहीं हैं उस क्षेत्र के विद्यार्थियों को डिजिटल सेवा प्रदाता कंपनियों डीडी, एयरटेल, टाटा स्काई, वीडियोकोन, डिश टीवी से पाठ्यक्रम पढ़ाया जा रहा है। इसके अलावा, एनसीईआरटी के माध्यम से स्वयंप्रभा, पाणिनि, किशोर मंच व नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के अन्य चैनलों पर भी स्कूली शिक्षा का प्रसारण किया जा रहा है।

उन्होंने एक अन्य प्रश्न के उत्तर में बताया कि कोविड-19 के कारण बच्चों के परीक्षा परिणामों में विशेष व्यवस्था की गई। पहली से आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों को बिना परीक्षा के पास किया गया। कक्षा ग्यारहवीं के वे विद्यार्थी जिनके पास गणित विषय था तथा उनका पेपर नहीं हो पाया, उनका बिना गणित के पेपर के परिणाम जारी किया।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं की मूल्यांकन प्रक्रिया में बदलाव करके घर पर मूल्यांकन करने की व्यवस्था की गई है। दसवीं कक्षा के चार विषयों के आधार पर ही दसवीं का परिणाम जल्द ही जारी किया जाएगा। इसी प्रकार दस जमा दो कक्षा के सन्दर्भ में यह निर्णय लिया गया कि जितने पेपर हो चुके हैं उनकी उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन आरंभ कर लिया जाए तथा परिणाम तैयार कर लिया जाए। बकाया पेपर को लेकर जब केंद्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के स्तर पर निर्णय होगा उसी के अनुसार हरियाणा सरकार द्वारा कार्यवाही की जाएगी। शिक्षा मंत्री ने बताया कि दसवीं कक्षा पास करने वाले विद्यार्थियों को चार विषयों के आधार पर ही आईटीआई, हॉस्पिटेलिटी, पॉलिटेक्निक एवं अन्य कोर्सों में दाखिला मिलेगा। विद्यार्थी साइंस स्ट्रीम में भी वैकल्पिक दाखिला ले सकेगा तथा उचित समय पर परीक्षा का आयोजन होने पर उसे साइंस विषय में पास होना अनिवार्य होगा। यदि विद्यार्थी दसवीं की साइंस की परीक्षा में फेल हो जाता है तो ग्यारहवीं कक्षा की बिना साईंस संकाय वाली पढ़ाई जारी रख सकेगा।

उन्होंने बताया कि कोविड-19 के कारण अभिभावकों को फीस अदायगी में आ रही दिक्कतों के मद्देनजर विभाग द्वारा दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। मान्यता प्राप्त प्राइवेट स्कूलों को कहा गया है कि स्कूल लॉकडाउन की अवधि में अभिभावकों को तीन महीने की अग्रिम फीस, शुल्क लेने के लिए बाध्य न करें, केवल मासिक फीस ली जाए तथा यातायात शुल्क न लिया जाए। फीस देने में असमर्थ अभिभावकों पर फीस देने का दबाव न बनाया जाए। फीस के अभाव में बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाई से वंचित भी न किया जाए तथा उनका नाम न काटा जाए।

-शिक्षा सारथी डेस्क

लॉकडाउन के कारण शिक्षण-संस्थान बंद हैं, शिक्षण नहीं

प्रमोद कुमार

विश्वव्यापी महामारी के कारण प्रदेश के विद्यालय बंद हैं। लॉकडाउन की स्थिति के कारण विद्यार्थी घरों में ही हैं। लेकिन हरियाणा सरकार एवं विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा इस समय अनेक ऐसे कदम उठाए गए हैं जिनसे इस आपदा की घड़ी में भी विद्यार्थियों की शिक्षा प्रभावित न हो। इसी दौरान टीवी के माध्यम से भी पठन-पाठन का कार्य जारी है। गौरतलब है कि हरियाणा पूरे देश में ऐसी पहल करने वाला पहला राज्य बना है। इस दौरान शिक्षण कार्य निर्बाध जारी रखने के लिए विभाग द्वारा अनेक सराहनीय कदम उठाए गए हैं, जो इस प्रकार हैं-

1.बिना परीक्षा के विद्यार्थियों को अगली कक्षा में अपग्रेड किया गया- कोविड-19 के कारण बच्चों के परीक्षा परिणामों में विशेष व्यवस्था की गई। पहली से आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों को बिना परीक्षा के पास किया गया। कक्षा ग्यारहवीं के वे विद्यार्थी जिनके पास गणित विषय था तथा उनका पेपर नहीं हो पाया, उनका बिना गणित के पेपर के परिणाम जारी किया।

2.बोर्ड परीक्षाओं को लेकर विशेष योजना- बोर्ड परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं की मूल्यांकन प्रक्रिया में बदलाव किया गया, जो पहले ऑन द स्पॉट कराई जाती थी, अब घर पर मूल्यांकन करने की व्यवस्था की गई। दसवीं कक्षा के चार विषयों के आधार पर ही 20 मई को दसवीं का परिणाम जारी करने का लक्ष्य रखा गया। बारहवीं के सन्दर्भ में यह निर्णय लिया गया कि जितने पेपर हो चुके हैं उनकी उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन आरम्भ कर लिया जाए तथा परिणाम तैयार कर लिया जाए। बचे हुए पेपरों को लेकर जब मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालयके स्तर पर निर्णय होगा तदानुसार कार्यवाही कर ली जाएगी।

3.दसवीं कक्षा के उपरान्त दाखिला व्यवस्था- दसवीं कक्षा पास करने वाले विद्यार्थियों को चार विषयों के आधार पर ही आईटीआई, हॉस्पिटेलिटी, पोलिटेक्नीक एवं अन्य विषयों में दाखिला मिलेगा।विद्यार्थी साइंस स्ट्रीम में भी वैकल्पिक दाखिला ले सकेगा तथा उचित समय पर परीक्षा का आयोजन होने पर उसे साइंस विषय में पास होना अनिवार्य होगा। यदि विद्यार्थी दसवीं की साइंस की परीक्षा में फेल हो जाता है तो ग्यारहवीं कक्षा की बिना साईंस संकाय वाली पढ़ाई जारी रख सकेगा।

4.दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम- हरियाणा एजुसैट के चार चैनलों का प्रसारण सभी केबल आपरेटर द्वारा किया जा

रहा है। पूरे हरियाणा में एजुसैट के माध्यम से पढ़ाई हो रही है। 7 घंटे का कक्षावार, विषयवार प्रसारण हो रहा है। बिजली की बाधा के मद्देनजर 7 घंटे का पुनः प्रसारण किया जाता है। एनसीईआरटी के माध्यम से स्वयंप्रभा चैनल जो स्कूल शिक्षा का कार्यक्रम चलाते हैं तथा जो डीटीएच (डीडी, एयरटेल, टाटा स्काई, वीडियोकोन, डिश टीवी) पर उपलब्ध हैं, इन चैनलों पर हरियाणा के पाठ्यक्रम पर आधारित कंटेन्ट के प्रसारण के लिए 2 घंटे का तथा पुनः प्रसारण के लिए भी 2 घंटे का समय प्राप्त कर लिया गया है।

5. पुस्तकों की आपूर्ति परस्पर आदान-प्रदान से- राज्य में निःशुल्क पाठ्य पुस्तकों की आपूर्ति लॉकडाउन के कारण बाधित हो गई है। पुस्तकों की कमी को पूरा करने के लिए विभाग द्वारा प्रयास किए गए। अब विद्यार्थी आपसी आदान-प्रदान से पुरानी पुस्तकें ले रहे हैं तथा स्कूल प्रबन्धन समिति, पंचायत, अभिभावक, अध्यापक मिलकर यह कार्य कर रहे हैं। पूरे समाज द्वारा अध्यापकों और स्कूल मुखियाओं के इस प्रयास को सराहा गया है जिन्होंने पुस्तकों के आदान-प्रदान को सफल बनाने में मदद की है। इस कारण आज सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी पुस्तकों के माध्यम से दूरवर्ती शिक्षा में भाग ले पा रहे हैं।

6. प्राइवेट स्कूलों की फीस एवं दाखिले- कोविड-19 के कारण अभिभावकों को फीस अदायगी में आ रही दिक्कतों के मद्देनजर विभाग द्वारा दिशा-निर्देश जारी किए गए। स्कूल लॉकडाउन की अवधि में तीन महीने की अग्रिम फीस/शुल्क लेने के लिए बाध्य न करें, केवल मासिक फीस ली जाए तथा यातायात शुल्क न लिया जाए। फीस देने में असमर्थ अभिभावकों पर फीस देने का दबाव न बनाया जाए। फीस के अभाव में बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाई से वंचित न किया जाए तथा उनका नाम न काटा जाए। यदि अभिभावक मासिक शुल्क स्थगित करने का आग्रह करता है तो स्कूल प्रबन्धन इस आपदा के मद्देनजर आग्रह पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करके राहत प्रदान करे।

7.मध्याह्न भोजन का वितरण- लॉकडाउन के कारण विद्यालय बन्द हैं। विद्यार्थियों की कुपोषण की समस्या को हल करने के लिए तथा आहार की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा मिड-डे मील की व्यवस्था को बनाए रखने का प्रयास किया गया। इसमें अध्यापकों द्वारा सूखा अनाज घर-घर जाकर बाँटा गया तथा कुकिंग कोस्ट बच्चों के खाते में जारी की गई। शिक्षा विभाग का यह प्रयास बहुत ही सराहनीय रहा।

8. ऑनलाइन पठन-पाठन- इसके लिए एनसीईआरटी के विभिन्न पोर्टल पर उपलब्ध सामग्री जैसे-दीक्षा, सीसीटी, ई-पाठशाला, स्वयंप्रभा, यू-ट्यूब चैनल, एनटीएएवं सम्पर्क फाउंडेशन के मोबाइल एप्प, एससीईआरटीहरियाणा और उत्कर्ष सोसाइटी हरियाणा द्वारा उपलब्ध करवाई गई

सामग्री से ऑनलाइन पढ़ने, व्हाट्सएप्प ग्रुप बनाकर कंटेन्ट और वीडियो शेयर करके ई-लर्निंग का कार्य करने हेतु प्रयास आरम्भ किए गए।

9. राज्य कोरोना राहत कोष में योगदान- माननीय मुख्यमंत्री जी के आह्वान पर विद्यालय शिक्षा विभाग के कर्मचारियों द्वारा अपने वेतन में से राहत कोष में अपना स्वैच्छिक अंशदान दिया गया। प्रदेश के कुल कर्मचारियों में स्कूल शिक्षा विभाग की हिस्सेदारी 35.55 प्रतिशत है जबकि पूरे राज्य के कर्मचारियों के स्वैच्छिक अंशदान का अवलोकन किया जाए तो विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा 77.85 प्रतिशत अंशदान किया गया है जबकि राज्य के दूसरे विभागों का अंशदान 59.38 प्रतिशत है। दान की गई कुल राशि 64.23 करोड़ में से 37.39 करोड़ स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा दी गई है। कुल स्वैच्छिक अंशदान का 58.21 प्रतिशत शिक्षा विभाग के कर्मचारियों द्वारा किया गया है जो राज्य कर्मचारियों की कुल संख्या का 35.55 प्रतिशत है। कुछ कर्मचारियों द्वारा अपने वेतन की राशि का शत प्रतिशत भी दान में दिया गया है।

10. टेली काउंसलिंग- विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक व भावानात्मक समस्याओं को सुलझाने के लिए विभाग द्वारा राज्य के कई जिलों में UMEED केंद्र स्थापित किए गए हैं। इन केंद्रों पर विद्यार्थियों के साथ-साथ अध्यापकों को भी टेली-काउंसलिंग की सुविधा दी जाती है। कोविड-19 के कारण हुए लॉकडाउन के कारण विद्यालय बंद हैं, फलस्वरूप विद्यार्थियों का अध्यापकों व सहपाठियों से मिलना-जुलना बंद हो गया है। यह तो सर्वविदित है कि प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी दूसरे व्यक्ति से भावनात्मक रूप से जुड़ा होता है। लंबे समय तक एक दूसरे से दूरी की वजह से उनमें मनोवैज्ञानिक या भावानात्मक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। ऐसी समस्याओं से निपटने के लिए UMEED केंद्रों को निर्देश दिए गए हैं कि वे पूर्ववत् टेली-काउंसलिंग जारी रखें, ताकि विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ाया जा सके।

11 . जागरूकता के लिए ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता- महामारी से बचाव के लिए यह बेहद जरूरी हो जाता है कि जन-जन तक इस महामारी के लक्षणों, उपायों आदि की जानकारी पहुँचे। विद्यार्थियों की जानकारी को बढ़ाने तथा उनमें जागरूकता लाने के लिए माननीय शिक्षामंत्री के मार्गदर्शन में हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी द्वारा स्कूली विद्यार्थियों के लिए तीन श्रेणियों में कोविड-19 प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन करने का निर्णय लिया गया। बोर्ड के द्वारा बताया गया कि इस निःशुल्क प्रतियोगिता के प्रत्येक प्रतिभागी को सहभागिता प्रमाण-पत्र दिया जाएगा व मैरिट में आने वाली प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र के साथ आकर्षक पुरस्कार भी प्रदान किया जाएगा।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
माध्यमिक शिक्षा विभाग, हरियाणा

सुभीते से चल रहा है दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम

डॉ. प्रदीप राठौर

हरियाणा के सभी राजकीय व निजी विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे विद्यार्थियों के लिए माननीय मुख्यमंत्री की प्रेरणा से, अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह की दूरदर्शिता से महानिदेशक अमनीत पी.कुमार के मार्गदर्शन में विभाग द्वारा दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम चलाया जा रहा है। शिक्षा जगत के लिए यह अत्यंत गर्व का विषय है कि ऐसी पहल करने वाला हरियाणा देश का पहला राज्य बना है। दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम के समुचित क्रियान्वयन, इसकी उपादेयता सुनिश्चित करने व विद्यार्थियों तक इसकी पहुँच सुनिश्चित करने को लेकर माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव, माननीय महानिदेशक माध्यमिक शिक्षा तथा माननीय निदेशक मौलिक शिक्षा द्वारा 27 अप्रैल को आयोजित वैबिनार में विस्तृत जानकारी दी गई। अध्यापक विद्यार्थी समन्वय, प्रसारण कार्यक्रम की जानकारी, गृह-कार्य एवं अभ्यास कार्य किस प्रकार हो, इसके बारे में भी अवगत कराया गया। हर्ष का विषय है कि यह दूरवर्ती शिक्षा का कार्यक्रम इस समय प्रदेश में सुभीते से चल रहा है। लॉकडाउन के बावजूद विद्यार्थी व अध्यापक शिक्षण कार्य से जुड़े हुए हैं। सामूहिक प्रयासों से यह कार्यक्रम सफलता की नयी गाथा सुना रहा है।

शिक्षक भी कोरोना योद्धा

कोरोनावायरस के कारण किए गए लॉकडाउन में सरकारी विद्यालय चाहे बंद हों लेकिन पढ़ने-पढ़ाने का कार्य बंद नहीं हुआ। डॉक्टर, पुलिस, सफाई कर्मचारियों के बाद सरकारी विद्यालयों के शिक्षक भी कोरोना योद्धा की भूमिका निभा रहे हैं। मोबाइल, व्हाट्सएप समूह, लर्निंग ऐप, शैक्षिक चैनल व यूट्यूब सीखने-सिखाने के नए केंद्र बन गए हैं। शिक्षक छात्रों को ई पुस्तक, पाठ्य सामग्री, गृह कार्य देकर 'घर से पढ़ाओ' अभियान में मदद कर रहे हैं। विद्यार्थियों की शिक्षा प्रभावित न हो इसके लिए व्हाट्सएप्प ग्रुप बनाए गए हैं।

हिसार जिले के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मंडी आदमपुर के शिक्षक अशोक वशिष्ठ, पवन कुमार, कृष्ण कुमार ने बताया कि वे 28 मार्च से ही व्हाट्सएप समूह बनाकर शिक्षण-कार्य करवा रहे हैं। शिक्षकों ने अभिभावकों से संपर्क करके मोबाइल कक्षा की जानकारी दी, वहीं कोरोना वायरस के प्रति जागरूक भी किया। इस विद्यालय की दूसरी से 12वीं तक की 458 लड़कियाँ मोबाइल कक्षा के माध्यम से पढ़ रही हैं। बारहवीं कक्षा के समूह में 130 से अधिक छात्राओं को

पढ़ाया जा रहा है। छात्राओं को शिक्षण कार्य के अतिरिक्त सामान्य ज्ञान, रामायण महाभारत की प्रश्नोत्तरी, पेंटिंग, निबंध कविता लेखन की प्रतियोगिता भी करवाई जा रही है।

नवाचार का कर रहे प्रयोग-

शिक्षक ऑडियो,स्वयं निर्मित वीडियो, मोबाइल ऐप व यूट्यूब लिंक आदि से शिक्षण कार्य करवा रहे हैं, वहीं वर्कशीट, प्रश्नोत्तरी,प्रोजेक्ट निर्माण व गूगल फार्म से गृह कार्य का मूल्यांकन भी कर रहे हैं। शिक्षक अभिभावकों को काम करने हेतु प्रेरित करते हैं व पाठ, इकाई पूरा करने वाले छात्रों को ऑनलाइन प्रशस्ति पत्र भेजते हैं। पाठ्य सामग्री का निर्माण करने, प्रेषित करने, निर्देश देने व छात्रों की समस्याओं का उत्तर देने में शिक्षक प्रतिदिन छह से आठ घंटे लगा रहे हैं।

मंडी आदमपुर स्थित राकवमा विद्यालय के हिंदी प्रवक्ता अशोक वशिष्ठ ने 'शिक्षासारथी' को बताया कि विद्यार्थियों को ऑनलाइन हपढ़ाने का कार्य निश्चित तौर पर एक चुनौती से भरा था। लेकिन उन्होंने उस चुनौती को सहर्ष स्वीकार किया है। यह अनुभव उन्हें भी बहुत कुछ सिखा रहा है। वे लोग मोबाइल कक्षा के माध्यम से दूरवर्ती शिक्षा विद्यार्थियों को प्रदान कर रहे हैं। नवीन तकनीक व विधियों को अपनाकर वीडियो बनाकर पाठ्यवस्तु को समझाना व इसका मूल्यांकन करने में अब आनंद आ रहा है। इनके विद्यालय की छात्राओं स्मृति, दीक्षा और मोनिका ने बताया कि उनकी पढ़ाई ठीक प्रकार से चल रही हैं। वे अपने सभी विषय मोबाइल कक्षा से पढ़ रहे हैं। सब कुछ समझ में आ जाता है, अगर कोई समस्या होती है तो समूह में बता दिया जाता है। उनके अध्यापक उसे दोबारा समझा देते हैं।

स्टे एट होम, स्टडी एट होम, स्कूल एट होम

प्रिय अध्यापक गण तथा प्यारे बच्चो!

जैसा कि आप सब को ज्ञात है कि इस समय पूरा विश्व कोरोना महामारी से लड़ रहा है। इसके कारण राज्य के स्कूल कॉलेज एवं अन्य शिक्षण प्रशिक्षण संस्थान बंद हैं और औपचारिक शिक्षा बाधित हो गई है। शिक्षा की इस बाधा को दूर करने के लिए एनसीईआरटी द्वारा टीवी के माध्यम से शिक्षा की व्यवस्था की गई है। इसमें हरियाणा प्रदेश के 52 लाख विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त हो रही है। इसके लिए मैं माननीय केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री रमेश पोखरियाल जी, स्कूल शिक्षा सचिव श्री अमित खरे जी तथा एनसीईआरटी के अधिकारियों का आभार प्रकट करता हूँ। राज्य के बच्चों से मेरा अनुरोध है कि दूरवर्ती शिक्षा के माध्यम से आप अपनी शिक्षा जारी रखें। आप टीवी पर प्रसारित होने वाले अपने विषय को देखें। अपने अध्यापकों से दूरभाष तथा अन्य ई-संचार माध्यमों से संपर्क बनाये रखें।

मेरा पूरा विश्वास है कि संकट की इस घड़ी में आप स्वाध्याय के साथ साथ ई-प्रसारण के माध्यम से अपनी शिक्षा जारी रखेंगे। हम संयुक्त प्रयासों से इस महामारी पर विजय प्राप्त करेंगे। प्रदेश में जल्दी ही सामान्य स्थिति बहाल होगी और आपके स्कूल खुलेंगे, जहाँ आप पहले की तरह अपनी शिक्षा ग्रहण करेंगे। अध्यापकों और अभिभावकों से मेरा अनुरोध है कि संकट की इस घड़ी में विद्यार्थियों को अपना महत्त्वपूर्ण समय प्रदान करें ताकि वे अपनी शिक्षा निरंतर जारी रख सकें। जय हिंद, जय हरियाणा।

श्री मनोहर लाल,
मुख्यमंत्री हरियाणा

ई-लर्निंग के अनेक प्लेटफॉर्म-

शिक्षण प्रक्रिया निर्बाध ढंग से चलाने के लिए छात्रों से व्हाट्सएप्प समूह, सोशल मीडिया के अन्य माध्यमों से शिक्षण कराया जा रहा है। बहुत से ऑनलाइन प्लेटफार्म

प्यारे बच्चो!

आज हम कोरोना महामारी से जूझ रहे हैं। हमारे देश में ही नहीं, बल्कि विश्व के अन्य देशों में भी इस महामारी का प्रकोप जारी है। इसी के रहते हुए आपके स्कूल बंद हैं और आप की पढ़ाई बाधित हो रही है। इन्हीं समस्याओं का समाधान ढूँढने के लिए हरियाणा-सरकार ने, स्कूल शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने, भारत सरकार की एचआरडी मिनिस्ट्री और एनसीईआरटी के तमाम अधिकारियों ने एक विशेष अभियान चालू किया है। इसके तहत आप सभी को, सभी विषयों की, सभी कक्षाओं के लिए अलग-अलग समय पर टेलीविजन के माध्यम से पढ़ाई कराने की व्यवस्था की गई है। मैं आपसे अनुरोध करूँगा, विशेष तौर पर अभिभावकों से अनुरोध करना चाहूँगा कि वे अपने बच्चों को इस शेड्यूल के मुताबिक दूरदर्शन पर दिए गए समय के अनुसार यह सब व्यवस्था सुनिश्चित करें कि बच्चे अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे सकें। हमने सभी कक्षाओं के लिए, विशेषकर जो बच्चे एनईईटी और जेईई की परीक्षा के लिए तैयारी कर रहे हैं, उसकी भी व्यवस्था की है। कक्षा पहली से पाँचवीं में पढ़ने वाले सभी बच्चों के शिक्षण को कहानियों और फिल्मों के माध्यम से और रुचिकर बनाने की व्यवस्था की गई है। कक्षा छठी से आठवीं तक के सभी विषयों पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इसी तरह कक्षा 9वीं, 10वीं, 11वीं और 12वीं के बच्चों को भी ये सारी की सारी सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जा रही हैं, ताकि टेलीविजन के प्रसारण के माध्यम से वे बच्चे अपनी पढ़ाई पर ध्यान दे सकें। मैं चाहूँगा कि सभी अध्यापक और स्कूल के प्राचार्य महोदय इस पर विशेष ध्यान दें और सभी अभिभावकों से भी मैं अनुरोध करना चाहूँगा कि इस प्रसारण के तहत उन सबको यह व्यवस्था उपलब्ध कराएँ। इसके साथ-साथ यह बताना जरूरी होगा कि हमने यह व्यवस्था पूरे हरियाणा प्रदेश के करीब 22 हज़ार स्कूलों के लिए तैयार की है, जिसमें लगभग 52 लाख बच्चों को यह सुविधा उपलब्ध की जा रही है। हरियाणा सरकार की इस अनूठी पहल और एनसीईआरटी के अधिकारियों और एचआरडी मिनिस्ट्री के तमाम अधिकारियों की इस सारी प्रक्रिया का विशेष तौर पर शिक्षा जगत की ओर से हार्दिक धन्यवाद और अभिवादन भी करना चाहेंगे।

मैं विशेष तौर पर बच्चों से कहना चाहूँगा कि उन्होंने इस सारी प्रक्रिया में बहुत अच्छी तरह से और खासकर समाज में एक अच्छी और अनूठी पहल की है। वे न केवल अपने लिए, बल्कि समुदाय के दूसरे लोगों के लिए भी एक उदाहरण पेश कर रहे हैं। आप सभी का हार्दिक धन्यवाद, जय हिंद।

डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव
विद्यालय शिक्षा, हरियाणा

जैसे ई-पाठशाला, एनआरओईआर, दीक्षा और स्वयंप्रभा का विद्यार्थी लाभ उठा रहे हैं।

दूरदराज़ के गाँवों में मोबाइल डाटा, सिग्नल, स्मार्ट फोन उपलब्धता आदि की दिक्कत न हो, इसके लिए टीवी के माध्यम से शिक्षण जारी है। सीटी केवल टीवी चैनल 617-620, टाटा स्काई- 946-950, एयरटेल- 437-439 और वीडियोकोन डिश पर 475-477 चैनल प्रसारण दिखा रहे हैं। हरियाणा एजुसैट <http://www.haryanae-dusat.com> पोर्टल पर वह सारी शिक्षण दृश्य-श्रव्य सामग्री उपलब्ध कराई गई है जो एजुसैट से प्रसारित की जाती रही है। इसके लिए बाकायदा एक समय-सारिणी बनाई गई है जो उपरोक्त लिंक पर उपलब्ध है।

हर दिन विद्यार्थी अपने अभिभावकों से व फोन तथा वहाट्सएप्प समूह के माध्यम से जुड़े अध्यापकों के सहयोग से अपने पाठों का अध्ययन कार्य करते हैं। इस माध्यम से विद्यार्थियों का शैक्षणिक कार्य निर्बाध रूप से चलाया जा रहा है। उपरोक्त पोर्टल पर शिक्षा विभाग द्वारा आरंभ की गई 'दीक्षा' तथा 'चॉकलिट' सरीखे अन्य पहलों के लिंक भी हैं। इसके अलावा उपरोक्त पोर्टल पर टेस्टिंग प्लेटफॉर्म भी बनाया गया है जिनसे छात्रों को अपने सीखने की गति/प्रगति की भी जानकारी मिलती रहेगी।

कार्यक्रम का हो रहा है समुचित पर्यवेक्षण-

दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम को अधिक मज़बूत, क्रियात्मक व प्रभावशाली बनाने के लिए इसके पर्यवेक्षण की भी व्यवस्था की गई है। पर्यवेक्षकों व अध्यापकों को सहयोग प्रदान करने के लिए नियुक्त सभी कर्मचारी एवं अधिकारी यथा- विद्यालय मुखिया, बीआरपी, एबीआरसी, बीईओ, बीईईओ, के अलावा डाईट, बाईट, गैटीज़, एससीईआरटी के फैकल्टी तथा शैक्षणिक प्रकोष्ठ के कार्यक्रम अधिकारी विद्यार्थियों व उनके माता-पिता से फोन पर संपर्क कर रहे हैं तथा प्रसारण कार्यक्रम को लेकर, पठन-पाठन कार्यक्रम को लेकर प्रगति का अवलोकन कर रहे हैं। अप्रैल-मई महीने में एससीईआरटी द्वारा पाठ्यक्रम की मासिक बांट के अनुसार प्रत्येक विषय के दो से चार पाठ ही करवाए जाने हैं। जाहिर सी बात है कि यह आकलन करना अत्यावश्क था कि मासिक बाँट के अनुरूप दूरवर्ती शिक्षण कितनी सफलता से हो रहा है।

विद्यार्थियों के माता-पिता से फोन पर पूछा जा रहा है कि क्या आपके बच्चे को अध्यापक से टीवी प्रसारण, एजुसैट एवं स्वयं प्रभा की समय-सारणी प्राप्त हो रही है? क्या अध्यापक द्वारा ई-संचार माध्यमों से गृह-कार्य/अभ्यास-कार्य दिया जा रहा है? क्या माता-पिता द्वारा अपने बच्चों को टीवी प्रसारण देखने का समुचित समय एवं वातावरण प्रदान किया जा रहा है? क्या उन्हें कोई समस्या आ रही है, जिसका वे निदान चाहते हैं? इतना ही नहीं, दूरवर्ती शिक्षण कार्यक्रम को और उपादेय बनाने के लिए उनसे सुझाव भी लिए जा रहे हैं।

विद्यालय के मुखिया प्रतिदिन 20 विद्यार्थियों से

लॉकडाउन में बच्चों की निखर रही प्रतिभा

लॉकडाउन में बच्चे ई-लर्निंग के साथ साथ अपनी अभिरुचियों के विकास और रचनात्मकता बढ़ा कर समय का सदुपयोग कर रहे हैं। कोई भी महत्त्वपूर्ण दिवस, उत्सव तथा कोरोना महामारी से आम जनमानस को जागरूक भी कर रहे हैं। राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय एनएच तीन फरीदाबाद के जूनियर रेड क्रॉस, गाइड और सैंट जॉन एम्बुलेंस ब्रिगेड की सदस्य छात्राएँ प्राचार्य रविन्द्र कुमार मनचन्दा और अध्यापकों के मार्गदर्शन में वॉट्सएप ग्रुप से जुड़ कर शिक्षा विभाग के निर्देशानुसार समय सारिणी के अनुसार प्रत्येक विषय की ई-शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। अध्यापक समय-सारिणी अनुसार वीडियो, फोटो, संदेश और ऑडियो भेज कर तथा बच्चों से वार्ता कर फीडबैक भी ले रहे हैं, बच्चों की विषयानुसार समस्याओं का भी समाधान कर रहे हैं। ई-लर्निंग द्वारा बच्चों को नूतन अनुभव प्राप्त हो रहे हैं और वे कम संसाधनों में भी चुनौती पूर्वक लॉकडाउन में अध्यापकों की सहायता से सभी कुछ सीखने में तत्पर हैं। ऐसे में बहुत से बच्चे ई-शिक्षा के साथ अपनी अभिरुचियों और रचनात्मकता को विकसित करने का समय निकाल कर अपनी प्रतिभा से सभी को आश्चर्यचकित कर रहे हैं। कई बच्चे विभिन्न विषयों पर स्पीच तैयार कर रहे है तो कई बच्चे लॉकडाउन के अनुभवों को कविताएँ लिख कर व्यक्त कर रहे हैं। कई बच्चे अपने घर के सदस्यों, अध्यापकों और देश के गणमान्य व्यक्तियों के स्केच बनाकर समय बिताने का महत्त्वपूर्ण तरीका निकाल रहे हैं। प्राचार्य रविन्द्र कुमार मनचन्दा ने बताया कि दृष्टि कक्षा नवम, सिमरन कक्षा बारह, हर्षिता वर्मा कक्षा दस, सचकीरथ, तनु सहित सभी ने स्टे एट होम, गो कोरोना गो, अच्छे दिन आएँगे, हम फिर से मुस्कुराएँगे आदि स्लोगन लिख और पेंटिंग बना कर फाइट कोरोना का संदेश दिया। बच्चों की रचनात्मकता बढ़ाने के लिए प्राध्यापिका ललिता, जसनीत कौर, शीतू कक्कड़ सहित सभी शिक्षक वर्ग का विशेष योगदान रहा।

'पहला कदम' फाउंडेशन ने भी लॉकडाउन के दौरान राष्ट्रीय स्तर की पेंटिंग, कविता, निबंध, स्लोगन प्रतियोगिता कराई, जिसमें 10 राज्यों के 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस फाउंडेशन का संचालन हरियाणा शिक्षा विभाग के उत्साही शिक्षकों द्वारा किया जा रहा है। फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिक्षक राजेश वशिष्ठ ने बताया कि प्रतियोगिता में बच्चों ने कोरोना से बचने के उपायों संबंधी जागरूकता फैलाई और कोरोना योद्धाओं का अपने अंदाज़ में सलाम किया।

दूरभाष संपर्क द्वारा शिक्षण संबंधी फीडबैक लेकर उसकी सूचना संबंधित खंड शिक्षा अधिकारी व खंड मौलिक शिक्षा अधिकारी को दे रहे हैं। बीआरपी तथा एबीआरसी अपने-अपने कलस्टर के सभी विद्यालय के विद्यार्थियों से फोन-कॉल के माध्यम से समन्वय स्थापित करके ऐसी ही सूचना एकत्रित कर रहे हैं। डाईट, बाइट और गैटीज़ के प्रवक्ता भी अपने-अपने स्तर पर फोन से फीडबैक प्राप्त करके अपने प्रधानाचार्य तथा संबंधित खंड शिक्षा अधिकारी को दे रहे हैं। खंड शिक्षा अधिकारी तथा डीएसएस, डीएमएस तथा एपीसी यह सूचना संबंधित जिला शिक्षा अधिकारियों, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारियों व जिला परियोजना समन्वयकों तक पहुँचा रहे हैं। जिलों की सूचना मुख्यालय में महानिदेशक माध्यमिक शिक्षा, निदेशक मौलिक शिक्षा, राज्य परियोजना निदेशक, एससीईआरटी निदेशक व उत्कर्ष सोसायटी तक गूगल लिंक के जरिए पहुँचाई जा रही है। माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय स्वयं सारी स्थिति पर नज़र बनाए हुए हैं।

जिला शिक्षा अधिकारी झज्जर सुनीता देवी बताती हैं कि जिले के सभी विद्यार्थियों को ऑनलाइन पढ़ाई कराई जा रही है, ताकि वे शिक्षा से वंचित न रहें। विभाग लॉकडाउन के दौरान भी विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा देने के लिए जुटा हुआ है। साथ ही अधिकारी फीडबैक भी ले रहे हैं। इसी जिले के जिला सक्षम नोडल अधिकारी सुदर्शन पूनिया के अनुसार 9 मई को मेगा ई-पीटीएम का आयोजन किया गया। लॉकडाउन के नियमों की पालना करते हुए फोन पर विद्यार्थियों व अभिभावकों से संपर्क स्थापित किया गया।

drpradeeprathore@gmail.com

प्रदेश ने अपनाया एनसीईआरटी का वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर

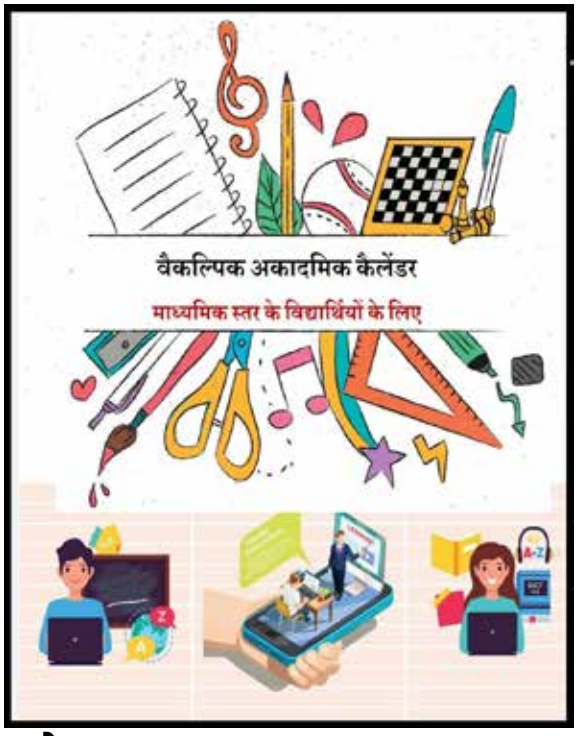

कोरोना संकट की घड़ी में शिक्षकों और बच्चों के सीखने का क्रम न टूटे इसके लिए प्रदेश में विभिन्न स्तर पर प्रयास किए गए हैं। एजुसेट (टीवी) तथा अन्य ई-संसाधनों से ऐसे प्रयास किये जा रहे हैं ताकि माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी स्व-अधिगम कर सकें और प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थी अपने शिक्षकों और अभिभावकों के दिशा निर्देशन में सीख सकें। इसी दौरान राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद द्वारा एक वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर जारी किया गया है। प्रदेश के विद्यालय शिक्षा विभाग ने इस दिशा में एक और पहलकदमी करते हुए इस वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर को प्रदेश में लागू किया है।

8 मई, 2020 को माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्यालय शिक्षा महोदय की अध्यक्षता में हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया कि इस कैलेंडर को संपूर्णता से राज्य में अपनाया जाए। क्योंकि देखने में आया है कि अध्यापक स्वेच्छा से विद्यार्थियों को पठन-पाठन करवा रहे हैं जिसमें एकरूपता का अभाव है और एससीईआरटी द्वारा की गई पाठ्यक्रम की मासिक बाँट का ध्यान भी नहीं रखा जा रहा। विभाग द्वारा 11 मई को जारी पत्र में उक्त वैकल्पिक कैलेंडर को अपनाए जाने संबंधी दिशा निर्देश जारी किए।

आरंभ में एनसीईआरटी ने इस कैलेंडर को चार सप्ताह के लिए बनाया है जिसे आगे विस्तारित करने की बात कही है। इस कैलेंडर में कक्षा पाठ्यक्रम से थीम लेकर उन्हें सीखने के प्रतिफलों के साथ जोड़कर रुचिकर गतिविधियों के माध्यम से सीखने के दिशा निर्देश दिए गए हैं। यहाँ विशेष बात यह है कि इन गतिविधियों को शिक्षकों के दिशानिर्देश में अभिभावकों द्वारा कराया जा सकता है। शिक्षक साधारण मोबाइल फोन से लेकर इंटरनेटआधारित विभिन्न तकनीकी उपकरणों का उपयोग करके विद्यार्थी और अभिभावकों से संपर्क स्थापित कर सकते हैं और इस कैलेंडर के आधार पर विभिन्न विषयों में गतिविधियों को कराए जाने संबंधी मार्गदर्शन कर सकते हैं। इस कैलेंडर में सामान्य दिशा निर्देशों और विषय विशेष की गतिविधियों के साथ-साथ विभिन्न तकनीकी और सोशल मीडिया उपकरणों के उपयोग संबंधी तथा तनाव और चिंता दूर करने के तरीकों के विषय में भी विस्तृत सामग्री है। इसमें कला शिक्षा और स्वास्थ्य तथा शारीरिक शिक्षा को भी जोड़ा गया है। इसमें हर विषय में पाठ्यपुस्तक के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के अन्य अधिगम संसाधनों को भी शामिल किया गया है तथा बच्चों के अधिगम की प्रगति के आकलन के तरीकों पर भी बात की गई है।

-डॉ.प्रदीप राठौर

पुस्तक मेरी मीत बनी

खुशियों का संगीत बनी है।
जीवन का मधु गीत बनी है।।
दुख, पीडा, संकट में हर पल,
पुस्तक मेरी मीत बनी है।।

सच्चाई की राह दिखाती।
घर बैठे जग सैर कराती।।
मानव पर है उपकार बड़ा।
लेकिन वह न कभी जताती।।
अंधकार से जब-जब हारा,
पुस्तक मेरी जीत बनी है।।
खुशियों का संगीत बनी है।।

पुरखों की शुभ परिपाटी के।
गिरि, कानन, सरिता, घाटी के।।
कोमल मधुर पृष्ठ दिखलाती।
खलिहान, खेत, सर माटी के।।
श्रम-तप की आतप बेला में,
पुस्तक छाया-भीत बनी है।।
खुशियों का संगीत बनी है।।

प्रमोद दीक्षित मलय
सम्पर्क : शास्त्री नगर,
अतर्रा -210201, बांदा, उ.प्र.

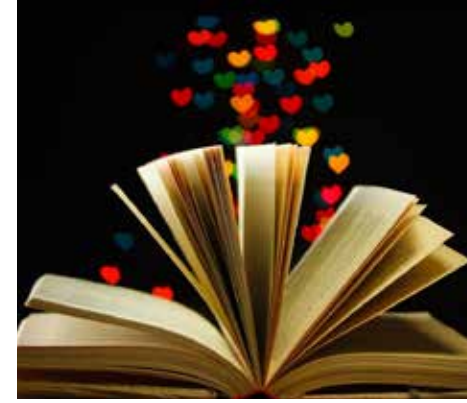

गोहाना की छात्राओं ने रचा इतिहास

नेशनल मीन्स-कम-मेरिट स्कॉलरशिप परीक्षा में जिले में किया टॉप

शिक्षा विभाग द्वारा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को पहचानने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर नेशनल मीन्स-कम-मेरिट स्कॉलरशिप स्कीम के तहत परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की खोज करना, उनकी पहचान करना, चुनाव करना और संसाधन व उचित मार्ग उपलब्ध करवाना होता है।

सोनीपत में खण्ड गोहाना के खंड शिक्षा अधिकारी ने बताया कि उनके कार्यालय में कार्यरत श्री गौरव कपूर, लेखा कार्यकारी (एकाउंट्स एग्जीक्यूटिव) ने पहल करते हुए परीक्षा से पूर्व तीन माह तक राकवमावि गोहाना की छात्राओं की तैयारी करवाई। इस दौरान उन्होंने न तो कार्यालय का समय/कार्य बाधित होने दिया और न ही विद्यालय समय। उनके द्वारा विद्यार्थियों की तैयारी प्रातः 8 से 9 बजे तक परीक्षा से पूर्व अंतिम तीन माह तक करवाई गई जिसके परिणामस्वरूप 11 छात्राओं ने इतिहास रचते हुए न सिर्फ खंड का नाम रोशन किया बल्कि जिला सोनीपत में भी प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए परचम लहराया। पिछले वर्ष भी उक्त अध्यापक के पढ़ाए हुए बच्चों में से 6 विद्यार्थियों ने स्कालरशिप अर्जित की थी और इस वर्ष भी जिला सोनीपत में किसी भी एक विद्यालय द्वारा अर्जित छात्रवृतियों में से सर्वाधिक छात्रवृत्ति का रिकॉर्ड लगातार दूसरे वर्ष भी राकवमावि गोहाना ने अपने नाम रखा।

नेशनल मीन्स-कम-मेरिट स्कॉलरशिप स्कीम एक अच्छा साधन है जो कक्षा आठवीं के दौरान एक टेस्ट के माध्यम से चयनित होकर प्राप्त किया जा सकता है। इस स्कीम के अंतर्गत बारह हजार रुपए प्रतिवर्ष मिलने वाली छात्रवृत्ति के लिए यह परीक्षा ली जाती है जिसमें ऐसे सभी विद्यार्थी भाग लेते हैं जो वर्तमान में कक्षा आठवीं में पढ़ रहे हैं तथा कक्षा सातवीं में न्यूनतम 55 प्रतिशत अंक लेकर उत्तीर्ण हुए हैं। हालाँकि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए इस प्रतिस्पर्धा में 5 प्रतिशत की छूट दी गई है। इस परीक्षा में विद्यार्थियों को डेढ़ घंटे का समय मिलता है जिसमें 90 बहुविकल्पी प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं जो कि बच्चे के विषय संबंधित ज्ञान को दर्शाता है, जिसमें विद्यार्थी द्वारा आठवीं व पिछली कक्षा में पाठ्यक्रम में पढ़े गए सिलेबस के अनुरूप प्रश्न पूछे जाते हैं। इसके अतिरिक्त 90 बहुविकल्पी प्रश्नों के उत्तर भी विद्यार्थी को देने होते हैं जो कि विद्यार्थी को रीजनिंग, न्यूमैरिकल एबिलिटी (तर्क आधारित प्रश्न) के आधार पर देने होते हैं।

गौरतलब है कि इस परीक्षा को उतीर्ण करने उपरान्त प्रत्येक विद्यार्थी को कक्षा 9वीं से 12वीं प्रत्येक माह एक हजार रुपए की स्कॉलरशिप दी जाती है परन्तु विद्यार्थी को प्रत्येक वर्ष 60 प्रतिशत से अधिक अंक लेना अनिवार्य है तथा कक्षा 9वीं से 12वीं की पढ़ाई किसी भी सरकारी विद्यालय से ही होनी चाहिए। नेशनल मीन्स-कम-मेरिट स्कालरशिप स्कीम के लिए प्रदेश की एससीईआरटी गुरुग्राम द्वारा ही परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इसके लिए एससीईआरटी गुरुग्राम की विभागीय साइट को समय-समय पर अपडेट किया जाता है और पिछले वर्षो में आयोजित हो चुकी इस परीक्षा के प्रश्न पत्र भी इस साईट पर उपलब्ध हैं। इस बार विभाग द्वारा भी पहल करते हुए प्रत्येक विद्यार्थी को जिन्होंने इस परीक्षा के लिए आवेदन किया था उन्हें जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय व खंड शिक्षा अधिकारी कार्यालय के माध्यम से अभ्यास पुस्तिका उपलब्ध करवाई गई।

रिजल्ट घोषित होने के उपरान्त अगले दिन खंड शिक्षा अधिकारी गोहाना द्वारा राकवमावि गोहाना की छात्राओं को सम्मानित किया गया। इस उपलब्धि का श्रेय श्री गौरव कपूर ने माननीय प्रोजेक्ट डायरेक्टर, सीएमजीजीए, श्री राकेश गुप्ता जी को दिया क्योंकि उन्हीं से प्रेरित होकर पिछले वर्ष से उन्होंने इस पहल की शुरुआत की और उनकी इस उपलब्धि पर श्री राकेश गुप्ता जी द्वारा भी उन्हें बधाई संदेश भेजा गया और उन द्वारा आगे आने वाले वर्षो में इसी दिशा में और आगे बढ़ने के लिए कहा गया।

आनंद शर्मा
खंड शिक्षा अधिकारी गोहाना
जिला सोनीपत, हरियाणा

कोरोना : नवीनतम जानकारी

प्रश्न-1: कोरोना वायरस 2019 का पहला केस कहाँ सामने आया?
उत्तर: वुहान (चीन) में।

प्रश्न-2: कोरोना वायरस के संक्रमण की वजह क्या मानी जा रही है?
उत्तर: वुहान के सीफूड मार्केट में मिलने वाले समुद्री जीवों, चमगादड़ और साँप को खाने से।

प्रश्न-3: कोरोना वायरस किस प्रकार से मनुष्यों में एक से दूसरे में फैलता है?
उत्तर: संक्रमित व्यक्ति के खाँसने या छींकने से अपने चारों ओर करीब डेढ़ मीटर के लोगों को चपेट में लेता है।

प्रश्न-4: कोरोना वायरस की पहचान कैसे की गई?
उत्तर: इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप विश्लेषण तकनीक के जरिए वायरस नमूने लिए गए।

प्रश्न-5: कोरोना वायरस का सीधा प्रभाव मानव शरीर में कहाँ पड़ता है?
उत्तर: श्वसन तंत्र पर।

प्रश्न-6: कोरोना वायरस किस प्रकार का वायरस है?
उत्तर: यह आरएनए वायरस हैं।

प्रश्न-7: मनुष्य में कोरोना वायरस किस संक्रमण के कारण होता है?
उत्तर: श्वास तंत्र संक्रमण।

प्रश्न-8: WHO द्वारा कोरोना वायरस को क्या नाम दिया गया है?
उत्तर: कोविड-19

प्रश्न-9: कोविड-19 का क्या अर्थ है?
उत्तर: CO = CORONA , VI = VIRUS , D = DISEASE, 2019

प्रश्न-10: कोरोना से पीड़ित होने पर शरीर में क्या बदलाव आते हैं?
उत्तर: निमोनिया, खाँसी, बुखार और जुकाम इत्यादि।

प्रश्न-11: कोरोना वायरस का प्रभाव किस मौसम में अत्यधिक रहता है?
उत्तर: यह सर्दी में सबसे ज्यादा प्रभावी होता है।

प्रश्न-12: कोरोना वायरस के दो मुख्य वायरस कौन से हैं?
उत्तर: Middle East Respiratory Syndrome Corona Virus - MERS-CoV and Server Acute Respiratory Syndrome - SARS-Cov है।

प्रश्न-13: कोरोना वायरस के नाम के आगे Novel शब्द क्यों जोड़ा गया?
उत्तर: यह कोरोना परिवार का नया सदस्य है इसलिए।

प्रश्न-14: इस वायरस का नाम कोरोना क्यों पड़ा?
उत्तर: इसका नाम इसकी संरचना के आधार पर पड़ा है। इस वायरस के चारों तरफ मुकुट जैसी संरचना होती है और इर्द गिर्द उभरे हुए काँटे जैसे होते हैं इसके कारण इसका नाम कोरोना वायरस पड़ा। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 30 जनवरी, 2020 को कोरोना वायरस के कारण वैश्विक आपातकाल घोषित किया और इसका नाम 11 फरवरी, 2020 को कोविड-19 रखा गया है।

प्रश्न-15: कोरोना वायरस क्या है?
उत्तर: कोरोना वायरस वायरस का एक बड़ा परिवार है और निडोवायरस परिवार या निडोविरलेस ऑर्डर से संबंधित है, जिसमें कोरोनवीराइडे, आर्टेरिविरिडे और रोनिविरिडे परिवार शामिल हैं।

प्रश्न-16: 11 फरवरी, 2020 को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस बीमारी के लिए एक आधिकारिक नाम की घोषणा की है। इस बीमारी का नया नाम क्या है?
उत्तर: विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस बीमारी को जो नाम दिया है वो कोविड-19 है।

प्रश्न-17: कोरोना वायरस निम्नलिखित में से किस बीमारी से संबंधित है?
उत्तर: Middle East Respiratory Syndrome (MERS-CoV) और Severe Acute Respiratory Syndrome (SARS-CoV) जैसी गंभीर बिमारियों से लेकर सामान्य सर्दी, इत्यादि कोरोना वायरस से हो सकती है।

प्रश्न-18: पहली बार कोरोनावायरस की पहचान कब हुई थी?
उत्तर: 1960 में।

प्रश्न-19: विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना को वैश्विक महामारी कब घोषित किया?
उत्तर: 30 जनवरी, 2020 को

प्रश्न-20: भारत में कोरोना का पहला मरीज कहाँ मिला?
उत्तर: केरल में।

प्रश्न-21: भारत का वह राज्य जहाँ कोरोना के कारण सर्वप्रथम कफ़र्यू लगाया गया?
उत्तर: पंजाब

प्रश्न-22: भारत का वह राज्य जहाँ कोरोना के कारण सर्वप्रथम सम्पूर्ण लॉकडाउन घोषित किया गया?
उत्तर: राजस्थान।

प्रश्न-23: भारत का वह राज्य जहाँ कोरोना को सर्वप्रथम महामारी घोषित किया गया?
उत्तर: हरियाणा।

प्रश्न-24: भारत का वह राज्य जहाँ कोरोना के कारण पहली मृत्यु हुई?
उत्तर: कर्नाटक।

प्रश्न-25: भारत का वह राज्य जहाँ कोरोना के कारण सर्वप्रथम एंटीबॉडी प्लाज्मा थ्योरी अपनाई गई?
उत्तर: केरल।

प्रश्न-26: भारत का वह शहर जिसने सर्वप्रथम सैनीटाइज करने के लिए ड्रोन का प्रयोग किया?
उत्तर: इंदौर।

प्रश्न-27: कोरोना के कारण देश में जनता कफ़र्यू कब लगाया गया?
उत्तर: 22 मार्च 2020

प्रश्न-28: लॉकडाउन का पहला फेज कब शुरू हुआ?
उत्तर: 25 मार्च 2020 को।

प्रश्न-29: लॉकडाउन का दूसरा फेज कब शुरू हुआ?
उत्तर: 15 अप्रैल 2020 को।

प्रश्न-30: लॉकडाउन का पहला फेज कितने दिन का था?
उत्तर: 21 दिन।

प्रश्न-31: लॉकडाउन का दूसरा फेज कितने दिन का था?
उत्तर: 19 दिन।

प्रश्न-32: लॉकडाउन का तीसरा फेज कब शुरू हुआ?
उत्तर: 4 मई को।

प्रश्न-33: लॉकडाउन का तीसरा फेज कितने दिन का है?
उत्तर: 14 दिन का।

प्रश्न-34: हरियाणा में कोरोना का पहला मरीज किस जिले में मिला था?
उत्तर: गुरुग्राम में।

प्रश्न-35: कोरोना योद्धाओं के सम्मान में देशवासियों ने ताली, थाली और घंटी कब बजाई थी?
उत्तर: 22 मार्च 2020 को शाम 5 बजे।

प्रश्न-36: कोरोना के विरुद्ध एकजुटता का संदेश देने के लिए देशवासियों ने दीप कब प्रज्ज्वलित किये थे?
उत्तर: 5 अप्रैल 2020 को रात 9 बजे।

प्रश्न-37: कोरोना योद्धाओं के सम्मान में भारतीय सेना ने अस्पतालों पर पुष्पवृष्टि कब की?
उत्तर: 3 मई 2020 को।

प्रश्न-38: आरोग्य सेतु टोल फ्री नम्बर क्या है ?
उत्तर: 1921

प्रश्न-39: कोविड-19 की राष्ट्रीय हेल्पलाइन नम्बर क्या है?
उत्तर: 1075

प्रश्न-40: सीएसआईआर के इंस्टीट्यूट ऑफ जीनोमिक्स एंड इंटीग्रेटिव बायोलॉजी (IGIB) ने किस भारतीय कंपनी के साथ कोविड-19 के लिए अपने सुधरुप परीक्षण किट का व्यवसायीकरण किया है?
उत्तर: टाटा संस।

प्रश्न-41: कोविड-19 के कारण विदेशों में फँसे भारतीय नागरिकों की स्वदेश वापसी के लिए किस मिशन को शुरू किया गया है?
उत्तर: वंदे भारत मिशन।

प्रश्न-42 **भारतीय नौसेना द्वारा कोविड-19 के कारण दूसरे देशों में फंसे भारतीय नागरिकों को वापस लाने के लिए शुरू किए गए ऑपरेशन**

का क्या नाम है?

उत्तरः समुद्र सेतु।

प्रश्न-43: कोविड-19 महामारी के दौरान वरिष्ठ नागरिकों की भलाई सुनिश्चित करने के लिए नीति आयोग द्वारा शुरू किए गए अभियान का नाम क्या है?

उत्तरः सुरक्षित दादा-दादी और नाना-नानी अभियान।

प्रश्न-44: मई 2020 में आयोजित शुट निरपेक्ष आंदोलन के ऑनलाइन संपर्क समूह शिखर सम्मेलन की थीम क्या है?

उत्तरः कोविड-19 के खिलाफ एकजुट।

प्रश्न-45: कोविड-19 के बीच लोगों को मुफ्त और कैशलेस बीमा कवर प्रदान करने वाला भारत का पहला राज्य कौन सा है?

उत्तरः महाराष्ट्र।

प्रश्न-46: नेशनल काउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी कम्युनिकेशन (NCSTC) ने कोविड-19 पर स्वास्थ्य और जोखिम संचार पर आधारित कौन सा कार्यक्रम लांच किया है?

उत्तरः YASH (Year of Awareness on Science and Health)

प्रश्न-47: ईएसआईसी मेडिकल कॉलेज, हैदराबाद के सहयोग से किस सरकारी संस्था द्वारा देश की पहली कोविड-19 नमूना संग्रह मोबाइल लैब विकसित की गई है?

उत्तरः रक्षा अनुसंधान व विकास संगठन।

प्रश्न-48: कोविड-19 से उत्पन्न स्थिति की पृष्ठभूमि में मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा शुरू किए गए कार्यक्रम का नाम क्या है, जो लोगों और संगठनों को ई-लर्निंग के लिए संसाधनों का योगदान करने के लिए आमंत्रित करता है ?

उत्तरः विद्या दान 2.0

प्रश्न-49: हाल ही में कोविड-19 से लड़ने वाले स्वास्थ्य पेशेवरों के खिलाफ हिंसा करने वाले व्यक्तियों को दंडित करने के लिए किस अधिनियम को संशोधित करते हुए एक अध्यादेश जारी किया गया है?

उत्तरः महामारी रोग अधिनियम, 1897

प्रश्न-50: स्मार्ट सिटीज मिशन के तहत किस शहर ने 'साईम' नामक एक मोबाइल एप्लिकेशन विकसित की है, जिसका उद्देश्य क्वारंटाइंड लोगों पर नज़र रखना है?

उत्तरः पुणे।

प्रश्न-51: कौन सा राज्य देश में कोरोनावायरस से मुक्त होने वाला पहला राज्य है?

उत्तरः गोवा।

प्रश्न 52: कोविड-19 महामारी के बीच दिशानिर्देशों के संदर्भ में, किस अधिनियम के तहत सार्वजनिक स्थानों पर थूकना दंडनीय अपराध है?

उत्तरः आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005

प्रश्न-53: इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (ICMR) ने हाल ही में किस प्रजाति में कोरोनावायरस की उपस्थिति की खोज की है?

उत्तरः चमगादड़।

प्रश्न-54: केंद्रीय विदेश मंत्रालय ने किस क्षेत्रीय समूह के स्वास्थ्य पेशेवरों के लिए कोविड-19 पर प्रशिक्षण कार्यक्रम की घोषणा की है?

उत्तरः सार्क।

प्रश्न-55: 'कोविड-19 नमूना संग्रह किट्स' (COVSACK), जो हाल ही में सुर्ख़ियों में था, किस संस्था की प्रयोगशाला द्वारा विकसित किया गया था?

उत्तरः रक्षा अनुसंधान व विकास संगठन।

प्रश्न-56: 'कोविड-19 में लाभकारी हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन दवा का विश्व में सबसे बड़ा उत्पादक देश कौन सा है, जो कि इस दवा का 70% उत्पादन करता है?

उत्तरः भारत।

प्रश्न-57: केंद्र सरकार ने 'India COVID-19 Emergency Response and Health System Preparedness Package' के लिए राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों कितनी राशि जारी की है?

उत्तरः 15,000 करोड़ रुपये।

प्रश्न-58: केंद्र ने किस राज्य सरकार के साथ मिलकर 'आरोग्य सेतु इंटरएक्टिव वॉयस रिस्पांस सिस्टम (आईवीआरएस) सेवा' शुरू की है?

उत्तरः तमिलनाडु।

प्रश्न-59: किस राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश ने कोविड-19 के प्रसार को रोकने के लिए नियंत्रण क्षेत्रों में 'ऑपरेशन शील्ड ' की घोषणा की है?

उत्तर दिल्ली (SHIELD का मतलब Sealing, Home quarantine, Isolation and tracing, Essential supply, Local sanitation and Door-to-door checks है)

प्रश्न 60: किस केंद्रीय मंत्रालय ने कोविड-19 महामारी से लड़ने वाले अग्रिम पंक्ति के श्रमिकों की क्षमता निर्माण के लिए एकीकृत सरकार ऑनलाइन प्रशिक्षण (iGOT) नाम से एक पोर्टल लांच किया?

उत्तरः मानव संसाधन विकास मंत्रालय।

प्रश्न-61: सर्वोच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार को निर्देश दिया है कि वह कोरोना वायरस के मरीजों को देख रहे डॉक्टरों, मेडिकल स्टाफ को पीपीई प्रदान करे। पीपीई का पूर्ण स्वरूप क्या है?

उत्तर Personal Protective Equipment (व्यक्तिगत सुरक्षात्मक उपकरण)

प्रश्न 62: कोरोनवायरस महामारी के समाधान के लिए केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय और एआईसीटीई के इनोवेशन सेल द्वारा छात्रों के लिए कौन सा ऑनलाइन चैलेंज लांच किया है?

उत्तरः समाधान।

प्रश्न-63: सरकारी स्वामित्व वाली कंपनी एचएलएल लाइफकेयर लिमिटेड द्वारा कोविड-19 के लिए विकसित तीव्र एंटीबॉडी निदान किट का ब्रांड नाम क्या है?

उत्तरः मेकश्योर

प्रश्न-64: रक्षा अनुसन्धान व विकास संगठन (DRDO) ने किस निजी फर्म के साथ मिलकर कोविड-19 मरीजों का इलाज करने वाले डॉक्टरों और मेडिकल स्टाफ के लिए फेस शील्ड विकसित की है?

उत्तरः विप्रो।

प्रश्न-65: किस राज्य सरकार ने कोरोनोवायरस के प्रसार से निपटने के लिए 5 ' प्लान नामक एक पाँच-चरणीय योजना का अनावरण किया है?

उत्तरः नई दिल्ली (5' योजना में परीक्षण, ट्रेसिंग, टीमवर्क, उपचार और ट्रैकिंग शामिल हैं)

प्रश्न-66: कोरोनावायरस महामारी के बीच कैबिनेट ने कितने वर्षों के लिए MPLADS (सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना) को अस्थायी रूप से निलंबित किया गया है?

उत्तरः 2 वर्षों के लिए

प्रश्न-67: स्वास्थ्य मंत्रालय की हालिया घोषणा के अनुसार लगभग 50 करोड़ नागरिक किस योजना के तहत मुफ्त कोविड-19 परीक्षण और उपचार के लिए पात्र होंगे?

उत्तरः आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना।

प्रश्न-68: इलेक्ट्रॉनिक्स व सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने कोविड-19 महामारी के लिए समाधान खोजने के लिए कौन सी हैकथॉन लांच की है?

उत्तरः हैकिंग द क्राइसिस इंडिया।

प्रश्न 69: ऑपरेशन संजीवनी के तहत भारत ने किस देश को कोविड-19 के लिए आवश्यक दवाएँ और खाद्यान्न की आपूर्ति की है?

उत्तरः मालदीव।

प्रश्न-70: भारत सरकार ने लोगों को कोरोना संक्रमण के जोखिम का आकलन करने में सक्षम करने के लिए कौन सी एप्प लांच की है?

उत्तरः आरोग्य सेतु।

प्रश्न-71: कोविड-19 के लिए भारत की पहली स्वदेशी परीक्षण किट का नाम क्या है, जिसे पुणे में लॉन्च किया गया?

उत्तरः पैथो डिटेक्ट।

प्रस्तुति :
सुनील पुलस्त्य
हिंदी-प्राध्यापक
राआवमा विद्यालय इस्माइलाबाद
जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा

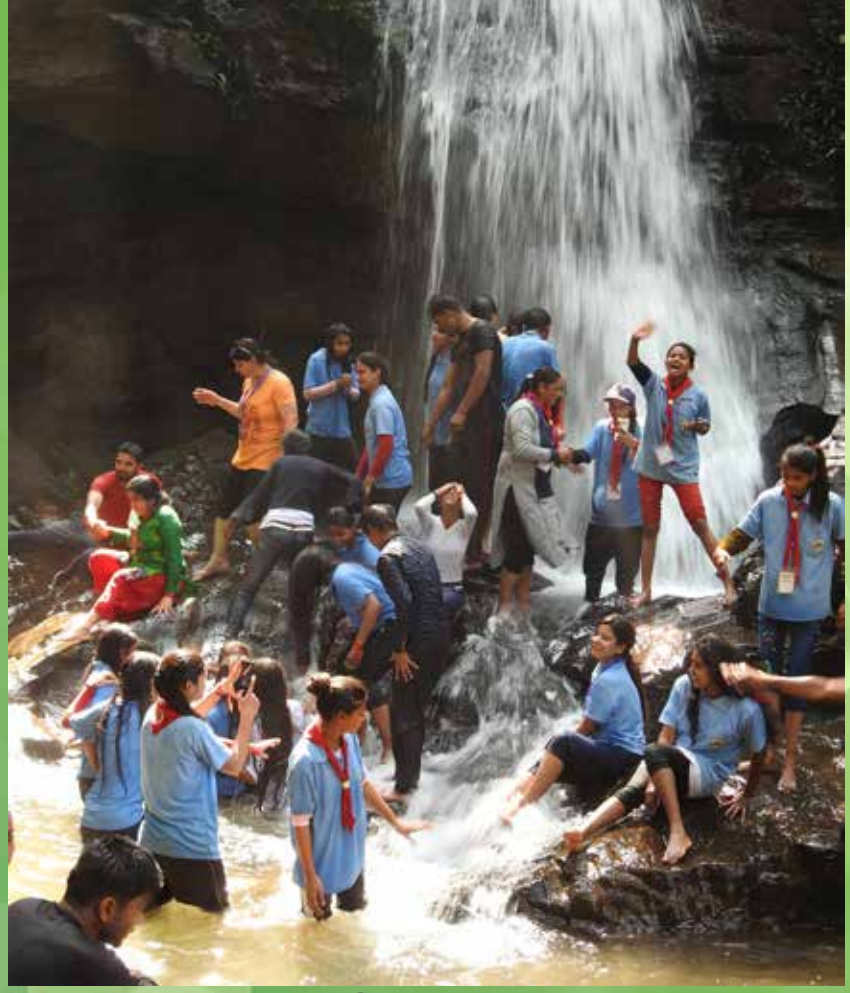

अविस्मरणीय रहा अन्तरराष्ट्रीय एडवेंचर कैम्प, पंचमढी

डॉ.ओमप्रकाश कादयान

हरियाणा स्कूली शिक्षा विभाग गत कई वर्षों से छात्र-छात्राओं को पर्यटन के अवसर प्रदान कर रहा है। निश्चित रूप से यह काफी सराहनीय बात है। हर वर्ष मनाली, केरल, पंचमढ़ी, डलहौजी के आकर्षक पर्यटन स्थलों पर छात्र-छात्राओं को घुमाना गज़ब की सोच है जिसके कई फायदे हैं। एक तो यात्राओं पर जाने वाले होशियार व प्रतिभाशाली बच्चों की प्रतिभा में और भी अधिक निखार आता है। दूसरा, जिन विषयों- जल, जंगल, पहाड़, नदी, झरनों, वनस्पतियों, धर्म, खान-पान, कला-संस्कृति, इतिहास, भूगोल को पुस्तकों में पढ़ते हैं, यात्राओं के दौरान इन सब से प्रत्यक्ष साक्षात्कार होता है तो फिर बच्चा इन्हें कभी नहीं भूलता। इन यात्राओं से विद्यार्थियों को अपने देश की बहुरंगी संस्कृति को देखने का अवसर मिलता है। वे सामाजिक प्रवृत्ति के बनते हैं, एक दूसरे को समझने का मौका मिलता है तथा वे प्रकृति व प्राकृतिक स्रोतों का सम्मान करना सीखते हैं। इन यात्राओं के दौरान उन्हें जीवनोपयोगी अनुभव मिलते हैं। अबकी बार विभाग ने प्रतिभावान बच्चों के लिए पंचमढ़ी की सैर की योजना बनाई।

कक्षा नौंवी से बारहवीं की छात्राओं के साथ अबकी बार कक्षा छठी से आठवीं तक के 220 छात्र व अध्यापक भी इस टूर में शामिल किये गए। कुल मिलाकर अबकी बार 440 छात्रा-छात्राएँ तथा शिक्षक शामिल हुए। इनके साथ व्यवस्था के लिए कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार के साथ पंचकूला से विजेन्द्र धनखड़, करनाल से सियाराम, कैथल से जसबीर कौर, फतेहाबाद से ओमप्रकाश, सोनीपत से विजेन्द्र, रेवाड़ी से प्रदीप कुमार यादव, रोहतक से रमेश कुमार शामिल हुए। 31 जनवरी को सभी बच्चों को फरीदाबाद के एक स्कूल में ठहराया गया। उनके खाने-पीने, रहने की व्यवस्था की गई। एक फरवरी को सभी दिल्ली के निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर इकट्ठे हुए तथा

दोपहर 2 बजकर 10 मिनट पर जबलपुर एक्सप्रेस से यह यात्रा आरम्भ हो गई।

बच्चे सफर का आनन्द लेने लगे। उनका आपसी परिचय होने लगा। रेल के सफर की अपनी दुनिया होती है। रेल अनेक भाषाओं, बोलियों, संस्कृतियों, वेशभूषाओं, अनेक धर्मों व जातियों का संगम है। यहाँ 'अनेकता में एकता' नजर आती है। सभी का लक्ष्य अपने गंतव्य तक पहुँचने का होता है। सबकी साँझा माध्यम होती है- रेल।

इस सफर में बच्चों के खाने-पीने व अन्य सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा गया था। कैम्प इन्चार्ज रामकुमार सहित अन्य जिम्मेवार अध्यापक कुछ देर बाद बच्चों का हाल पूछते रहे। दिल्ली से फरीदाबाद, मथुरा, आगरा, ग्वालियर, झाँसी, भोपाल, इटारसी होते हुए पिपरिया पहुँचे। पिपरिया हमारे लिए पहले से बुक की गई बसें कतार में खड़ी थीं। बसों में सवार होकर हम पंचमढ़ी की ओर चले तो उजाले के संकेत हो चले थे।

अब हमारा सफर सुहाना व मजेदार था। पिपरिया से पंचमढ़ी करीब 55 किमी की दूरी पर है। कुछ दूरी

चलकर चढ़ाई शुरू हो गई। दोनों ओर सतपुड़ा के घने जंगल, बरसात के कारण शीतल बयार, वहाँ की लाल मिट्टी की सौंधी खुशबू, हवा में घुली, जंगल में नाना प्रकार के वृक्षों की मिश्रित गंध, ऊँची-नीची बल खाती साँपिन-सी सड़क पर चलती बसों से दिखने वाली अद्भुत, नयनाभिराम दृश्यावली प्रभावित करने वाली थी। इस सफर में हमें पहली बार एहसास हुआ कि हम खूबसूरत जगह जा रहे हैं। सतपुड़ा के घने जंगल यहीं से शुरू होते हैं। मटकुली से करीब छह किमी आगे पहाड़ों की सीधी चढ़ाई शुरू हो जाती है। घंटे भर के सफर के उपरान्त

पंचमढी आ गई। करीब 9 बजे हम नेशनल एडवेंचर इंस्टीट्यूट पहुँचे। यहाँ सबको टैंट अलाट किये गए। कुछ देर बाद सभी ने खाना लिया, थोड़ा आराम किया। फिर सभी बच्चों को कैप, टी-शर्ट, आई-कार्ड, बैग व पानी की बोतलें बाँटी गई। शाम को कैम्प फायर होना था। सभी बच्चों को नेशनल ट्रैनिंग सैंटर में एकत्रित किया गया। यहाँ अब बहुत से बच्चे थे। क्योंकि भारत भर से ही नहीं बल्कि कई देशों के विद्यार्थी भाग लेने आए थे। अन्तरराष्ट्रीय शिविर का एक बड़ा फायदा ये होता है कि कई संस्कृतियों का संगम एक जगह दिखाई देता है। 'विश्व बन्धुत्व' की भावना पनपती है। बच्चों को, युवाओं को, अध्यापकों को एक-दूसरे देशों को जानने, समझने का मौका मिलता है तथा संस्कृतियों का आदान-प्रदान होता है।

आज के कैंप फायर में विभिन्न देशों व राज्यों से आए प्रतिभागियों की जानकारी दी गई, कैंप के नियम व शर्तों को बताया गया। कैंप के आयोजन की रूपरेखा की जानकारी दी गई तथा सभी विद्यार्थियों को ए, बी व सी तीन ग्रुपों में बाँटा गया ताकि तीनों ग्रुपों के विद्यार्थियों को अलग-अलग दिन अलग-अलग रास्तों पर ट्रैकिंग के लिए ले जाया जाए, क्योंकि प्रतिभागी अधिक थे, इसलिए इन्हें तीन ग्रुपों में बाँटना उचित था। तीन ग्रुपों के अलग-अलग इंचार्ज बनाए गए। सभी को अलग से प्रशिक्षक दिए गए।

घुड़सवारी, तीरंदाजी, बोटिंग, राइफल शूटिंग, रॉकलाइमिंग आदि करीब 15 एडवेंचर गतिविधियों के साथ-साथ अबकी बार हॉट एयरबैलून, पैरासीलिंग नई गतिविधियाँ शामिल की गईं जो काफी रोचक भी थीं। हॉट एयर बैलून व पैरासीलिंग के माध्यम से बच्चों ने आसमान की सैर की। बच्चों के चेहरे पर उत्साह, जोश, उमंग, उत्सुकता व मुस्कान देखकर लग रहा था जैसे बच्चों की कल्पनाओं को पंख लग गए और वो अब आसमाँ में उड़ान पर थे। इसके साथ हर रोज बच्चों के ट्रैकिंग के लिए एक रोचक व साहसिक पर्यटन स्थल पर ले जाया गया। ट्रैक कोई दस किलोमीटर का था, कोई सोलह किलोमीटर का तो कोई अठारह किलोमीटर का आना-जाना, जंगल व पहाड़ों के ये ट्रैक रोमांचकारी थे। हमें भी ट्रैकिंग के लिए बच्चों के साथ ही जाना था।

अगले दिन 'बी फॉल' की ओर चल दिए। जंगल के रास्ते गुज़रते हुए हमने खड़े पेड़ों को देखा तो इनके जीवन के बारे में ज्ञात हुआ। सख्त पत्थरों पर इन जंगलों का खड़ा होना, बड़े होना, फिर सरसब्ज रहना कठिन जीवन संघर्ष का प्रतीक है। विशाल पत्थरों पर किसी अंकुर का फूटना, पौधे से पेड़ बनना, अपनी लम्बी-लम्बी जड़ें कठोर पत्थरों पर दूर तक फैलाकर पत्थरों को जकड़कर जीवन रस चूसना एक बड़ी चुनौती है। ये घने, उलझे हुए से जंगल देखकर भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा लिखित कविता 'सतपुड़ा के घने जंगल' याद हो आई।

पेड़ों की जड़ों में मैं अनेक कृतियाँ ढूँढ रहा था। हम लगातार रोमांचक सफर पर आगे बढ़ रहे थे। अब 'बी फॉल' नजदीक था। रास्ते में अनेक छोटे-छोटे झरने झर-झर झरते-बहते संगीत गुनगुनाते मिले। ये ही अनेक झरने आगे चलकर एक बड़ा झरना बनाते हैं। हम उस अन्तिम पड़ाव पर पहुँचे जहाँ से यह झरना गिरता है। यहीं से घनी उतराई शुरू होती है। करीब 150 फीट नीचे उतरकर 'बी फॉल' यानी पंचमढ़ी के खास झरनों में से एक झरना आ गया। प्रकृति की सुरम्य वादियों में स्थित 150 फीट की ऊँचाई से गिरने वाले झरने का अवलोकन एक खूबसूरत अहसास है। इतनी ऊँचाई से गिरते झरने के नीचे यात्री नहा कर निहाल हो जाते हैं। इस झरने के नीचे नहाने का आनन्द लिए बिना पंचमढ़ी की यात्रा अधूरी है। क्योंकि सबसे अधिक आनन्द यात्रियों को यहीं पर आता है। विद्यार्थी व शिक्षक घंटे भर इस झरने के नीचे नहाए, फोटो खींचे फिर वापसी सफर पर चले। इतना ही आनन्द हमें डैच्चेसफॉल देखने में आया। आते समय हमने बायसन लॉज (संग्रहालय) देखा। इसमें सतपुड़ा के जंगलों, पहाड़ों के जीव जन्तुओं के मॉडल रखे हुए हैं। जंगली पशु, पक्षी व अन्य जानवरों के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दी गई हैं।

अगले दिन सुबह हम डैच्चेसफॉल गए। आना-जाना करीब 18 किलोमीलटर का कठिन किन्तु रोचक ट्रैक है। उस जंगल के रास्ते से होकर जिसमें टाइगर, भालू, अजगर, जंगली सूअर आदि कभी-भी रास्ते में मिल सकते हैं। किन्तु करीब हम सवा सौ सदस्यों के ग्रुप में थे इसलिए खतरा नहीं था। इतने मनुष्यों को देखकर जंगली जानवर अपना-अपना रास्ता बदल लेते हैं। फिर इन ट्रैकों पर जाने से पहले सबको सिखाया जाता है कि सभी ग्रुप में रहेंगे। बीच में अधिक फासला ना हो, कोई सदस्य मोबाइल पर गाने नहीं चलाएगा, न कोई तेज आवाज में

बोलेगा जिससे जंगली जानवरों को बुरा लगे। हम कैम्प से चले तो बीस मिनट बाद टाइगर रिजर्व इलाके में घुस गए। थोड़ा आगे चलकर ऊँचाई पर 'रीछगढ़' आ गया। बताते हैं कि यहाँ पहले बहुतायात में रीछ रहते थे। जब पर्यटक अधिक आने लगे तो वो जंगल की ओर चले गए। बताते हैं कि रात को तो अब भी यहाँ भालू आते हैं। यहाँ भालूओं की अनेक गुफाएँ हैं। रीछगढ़ पहाड़ों को ध्यान से देखने पर यह भी पता चलता है कि पहले यहाँ समुद्र था। पृथ्वी की हलचल से समुद्र का हिस्सा ऊपर उठकर पहाड़ बन गए। इन पहाड़ों के विशाल पत्थरों में उन छोटी-छोटी रोड़ियों की कतारे हैं जो नदियों द्वारा बहाकर लाई गई हो तथा समुद्र में गिरा दी जाती हैं। इन रोड़ियों के बीच छोटी-छोटी शंख व सीपियाँ भी मिल जाती हैं जो इस बात का सबूत है कि ये पहाड़ समुद्र से उठे हुए हैं। इसलिये ये यात्राएँ, भूगोल, विज्ञान, इतिहास, ललित कला, पर्यावरण जैसे विषयों के विद्यार्थियों के लिए शोध का केन्द्र कही जाती हैं। सभी ने रीछगढ़ देखा तथा आगे चल दिये। आगे कई जगह जंगली जानवरों की गुफाएँ देखीं। वहाँ के एक ट्रेनर ने बताया कि इन गुफाओं में रात होते ही सोने के लिए जंगली जानवर आ जाते हैं।

हम ऊबड़-खाबड़, ऊँचे-नीचे रास्तों से, पहाड़ों से होते हुए चलते रहे। पहाड़ों के नज़ारे, गहरी घाटियों, ऊँची चोटियों, गहरे जंगल, पेड़ों पर घूमती जंगल की बड़ी-बड़ी गिलहरियाँ, पेड़ों पर बैठे खर-खर करते बन्दर सफर को आनन्दित बना रहे थे। हम करीब आठ किलोमीटर का सफर तय करते हुए डैच्चेस फॉल के करीब पहुँचे। अब करीब आध किलोमीटर की खड़ी उतराई थी। सीढ़ियाँ कोई छोटी कोई बड़ी, इनसे उतर कर झरने तक जाना इतना आसान नहीं था। फिर भी बच्चे हिम्मत से नीचे उतरते रहे। सुन्दर झरना देखकर बच्चे उछल पड़े। सर्दी होने के बावजूद बहुत से बच्चों व अध्यापकों से रूका नहीं गया, नहाने के लिए झरने के पानी में कूद पड़े। बच्चे फोटो ले रहे थे। करीब दो घण्टे के मनोरंजन के बाद सभी को ऊपर वाले झरने पर ले जाया गया जहाँ से ये झरना गिरता है। यहाँ पानी के कटाव से पत्थरों का कलात्मक आकार बना हुआ था। हजारों वर्षों की पानी की मेहनत ने पत्थरों को काट-काट गहरी गुफाएँ बना रखी हैं। ये जगह नीचे वाले झरने से भी खूबसूरत कही जा सकती हैं।

सुनसान से जंगल के रास्ते से होकर टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों से होकर हमारा काफिला चला। दो घंटे के सफर के बाद पहाड़ की खड़ी चढ़ाई शुरू हुई। घूमते हुए हम कुछ देर के कठिन रास्ते से पहाड़ की उस चोटी पर जा चढ़े जहाँ से सूर्योदय व दूसरी ओर सूर्यास्त का अद्भुत, रोचक, दिव्य, अनुपम दृश्य दिखता है। अब इन दोनों में से समय तो बीच का ही था। किन्तु हमने वो जगह जरूर देख ली जहाँ से दोनों दृश्य सुबह-शाम दिखाई देते हैं। दोनों ही जगहों से दूर तक फैले गहरे जंगल, घाटियाँ, चोटियाँ दिखाई देती हैं। ये बड़े मनोरम दृश्य थे। पचमढ़ी

आने वाले पर्यटक यहाँ जरूर आते हैं। किन्तु वे या तो सुबह आते हैं या फिर सूर्यास्त के समय। इन दोनों प्वाइंटों के मध्य में एक संग्रहालय है, जिसमें पंचमढ़ी के आस-पास के पर्यटन स्थलों की फोटो, पूरी जानकारी सहित है।

अगले दिन सुबह सूचना मिली कि श्री प्रदीप डागर, निदेशक, मौलिक शिक्षा इस कैम्प में शामिल होने के लिए पंचमढ़ी आ चुके हैं। उन्होंने सबसे पहले बच्चों से मिलने व उनकी गतिविधियाँ देखने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने पूरा समय लगाकर एक-एक गतिविधि को देखा, बच्चों से बात की, उनको उत्साहित किया, साहसिक प्रेरणा दी तथा कई गतिविधियाँ खुद भी करके देखी। उसके बाद झील पर निदेशक महोदय ने बच्चों के बीच में घुड़सवारी की, तीरंदाजी, राइफल शूटिंग, नौका विहार की उसके बाद हॉट एयर बैलून में आसमान में उड़ने का आनन्द लिया। इसके बाद कैम्प फायर में जाना था। कैम्प फायर के आज के मुख्य अतिथि निदेशक महोदय थे। विशेष मेहमान के तौर पर मौजूद थे केन्या के गवर्नर। इनके अलावा भारत स्काउट एंड गाइड के निदेशक राजकुमार कौशिक, राष्ट्रीय प्रशिक्षण केन्द्र पंचमढ़ी के संयुक्त निदेशक एमएम कुरैशी, राष्ट्रीय साहसिक संस्था के सहायक निदेशक एसएस रॉय तथा हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग, पंचकूला के कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार सहित देश-विदेश से आए हुए शिक्षक व स्काउट्स से जुड़े अधिकारी मौजूद थे। निदेशक महोदय ने शिविर ज्वाला प्रज्वलित करके कैम्प फायर की शुरुआत की। बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। श्रीलंका, साउदी अरब, बांग्लादेश नेपाल व जापान ने अपने-अपने देशों के लोकप्रिय नृत्यों की प्रस्तुति दी तो भारत के विभिन्न राज्यों ने अपने-अपने लोक नृत्यों की शानदार झलक दिखाई। हरियाणा की छात्राओं ने सबसे शानदार प्रस्तुति दी तो तालियों की जोरदार गड़गड़ाहट के साथ वातावरण ध्वनिमय हो उठा। हरियाणा के सरकारी स्कूलों की छात्राओं ने पूरी दुनिया को बता दिया कि हरियाणवी संस्कृति अति समृद्ध है। यहाँ के लोक नृत्यों में जो मस्ती है वो पूरी दुनिया में कहीं नहीं। क्योंकि इस अन्तरराष्ट्रीय एडवेंचर कैम्प में हरियाणा प्रदेश की भागीदारी भी सबसे अधिक थी इसलिए हमारे लोकनृत्यों की प्रस्तुतियाँ भी संख्या में ज्यादा रही। कार्यक्रम के दौरान अपने सम्बोधन में श्री डागर ने कहा - आज मुझे बेहद अच्छा एहसास हो रहा है क्योंकि मैं कई राज्यों व कई देशों से आए विद्यार्थियों, कैम्परस्, स्काउट्स मास्टर, गाइडस के बीच हूँ। यहाँ कई भाषाओं, बोलियों, वेशभूषाओं, विभिन्न संस्कृतियों का संगम मैं देख रहा हूँ। मेरे लिए ये क्षण यादगार व कीमती हैं। उन्होंने कहा कि ये एडवेंचर कैम्प, ये यात्राएँ, ये साहसिक गतिविधियाँ, ये सांस्कृतिक कार्यक्रम, ये विभिन्न देशों, राज्यों की संस्कृतियों का संगम आपको इतना अनुभव देगा कि ताउम्र काम आएगा। आप कहीं भी रहें, कहीं भी जाएँ, ये अनुभव आपको गौरवान्वित करता रहेगा। बहुत सी नौकरियों में भी सहायक सिद्ध होगा। ये एडवेंचर कैम्प बच्चों को इतना सक्षम बनाते हैं कि वे कहीं भी अनुभवहीनता महसूस नहीं करेंगे। ये गतिविधियाँ बच्चों को शारीरिक, बौद्धिक हर तरीके से मजबूत बनाती हैं। बच्चों के सर्वांगीण विकास में ये मील का पत्थर साबित होंगी। बच्चों में लीडरशिप क्वालिटी आती है। उन्होंने देश-विदेश से आए सभी प्रतिभागियों का आह्वान किया कि हम विश्व बन्धुत्व की भावना को मजबूत कर सकते हैं।

उन्होंने कैम्प के इंचार्ज रामकुमार व उनकी टीम को बधाई व शाबाशी दी कि वो इतने बेहतर ढंग से ये

कार्यक्रम आयोजित कर लेते हैं। कार्यक्रम के बाद खाने की व्यवस्था थी।

अगले दिन मैं और रामकुमार निदेशक महोदय के साथ अनेक उन स्थलों में भ्रमण पर गए जिन्हें बच्चे या तो देख चुके थे या फिर जाने वाले थे। गुप्त महादेव, बड़ा महादेव, रीछगढ़, पांडू गुफाएँ, बी फॉल स्थलों को देखा, जंगल का भ्रमण किया। उसके बाद जटाशंकर की ओर चल दिये। दोनों ओर ऊँचे कलात्मक पहाड़ों के बीच की संकरी-सी घाटी में जटाशंकर मन्दिर स्थापित है। इन संकरी गहरी घाटी में बड़े-बड़े पत्थर एक दूसरे में इस प्रकार फँसे हैं जैसे किसी शिल्पी ने कड़ी मेहनत के बाद अनोखे तरह के पाषाण मूर्तिशिल्प गढ़ रखे हैं। एक दूसरे पर पड़े, एक दूसरे में उलझे, अटके, एक-एक पाषाण किसी शिल्प से कम नहीं। ये सबसे बड़ी शिल्पी प्रकृति की अनूठी संरचना कही जा सकती है। करीब आध किलोमीटर की गहरी उतराई के बाद जटाशंकर आता है। कहा यह भी जाता है कि शिव ने यहाँ अपनी जटाएँ खोलकर गंगा को मुक्त किया था, किन्तु यहाँ गंगा का कोई लेना देना नहीं। यहाँ कुछ पानी अवश्य भरा रहता है। यात्रियों के लिए यहाँ बहुत सी दुकानें भी हैं। विद्यार्थी इस जगह को देखकर उत्साहित थे।

अगले दिन टाइगर रिजर्व देखने की योजना थी। इसके लिए एक दिन पूर्व बुकिंग करवा दी थी क्योंकि यहाँ एक दिन में केवल सात जिप्सियों को ही अनुमति मिलती है। निजी वाहन यहाँ जाना मना है। अगले दिन हम सुबह चार बजे उठे। तैयार हुए। अपना-अपना आधार कार्ड लेकर सुबह साढ़े पाँच बजे टाइगर रिजर्व की ओर चल दिये। पन्द्रह मिनट के सफर के बाद हम टाइगर रिजर्व के गेट पर पहुँचे। वहाँ आधार कार्ड दिखाया तथा गाइड को साथ लेकर अन्दर प्रवेश कर गए। निदेशक महोदय प्रदीप डागर के साथ हम सात लोग जिप्सी में सवार थे। हम जंगल में घुसे, अभी अंधेरा था। उजाले के संकेत जरूर मिल चुके थे। पर एक बार जिप्सी की लाइट जलानी पड़ी। सभी का ध्यान जंगल की ओर था। पंद्रह मिनट के सफर के बाद उजाला होने पर जिप्सी की लाइटें बन्द कर दी। हम घने जंगल में प्रवेश कर चुके थे। पक्षियों की चहचाहट आकर्षित करने लगी। जंगली मुर्गे बोल रहे थे। कई मुर्गे इधर-उधर घूमते भी नजर आए। अब सूर्योदय हो रहा था। सतपुड़ा के घने जंगलों के झुरमुटों से, वृक्षों की टहनियों के मध्य से सन्तरई किरणें जंगल में फैलने लगीं। हमें कई जगह मोर दिखाई दिए। कोई नाचता हुआ, कोई गाता हुआ, कोई बैठा हुआ तो कोई घास में घूमता हुआ। हम जैसे-जैसे आगे बढ़ते गए हमें बारहसिंगा, साम्भर, जंगली गिलहरी, हिरणों, नीलगायों, बायसन के झुण्ड मिले, किन्तु शेर व भालू अब तक नहीं मिले। हम 26 किलोमीटर के सफर के उपरान्त अन्तिम पड़ाव पर पहुँचे जहां जंगलात के कुछ कर्मचारी रहते हैं। वहाँ हमने चाय पी। थोड़ा पैदल घूमे तथा उन कर्मचारियों से बात की। उन्होंने बताया कि दो दिन पूर्व यहाँ पर टाइगर आया था। करीब एक घंटे तक इस घास में घूमता रहा, कुछ देर बैठा फिर चला गया।

करीब आधे घंटे के ठहराव के बाद हम वापिस चल पड़े। इतने में एक जिप्सी वाले ने बताया कि अभी दस मिनट पहले हमने दो भालू देखे हैं, सामने वाले रास्ते पर। हम जल्द ही वहाँ से निकल पड़े, किन्तु हमें भालू दिखाई नहीं दिए। शायद जंगल की ओर चले गए। हमें टाइगर व भालू छोड़कर बहुत से जंगली जानवर दिखाई दिये। इस जंगल में घूमना अपने आप में रोमांचक व रहस्यमय लगता है। प्रदूषण से दूर, ऑक्सीजन से भरपूर, आँखों को अच्छा लगने वाले, मन को भाने वाले तथा स्वास्थ्य लाभ देने वाले जंगल में सैकड़ों अजीब किस्म के पेड़ भी हैं। पत्थरों में अपनी जड़ें जमाए हुए जीवटता का उदाहरण हैं।

आज हमें टाइगर रिजर्व में तो टाइगर दिखाई नहीं दिया, किन्तु आज यहाँ से कुछ दूरी पर मटकुली स्थान पर एक टाइगर ने एक बस्ती के पास आकर एक महिला पर हमला बोल दिया। कुछ दिन पूर्व भी स्काउट ट्रैनिंग सैंटर के साथ रात दस बजे टाइगर को सड़क पर मस्ती में चलता देखा गया। अगले दिन अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) वन्दना दिसोदिया, पंचमढ़ी पहुँचीं। उन्होंने भी बच्चों से मिलने, गतिविधियों का निरीक्षण करने व कुछ खास जगहों पर घूमने की इच्छा जताई। इन्होंने खुद भी कुछ साहसिक गतिविधियों में हिस्सा लिया। कई पर्यटन स्थल देखे तथा शाम को कैम्प फायर में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। अतिरिक्त निदेशक ने देश-विदेश से आए बच्चों व अधिकारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्काउट व एडवेंचर गतिविधियाँ एवं इस तरह के कैम्प एकता व भाईचारे की मजबूत कड़ियाँ हैं जो एक दूसरे को जोड़ने का काम करती हैं। हम विभिन्न राज्यों से, कई देशों से आकर एक दूसरे से मिलते हैं, एक दूसरे को समझते हैं। इनसे विचारों व संस्कृतियों का आदान-प्रदान होता है।

अगला दिन विदाई का दिन था। भारत स्काउट एवं गाइड के निदेशक राजकुमार कौशिक ने हरियाणा से सभी बच्चों के साथ ग्रुप फोटो करवाए। उसके उपरान्त कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार ने सभी बच्चों व शिक्षकों को प्रमाण-पत्र बाँटे। उसके बाद सभी बसों से सवार होकर मधुर स्मृतियों के साथ पिपरिया रेलवे स्टेशन की ओर चले।

- डॉ.ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही
जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

मुखिया के प्रयासों से बदले विद्यालय के हालात

'कौन कहता है आसमान में छेद नहीं हो सकता एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।' जब मन में कुछ नया कर गुजरने का दृढ़ विश्वास हो तो कुछ भी नामुमकिन नहीं। शायद ऐसा ही मुश्किल काम आसान कर दिखाया, बहुत ही कर्मठ, धुन के पक्के, लगनशील व्यक्तित्व के धनी मौलिक मुख्याध्यापक मदन लाल पाल ने।

यह बात है हलवाना गाँव के सरकारी मिडिल स्कूल की। 'हलवाना' जो जिला करनाल का सबसे पिछड़ा हुआ गाँव है। आज भी बाहर से आने वालों का स्वागत कच्ची गलियाँ और झुग्गी-झोपडियाँ ही करती हैं।

जब मैं भारत विकास परिषद् शाखा घरौंडा और अग्रवाल युवा संगठन के सदस्यों के साथ विद्यालय परिसर में पहुँचा तो बच्चों का हाल देख चकित रह गया। पूरे स्कूल में लगभग दस प्रतिशत बच्चे ही स्कूल वर्दी में होंगे। पैरों में जूते के नाम पर घिसी हुई चप्पलें, जर्सी का कहीं नामोनिशाँ नहीं। इस बार सर्दी भी अपने पूरे शबाब पर।

परिषद के सदस्य बच्चों को जूते और गर्म कपड़े बाँटने पहुँचे थे। जब विद्यालय के मुख्याध्यापक से इस विद्यालय और विद्यार्थियों बारे बातचीत हुई तो उन्होंने बताया कि इस विद्यालय में पहली से आठवीं तक छह सौ से ज्यादा बच्चे पढ़ते हैं। ठीक ढंग से बैठाने की जगह नहीं है। आप देख ही रहे हो कि कुल आठ कमरे हैं और कक्षाएँ हैं सत्रह। मैं सितम्बर माह में इस विद्यालय में मौलिक मुख्याध्यापक के पद पर पदोन्नत होकर आया था। मैंने गाँव और स्कूल के जो हालात देखे, एक बार तो मन मे आया कि प्रोमोशन को ही (फोरगो) छोड़ देता हूँ, जो होगा देखा जायेगा।

बच्चों की जो स्थिति आपने देखी उस समय इससे बेहतर तो होगी नहीं। थोड़ी देर यही सोचता रहा पर न जाने कैसे एक दूसरा विचार मेरे ऊपर हावी होने लगा -ये बच्चे गरीबी में पैदा हुए हैं तो इसमें इनका क्या दोष?, हैं तो ये भी किसी की संतान, वे भी तो अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते होंगे। वे भी तो चाहते होंगे कि उनके बच्चे शिक्षित हों, सभ्य हों, ज्ञानवान हों, और पढ़-लिखकर अच्छे पदों पर जाएँ। इन्हीं ख्वाबों को बुनकर ही तो वे अपने बच्चों को विद्यालय में भेजते हैं। और फिर अध्यापक मात्र अध्यापक ही नहीं होता। जब बच्चा हमारे पास आ जाता है तो हम शिक्षक ही नहीं उनके माता-पिता भी होते हैं। उनको एक सुन्दर वातावरण के साथ-साथ उनकी जरूरतों का भी ध्यान रखना हमारा ही कर्तव्य बनता है।

मैं किंकर्तव्यविमूढ बना खड़ा रहा, फिर अन्तिम निर्णय पर पहुँचा कि मैं पलायन नहीं करूँगा। पलायन कायरता है। मैं हर संभव प्रयास करूँगा कि इस स्थिति को बदला जाए। उसके बाद मैंने और अपने अध्यापक साथियों को साथ लेकर काम करना शुरू कर दिया और सबसे पहले मिड डे मील व्यवस्था को और बेहतर किया। बच्चों से खुलकर बात की, जो बच्चे एक डर से किसी से बात नहीं करते थे। वे मुझसे ऐसे घुलमिल गए जैसे अपने किसी मित्र से बात कर रहे हैं। और फिर खुलकर बातें करने लगे। अपनी समस्या मुझे बताने लगे।

फिर सर्दियाँ शुरू हुईं और आप तो देख ही रहे हैं सर्दी ने अपना कौन सा रूप धारण कर रखा है। इन बच्चों के पास जब इस ठंड में पहनने को जूते नहीं, वर्दी की जर्सी तो दूर, ढंग का गर्म कपड़ा तक नहीं। मैंने कई बच्चों का ठंड से ठिठुरते हुए देखा। पहले तो मैंने सोचा कि मैं ही अपनी जेब से खर्च कर लेता हूँ पर संख्या पाँच-दस होती तो मैं वहन कर लेता पर यहाँ तो सैंकडों की संख्या में ऐसे बच्चे थे जिनके पास सर्दी से बचने के लिए पर्याप्त वस्त्र नहीं थे। मैंने एक दो व्यक्ति से इस बारे बात की पर उन्होंने असमर्थता जता दी। तो मैंने एक

दिन अपने मोबाइल से फेसबुक पर इन बच्चों को ठंड से बचाने के लिए गर्म कपड़े और जूतें देकर सहायता बारे मैसेज लिखा। मैं हैरान रह गया कि आप जैसे सामाजिक कार्यकर्ता, डॉ.अशोक भाटिया जैसे नेकदिल इंसान और दयाकिशन बघेल सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य फरीदाबाद जैसे दयालु व्यक्ति भी हैं। अभी दो दिन दिन पहले ही डॉ.अशोक भाटिया जो विख्यात लघुकथाकार हैं, ने इन बच्चों को 300 गर्म टोपियाँ दीं और कहा कि आगे और भी सहायता करेंगे। इसी प्रकार बघेल जी ने भी पन्द्रह गर्म जर्सियाँ बच्चों के लिए भेजीं और आपकी संस्था भारत विकास परिषद, और अग्रवाल युवा संगठन घरौंडा ने तो कमाल ही कर दिया। जूते, जुराबें और गर्म कपड़ों से भरी गाड़ी मेरे स्कूल में लाकर खड़ी कर दी।

-मास्टर जी, हम तो अपने को सौभाग्यशाली समझते हैं कि जरूरतमंद बच्चों के लिए यह छोटा सा प्रयास कर रहे हैं। लीजिए, अपना सामान संभालो और हमें जाने की अनुमति दीजिए।

-आप ऐसे कैसे जा सकते हैं, आपको उन बच्चों से रू-ब-रू करवाऊँगा और आप अपने हाथों से उन बच्चों को यह सारा सामान देकर उन्हें अपना आशीर्वाद दीजिए।

सब बच्चे खुले स्थान पर बुला लिए गए। मुख्याध्यापक मदन लाल जी ने पहले तो संस्था के सदस्यों जिनमें जयपाल जिंदल, लाला सोहन लाल, सोनी गुप्ता, चंचल राणा आदि का आभार जताया और साथ ही संस्था और संगठन के बारे में बताया कि ये सामाजिक संगठन है जो निस्वार्थ भाव से जरूरतमंदों की सहायता करते हैं। बच्चों ने जोरदार तालियों के साथ संस्था का आभार व्यक्त किया ।

जितना सामान था वह 350 बच्चों में बाँट दिया गया और शेष बच्चों को जल्दी ही देने का आश्वासन दिया। फिर संस्था के सदस्य अजय गुप्ता जो स्वयं एक अच्छे कवि भी हैं ने अपनी बात रखते कहा- प्यारे बच्चो! यदि धन्यवाद करना ही है तो अपने मुख्याध्यापक और अपने अध्यापकों का कीजिए जो पूरी लगन और अच्छी सोच के साथ आपको शिक्षित तो कर ही रहे हैं साथ में आपका हर प्रकार की सहायता भी कर रहे हैं। मास्टर जी बता रहे थे कि उन्होंने सबसे पहले एक हॉल को दो कमरों के बीच दीवार खींचकर दो कक्षाओं के बैठने की जगह बनाई। हर दिन प्रार्थना सभा में बच्चों को प्रेरक प्रसंग, स्वच्छता का महत्त्व एवं ज्ञान से किस तरह सपनों को साकार किया जा सकता है, बताते हैं यह बहुत ही अच्छी सोच के कारण है। जिस प्रकार मास्टर जी अपने कर्तव्यों का निर्वाह कर रहे हैं वैसे ही आप भी पढ़ लिखकर अपने कर्तव्य का पालन करना। जूते, गर्म कपड़े बाँटे जा रहे थे। मैंने देखा बच्चों के चेहरे पर एक खुशी झलक रही थी। मैं समझता हूँ अब वे दुगने जोश से पढ़ेंगे।

राधेश्याम भारतीय
सदस्य, भारत विकास परिषद शाखा घरौंडा
जिला-करनाल, हरियाणा

अपार क्षमता है साहित्य में

प्रायः यह माना जाता है कि साहित्य का विज्ञान से कोई नाता नहीं होता। कविता का तो बिल्कुल नहीं। साहित्य और विज्ञान दो विपरीत ध्रुवों पर स्थित होते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। जिस प्रकार से भाषा हर प्रकार के भावों व हर विषय को व्यक्त करने में सक्षम होती है साहित्य भी किसी न किसी विषय को समेटे होता है। कविता में भी विज्ञान या वैज्ञानिक सिद्धांतों को ढाला जा सकता है। कई बार अनायास ही ऐसा हो जाता है। नागार्जुन की कविता **फसल** को ही लीजिए जो इस प्रकार है :

फसल
एक के नहीं, दो के नहीं,
ढेर सारी नदियों के पानी का जादू:
एक के नहीं, दो के नहीं,
लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमाः
एक की नहीं, दो की नहीं,
हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुण धर्मः
फसल क्या है?
और तो कुछ नहीं है वह
नदियों के पानी का जादू है
हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी-काली-संदली मिट्टी का गुण धर्म है
रूपांतर है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का!

इस छोटी सी कविता में फसल उगने के लिए जिन चीज़ों अथवा परिस्थितियों की ज़रूरत होती है सबको बतलाया गया है। विज्ञान में बताया जाता है कि बीज के उगने या अंकुरित होने के लिए पानी या नमी अनिवार्य है। कविता **फसल** में भी बतलाया गया है कि फसल ढेर सारी नदियों के पानी का जादू है। पानी नहीं तो बीज नहीं उग सकता। बीज नहीं उगेगा तो फसलें अथवा अन्न नहीं उत्पन्न होगा। मिट्टी में जो नमी होती है वह पानी का ही तो एक रूप है। यदि मिट्टी में नमी बिल्कुल ही न हो तो पौधों का पनपना तो दूर बीजों का उगना या अंकुरित होना भी संभव नहीं। आगे बतलाया गया है कि फसल हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म है। बीज को उगने के लिए एक निश्चित तापमान भी चाहिए अन्यथा वह नहीं उग पाएगा। बीज को अंकुरित होने के लिए अपेक्षित गर्मी मिट्टी ही प्रदान करती है।

बीजों को उगने के लिए मिट्टी का सही मिश्रण भी अनिवार्य है। भूरी-काली-संदली मिट्टी से तात्पर्य यही है कि बीज के उगने और बढ़ने के लिए सही प्रकार की मिट्टी भी अनिवार्य है। मिट्टी के बिना बीज अंकुरित तो हो सकता है लेकिन पेड़ या पौधे के रूप में उसकी अपेक्षित वृद्धि असंभव है। केवल रेत अथवा चिकनी मिट्टी नहीं इनका सही मिश्रण फसल के लिए ज़रूरी शर्त है। मिट्टी में कितनी गहराई तक बीज बोना है ताकि उसे सही ऊष्मा मिल सके यह भी किसान ही देखता है। किसानों के कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा के कारण ही संभव है बीज को उगने के लिए अपेक्षित स्थितियाँ मिलना। मिट्टी में हवा भी मिली होती है। उसी से ऑक्सीजन लेकर बीज अंकुरित होता है।

कविता की अंतिम पंक्तियाँ बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। यहाँ फसल को सूरज की किरणों का रूपांतर बतलाया गया है। पेड़-पौधे सूरज की किरणों के प्रकाश में अपना भोजन बनाते हैं। इस प्रक्रिया को प्रकाश संश्लेषण कहते हैं। सूरज की रोशनी के अभाव में प्रकाश संश्लेषण संभव ही नहीं। सूरज की रोशनी नहीं तो पौधों में वृद्धि नहीं। फूल और फल भी संभव नहीं। कहने का तात्पर्य यही है कि सूरज की रोशनी के अभाव में फसलें भी संभव नहीं। कविता फसल की अंतिम पंक्ति है कि फसल हवा की थिरकन का सिमटा हुआ संकोच है। हवा हर प्राणी के लिए अनिवार्य है। पेड़-पौधों के लिए भी। पेड़-पौधे कार्बडाइऑक्साइड को ऑक्सीजन में बदल देते हैं। ये ठीक है लेकिन उन्हें अपने साँस लेने और प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया के लिए ऑक्सीजन की ज़रूरत पड़ती है। हवा के माध्यम से वे इस ऑक्सीजन को ग्रहण करते हैं। फूल से फल या बीज बनने की प्रक्रिया में भी हवा बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है।

फूल से फल या बीज बनने की प्रक्रिया में परागण का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। हवा के द्वारा ही परागकणों का आदान प्रदान हो पाता है। परागण की प्रक्रिया के उपरांत थोड़े स्थायित्व की ज़रूरत होती है। यदि परागण के उपरांत तेज़ हवाएँ चलने लगती हैं तो बीजों का ठीक से विकास नहीं हो पाता। वे कमज़ोर रह जाते हैं। इसीलिए फसल को हवा की थिरकन का सिमटा हुआ संकोच कहा गया है। यहाँ संकोच शब्द भी अत्यंत सार्थक है। परागण की प्रक्रिया बड़ी मोहक होती है। अन्य प्राणियों में ही नहीं पेड़-पौधों में भी इस दौरान विशेष भावों का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। हवा की उपस्थिति में ये सब संभव होता है अतः हवा भी जैसे संकोच का अनुभव करती है और कुछ पल के लिए ठिठक कर खड़ी हो जाती है। यह वास्तविकता है कि मंद-मंद हवा चलने अथवा थिरकने के दौरान ही बीज अच्छी तरह से पनपते हैं और फसल अच्छी होती है।

यदि कविता को ध्यानपूर्वक देखते हैं तो पाते हैं कि इसमें पादप विज्ञान के साथ-साथ कृषि विज्ञान की कई शाखाएँ भी इसमें समाहित नज़र आती हैं। इस प्रकार साहित्य जीवन से संबंधित हर विषय व विज्ञान को व्यक्त करने में पूर्णतः सक्षम है।

सीताराम गुप्ता
ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-110034
srgupta54@yahoo.co.in

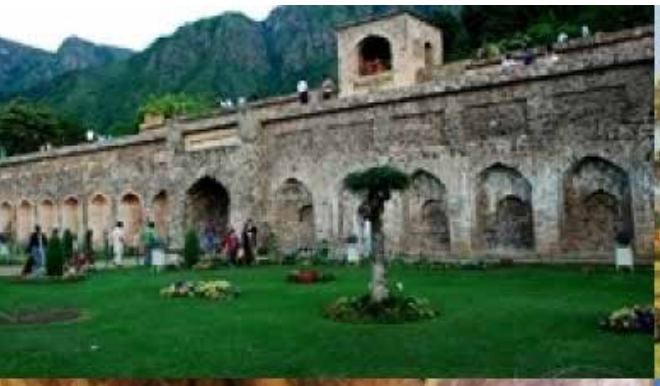

काल के भाल पर संस्कृति का किरीट है विरासत

प्रमोद दीक्षित 'मलय'

अविराम गति नवल सृजन की पीठिका है और ठहराव अवसान का द्योतक। इसलिए कालचक्र की नियति निरन्तर गतिशीलता ही है। काल पुरुष सभ्यताओं एवं संस्कृतियों के उत्थान, विकास एवं पतन का एकमात्र साक्षी होता है। सभ्यताएँ जन्मती है और अपना सृजन-दायित्व निभाकर जीवन का पटाक्षेप भी करती हैं। फिर उसी उर्वर भूमि पर अनुकूल समय, समिधा एवं श्रम का समन्वित साकल्य प्राप्तकर किसी दूसरी सभ्यता-संस्कृति का अंकुर फूटता है और काल द्वारा प्रदत्त विस्तृत फलक पर अपनी मेधा, प्रतिभा एवं विवेक बुद्धि से कला, साहित्य, स्थापत्य के तेजोमय सितारे टाँकते हुए सृजन के मनोहारी विविध रंग बिखेर कर किसी अन्य सभ्यता और संस्ति के लिए आधार तैयार कर विदा लेती है। सभ्यताओं के उद्भव, विकास, विस्तार

और पराभव का यह क्रम चलता ही रहता है। यही सृष्टि का नियम है। पर कोई भी सभ्यता-संस्कृति अपने कर्म की चादर समेटने से पूर्व सृजन के ऐसे बेजोड़ अद्भुत ऐतिहासिक एवं सांस्तिक आदर्श स्थापित कर जाती है जो आने वाली पीढ़ी के लिए गर्व, गरिमा और गौरव बन उसके भाल पर सुशोभित हो अपने कौशल, कल्पना, कर्मशीलता की स्वर्णिम आभा से जग को आलोकित करती है। यही सृजन प्रत्येक पीढ़ी को उसके पूर्वजों से प्राप्त थाती को सँभालते हुए कुछ नया और बेहतर रचने-गढ़ने को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करता है जो सुसंस्कृत, वैज्ञानिक चेतना संपन्न और कल्याणकारी हो। पुरखों से प्राप्त सृजन के ये अप्रतिम उदाहरण वह धरोहर के रूप में सँजोकर रखता है ताकि आगामी पीढ़ी को सौंप सके। प्रकृति भी अपनी ओर से कुछ उत्कृष्ट रचनाएँ धरोहर रूप में लोक को भेंट करती है। विरासत में प्राप्त ये अमूल्य रत्नरूपी धरोहरें वास्तव में काल पुरुष के भाल पर संस्कृति का किरीट है, सभ्यता के मलय चंदन का शीतल सुवासित तिलक है। कर्णपुटों में फंसा चैत्रीय पाटल के इत्र का फाहा है जिसकी सुगंध से लोक शान्ति, सुख एवं समृद्धि का अनुभव करता है। वास्तव में धरोहरें जीवित-जाग्रत इतिहास वृत्त है। मानव के सिर पर तना कला-वितान है जिसकी सुखद छाँव में वह नवल रचना-कर्म की ओर प्रवृत्त होता है।

विश्व में धरोहर के रूप में प्रत्येक देश में ऐसे निर्माण स्थल उपलब्ध हैं जिन पर संपूर्ण मानव जाति गौरवान्वित है। भले ही कोई धरोहर किसी स्थान विशेष में अवस्थित और किसी देश के अधिकार क्षेत्र में हो पर वे वैश्विक हैं, साझी हैं, क्योंकि वे किसी काल विशेष का मानवीय इतिवृत्त है। प्रकृति की भौगोलिक बदलाव की गाथा है। इसलिए चाहे वे गीजा के रहस्यमय पिरामिड हों, विज्ञान को चुनौती देती पीसा की झुकी मीनार हो या सौंदर्य के प्रतिमान के मानक गढ़ता ताजमहल। कुंभलगढ़ किले की सुदृढ सुरक्षात्मक प्राचीर हो या अंतरिक्ष से भी दिख जाने वाली चीन की विशाल दीवार। गुलाबी नगरी जयपुर हो या इराक का बेबीलोन शहर, लाओस के लौहयुगीन हजारों मटकों वाला क्षेत्र हो या जापान के पंद्रह सौ साल पुराने 49 शाही मकबरे या फिर कम्बोडिया के अंकोरवाट स्थित मंदिर। इन हजारों-हजार अमूल्य धरोहरों को प्राप्त कर हम हर्षित हैं और गर्वित एवं गौरवान्वित भी। पर समय के साथ-साथ ये धरोहरें शनैः शनैः छीज रही है। मानव के लोभ, स्वार्थ एवं भोगवादी व्यवहार से कला के अप्रतिम उदाहरण नष्ट हुए हैं और मानव जीवन की गरिमा कलंकित हुई है। मानवीय मूल्यों एवं आदर्शों को खूँटी पर टांग कर मानव अपने उत्तरदायित्वों से मुँह मोड़े केवल स्व की संतुष्टि के सारहीन जीवन में निमग्न है।

इन धरोहर स्थलों पर हमेशा नुकसान की आशंका बनी रहती है। नवीन विकास, शहरीकरण, प्राकृतिक आपदाओं, हिंसा एवं आतंकी गतिविधियों के कारण बहुत सारे धरोहर स्थल क्षतिग्रस्त हुए हैं जिनमें 2001 में तालिबान द्वारा अफगानिस्तान बामियान की बौद्ध मूर्तियाँ, 2012 में सहारा मरुभूमि का ऐतिहासिक व्यापरिक नगर टिम्बक्टू एवं इस्लामिक स्टेट द्वारा सीरिया तथा इराक में कुछ वैश्विक धरोहरों का नष्ट किया जाना चिंतनीय है। धरोहरों के नष्ट होने से इतिहास नहीं बदल सकता। ऐतिहासिक धरोहरों की जितनी दुर्दशा भारत में हुई और अभी भी हो रही उतनी किसी देश में नहीं हुई। हम भारतीयों में अपने अतीत के वाचिक गौरव गान का आनन्द तो है पर धरोहरों को सँभालने की जिम्मेदारी का नितांत अभाव दिखाई देता है। यही कारण है कि भारत में समृद्ध धरोहर के रूप में प्राप्त किले, महल, शिलालेख, ताल-बावली, मंदिर तथा प्रति प्रदत्त नदियों, पुराकालीन गुफाओं एवं कानन-पर्वतों आदि का संरक्षण करने की बजाय हमने अपने हाथों स्वयं उसे उजाड़ा है, नष्ट-भ्रष्ट किया है। खजाने की खोज में प्रस्तर मूर्तियाँ खंडित की और तमाम छोटे किले खोद कर धराशायी कर दिए गए। इन पुरातात्विक महत्व की इमारतों की कोई भी ऐसी दीवार ऐसा, कोना नहीं बचा जहाँ पर नासमझ मनुष्य ने कील या नाखून से अपने हस्ताक्षर उत्कीर्ण न किये हों, प्राकृतिक संपदा को नष्ट न किया है। सैकड़ों वर्ष पुराने दुर्लभ पारिजात जैसे पावन वृक्ष को भी हम सँभाल नहीं सके।

इसीलिए बहुमूल्य धरोहरों के संरक्षण के लिए वैश्विक चिंता प्रकट हुई। संपूर्ण विश्व में मानव सभ्यता से जुड़े ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक स्थलों के संरक्षण के प्रति समाज में जागरूकता लाने के उद्देश्य से यूनेस्को की पहल पर 1982 में ट्यूनीशिया में अंतरराष्ट्रीय स्मारक एवं पुरातत्व स्थल दिवस के आयोजन के अवसर पर एक प्रस्ताव के आधार पर 18 अप्रैल को विश्व धरोहर दिवस के रूप में मनाए जाने की परंपरा का सूत्रपात हुआ। तब से प्रति वर्ष विश्व विरासत दिवस मना कर हम इन अमूल्य वैश्विक धरोहरों के संरक्षण का संकल्प लेते हुए कलासाधक पूर्वजों के प्रति आदर सम्मान व्यक्त करते हैं। इसके लिए एक विश्व स्तरीय धरोहर समिति बनाई गई जो अपनी वार्षिक बैठक में सदस्य देशों से प्राप्त नामांकन आवेदनों पर विचार कर प्रत्येक वर्ष कुछ नए धरोहर स्थल को संरक्षण सूची में अंकित करने की घोषणा कर रखरखाव की योजना बनाती है। इन धरोहरों का अंकन तीन प्रकार की सूचियों में किया जाता है जो ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक, प्राकृतिक एवं मिश्रित वर्ग में होती हैं। 1978 में सर्वप्रथम 12 स्थलों को इन सूची में अंकित किया गया था जो वर्तमान में 1000 से ऊपर हो गए हैं। भारत 37 धरोहर स्थलों के साथ छठे नंबर पर है जबकि 54 धरोहर स्थलों के साथ इटली सर्वोपरि है। 1983 में सूची में शामिल ताजमहल विश्व की शीर्ष 10 अति महत्वपूर्ण धरोहर स्थलों में अभी तक शामिल है। भारत के 37 धरोहर स्थलों में से प्रमुखरूप से कुतुब मीनार, कोणार्क का सूर्य मंदिर, 12 वीं शताब्दी में निर्मित खजुराहो के मंदिर, काजीरंगा अभ्यारण, अजंता एवं एलोरा की गुफाएँ, नालंदा महाविहार, छत्रपति शिवाजी टर्मिनस, लाल किला परिसर, जंतर-मंतर जयपुर और फूलों की घाटी का उल्लेख करना उचित होगा। यह हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है कि हम इस विरासत को संरक्षित कर आगामी पीढ़ी के हाथों में सौंपते हुए गर्व से कह सकें कि पूर्वजों के श्रम-स्वेद से सिंचित इस धरोहर को नष्ट नहीं होने दिया बल्कि श्रद्धाभाव के सुमन समर्पित कर अर्चना की है, वंदन अभिनंदन किया है।

लेखक पर्यावरण, महिला, लोक संस्कृति, इतिहास, भाषा एवं शिक्षा के मुद्दों पर दो दशक से शोध एवं काम कर रहे हैं

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

खेल-खेल में विज्ञान शृंखला में विद्यार्थियों को करवायी जा सकने वाली कुछ विज्ञान पाठ्यक्रम आधारित गतिविधियाँ प्रस्तुत हैं। इन गतिविधियों को करने से विद्यार्थी विज्ञान नियम सिद्धांतों संबंधित उपजी विभिन्न जटिलताओं का सरलीकरण कर सकेगा और उसको लाभ होगा। खेल खेल में विज्ञान शृंखला के अंतर्गत इस अंक में प्रस्तुत है कम लागत की कुछ अन्य विज्ञान गतिविधियाँ, जो कक्षा में विद्यार्थियों को करवा कर उनको पाठ रुचिकर तरीके से समझाया जा रहा है। प्रस्तुत हैं कुछ अन्य प्रभावी विज्ञान गतिविधियाँ। हम आशा रखते हैं कि आप यहाँ इन गतिविधियों को सीख कर जरूर लाभान्वित होते होंगे।

1. चम्मच सिखाये प्रकाश परावर्तन

पाठ प्रकाश में दर्पण के बारे में पढ़ाते हुए हम समतल दर्पण के उदाहरण मे घरों में ही प्रयोग किया जाने वाले लुकिंग ग्लास (मिरर) के बारे में बताते हैं, परंतु जब

बात गोलीय दर्पण की आती है तो उस स्थिति में चम्मच और कड़छी जो कि स्टैनलेस स्टील की हो, इस संदर्भ में एक बेहतरीन उदाहरण होता है। बच्चे तुरंत मिड-डे मील रसोईघर से स्टैनलेस स्टील का नया चम्मच लेकर आये। उसके दोनों तरफ से अपने अपने प्रतिबिंब को देख कर कर गोलीय दर्पण से बने प्रतिबिम्ब के बारे में समझ गए।

कभी बड़ा कभी छोटा तो कभी उल्टा प्रतिबिम्ब बनना उन्हें आनन्द दे रहा था। पाठ्यपुस्तक में भी यही उदाहरण दिया गया है।

2. फेंटास्कोप- भागता घोड़ा

आजकल विद्यार्थी इंटरनेट प्रयोग के दौरान नई नई गतिविधियों के वीडियो भी देखते रहते हैं। एक विद्यार्थी ने किसी वीडियो में यह देखा कि एक गत्ते की डिस्क पर घोड़ों की आकृतियाँ बनाई हुई है और जब उसको घुमा कर कर दर्पण में देखते हैं तो घोड़े भागते हुए नजर आते है। उनके इस जिक्र से मुझे अपना विद्यार्थी जीवन याद आ गया कि हमने भी फेंटास्कोप नामक एक प्रकाशीय उपकरण **प्रकाश व छायाएँ** पाठ के अंतर्गत बनाया था। इसका अविष्कार बेल्जियम के भौतिकशास्त्री जोसफ एएफ प्लेट्यू ने 1832 मे किया था। जिसके द्वारा ही दुनिया को सबसे पहले चलती छवि का अहसास हुआ था। फेंटास्कोप,

जिसे दुनिया का पहला चलचित्र भी कहा जाता है, विभिन्न नामों से विश्व भर में जाना जाता है। अब तो विद्यार्थियों के साथ मिलकर एक फेंटास्कोप बनाया गया। फेंटास्कॉप बनाने में एक कार्डबोर्ड डिस्क को जो हैंडल पर लंबवत रूप से जुड़ा हुआ होता है को स्पिन किया जाता है। कार्डबोर्ड डिस्क पर चित्रानुसार समान रूप से स्लिट्स काटे जाते हैं और डिस्क को समतल दर्पण के सामने स्पिन करके और इन स्लिट्स में से प्रतिबिम्ब को देखकर चित्रों में एनीमेशन का अनुभव होता है और घोड़ा (घोड़े) भागते हुए दिखते हैं। घोड़ों के अलावा बहुत से अन्य लगातार चित्र बनाये जा सकते हैं। यही तकनीक बाद में फेनाकिस्टिस्कोप, सिनेमा व एनिमेशन बनाने में आधार बनी।

3. चुम्बक - सिक्कों का डिजाइन

एक बड़े स्पीकर के शक्तिशाली चुंबक पर फेरिटिक स्टैंलेस स्टील के सिक्के लेकर विभिन्न प्रकार के डिजाइन, फूल, वृत्ताकार ज्यामितीय डिजाइन व लंबी लड़ियाँ बनाई जा सकती हैं। इसके लिये चुंबक के ऊपर एक खड़ा सिक्का चिपकाकर उसके किनारों पर दूसरे सिक्कों को चिपकाया जाता है। इस प्रकार विभिन्न प्रकार के डिजाइन बनाकर बच्चों हिमांशु व विकास ने चुंबक द्वारा मनोरंजन पाठ के दौरान अपना व सहपाठियों का मनोरंजन किया व चुंबक के गुणों को समझा।

4. पानी निचले छेद से तेज क्यों निकला?

एक 2 लीटर की बोतल में निश्चित दूरी पर एक ही आकार के छिद्र बनाए गए। उस बोतल में पानी भरकर छिद्रों के ऊपर से चिपकी टेप को हटा दिया गया तो बच्चों ने देखा कि सभी छिद्रों से पानी एक समान वेग से नहीं निकल रहा। सबसे निचले सुराख से पानी बहुत तेज वेग से निकल रहा है। बच्चे यह जानना चाहते थे कि ऐसा क्यों होता है? हालांकि यह गतिविधि अभी उनके पाठ्यक्रम में नहीं हैं, परंतु ग्यारहवीं-बारहवीं के विद्यार्थियों को करवाने के लिए यह गतिविधि बना रहा था तो बच्चों की रुचि थी कि हमें भी यह दिखाया जाए। बच्चों की इच्छा को पूरा करते हुए उन्हें टोरिसेली का प्रमेय (द्रव का बहिःस्राव वेग) बारे कुछ-कुछ आसानी से समझ आने वाला बताया गया। बच्चे हैरानी से पूछ रहे थे कि क्या बड़ी कक्षाओं में भी इस तरह की गतिविधियाँ होती है? उन्हें बताया गया कि इसे टोरिसेली का नियम, सिद्धांत व समीकरण सबसे पहले 1643 में टोरिसेली नामक वैज्ञानिक द्वारा दी गयी।

इस प्रमेय में टोरिसेली ने बताया कि जब किसी पात्र में तरल भरा हुआ रहता है और तल से कुछ ऊँचाई पर यदि इस पात्र में छिद्र कर दिया जाए तो तरल उस छिद्र से बाहर जिस वेग से निकलता है उस वेग को द्रव का बहिःस्राव वेग कहते है। बच्चे तो बस गिरते पानी की स्पीड से आनन्दित हो रहे थे।

5. सुरक्षित सौर अवलोकन

21 जून, 2020 को वलयाकार सूर्यग्रहण घटित होने वाला है। यह सूर्यग्रहण उत्तरी भारत में बेहतरीन नज़ारा प्रस्तुत करेगा। इसी सूर्यग्रहण अवलोकन के अभ्यास के मद्देनजर सुरक्षित सौर दृश्यक के द्वारा सूर्य अवलोकन करवाया गया। विद्यालय में भी विद्यार्थियों को सूर्यग्रहण का अवलोकन करवाया जायेगा। विद्यार्थियों व शिक्षकों को सुरक्षित सोलर फिल्टर के द्वारा सूर्य का अवलोकन का अभ्यास करवाया गया। बच्चों ने फिल्टर द्वारा सूर्य के इस अद्भुत रूप को देखकर बहुत आश्चर्य व्यक्त किया कि सोलर फिल्टर से देखने पर सूर्य एकदम अलग-सा संतरी रंग का कितना शांत सा खगोलीय पिंड दिखाई देता है। इस अवसर पर बच्चों को सूर्य, नाभिकीय संलयन, दृश्य व अदृश्य प्रकाश, पराबैंगनी व अवरक्त विकिरण, दृश्य प्रकाश का स्पेक्ट्रम, सूर्य कोण आदि जानकारी देकर सौरमंडल के मुखिया सूर्य से उनकी

वैज्ञानिक जान पहचान करवाई गई। बच्चे सूर्य के बारे में इतनी जानकारी पाकर बहुत प्रसन्न हुए। विज्ञान अध्यापक दर्शन लाल बवेजा ने बताया कि निकट भविष्य में बच्चों को न्यूटोनियन रिफ्लेक्टर टेलीस्कोप से सौर-फिल्टर लगाकर सूर्य के काले धब्बे (सन स्पॉट) भी दिखाए जाएंगे।

अब बस। फिर मिलते हैं अगले अंक में, खेल खेल में नई-नई विज्ञान गतिविधियों के साथ।

विज्ञान अध्यापक एवं विज्ञान संचारक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैंप
खंड जगाधरी, जिला यमुनानगर

नृत्य कला का जादू बिखेरती सुनैना लोहान

हरियाणा के राजकीय विद्यालयों में जब भी कोई प्रतियोगिता आयोजित की जाती है तो पता चलता है कि राजकीय विद्यालयों में प्रतिभाओं की कमी नहीं, बल्कि जो बेहतर परिणाम हमारे सामने आते हैं वे चौंकाने वाले होते हैं। प्रतियोगिता कोई भी हो तथा किसी भी स्तर की हो, प्रतिभागी अपनी कला का प्रदर्शन प्रभावी अंदाज़ में करते हैं। अगर हम ढूँढना चाहें तो हर विद्यालय में पेंटिंग, मेहंदी, रंगोली, क्ले मॉडलिंग, खेल, गायन, नृत्य, नाटक, वाद-विवाद, भाषण, क्विज़ आदि में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थी मिल जाते हैं। इसलिए यह बात गर्व से कही जा सकती है कि राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी साधारण से दिखने पर भी बहुमुखी प्रतिभाओं से सम्पन्न होते हैं।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग समय-समय पर अपनी उपयोगी योजनाओं से प्रतिभा निखारने का काम कर रहा है। कुछ बच्चे ऐसे होते हैं जो एक साथ कई कलाओं में निपुण होते हैं। ऐसी ही एक छात्रा का नाम है- सुनैना लोहान।

सुनैना राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय नारनौंद, जिला हिसार में बारहवीं कक्षा की छात्रा है। बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न इस छात्रा ने संगीत, फोटोग्राफी, नृत्य, पेंटिंग, मेहंदी आदि प्रतियोगिताओं में अनेक पुरस्कार प्राप्त किए हैं। नृत्य में तो जिले की अनेक प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुकी है। यह पचास से अधिक कार्यक्रमों या प्रतियोगिताओं में अपनी प्रस्तुति दे चुकी है। नृत्य करने समय इसकी शारीरिक भंगिमाएँ, स्फूर्ति, संगीत के साथ थिरकन, हाथों का कलात्मक घुमाव, अँगुलियों के इशारों से जो समग्र प्रभाव बनता है, वह देखते ही बनता है।

बीते दिनों केरल के चेरथला में विभाग द्वारा आयोजित नेशनल कोस्टल स्टडी कैंप में इसकी कला का जादू देखने का अवसर मिला। इस छात्रा के शानदार नृत्य ने सभी को भाव-विभोर कर दिया। निरीक्षण के लिए केरल पधारीं विभाग की अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन) वंदना दिसोदिया भी इस छात्रा के नृत्य की प्रशंसा किए बिना न रह पाईं। कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार ने इस छात्रा को पुरस्कृत किया।

सुनैना कहती है कि उसके माता-पिता व उसके अध्यापक सदैव उसे अपनी कलात्मक प्रतिभाओं को विकसित करने की प्रेरणा देते रहते हैं। सुनैना चाहती है कि वह खूब पढ़े और आईपीएस अधिकारी बनकर देश की सेवा करे।

डॉ. ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही
जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

विश्वास लिए चलना

हारेगा कोरोना, ये विश्वास लिए चलना।
हाँ! भीड़ नहीं करना, दूरी दो गज़ की रखना।।

माना ये दुश्मन है,पर सीख सही में देता।
एक बनो साथ लड़ो, मिट ही जाओगे वरना।।

जाति धर्म की बातें, इसको समझ नहीं आएँ।
जो मिलता है आगे, उसको ही सीखा डंसना।।

सूने शहर गाँव भी, हलचल में आ जाएँगे।
तुम नियमों का पालन, हरपल करते ही रहना।।

देश सभी दहशत में, पर दवा नहीं है कोई।
देख रहें हैं बेबस, अपनों-सपनों का मरना।।

शारीरिक दूरी ही, अब एक दवा है 'प्रीतम' ।
फ़र्ज़ निभाना इतना, फिर है काहे का डरना।।

राधेश्याम 'प्रीतम'
प्रवक्ता हिंदी
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय किरावड़
ज़िला भिवानी, हरियाणा

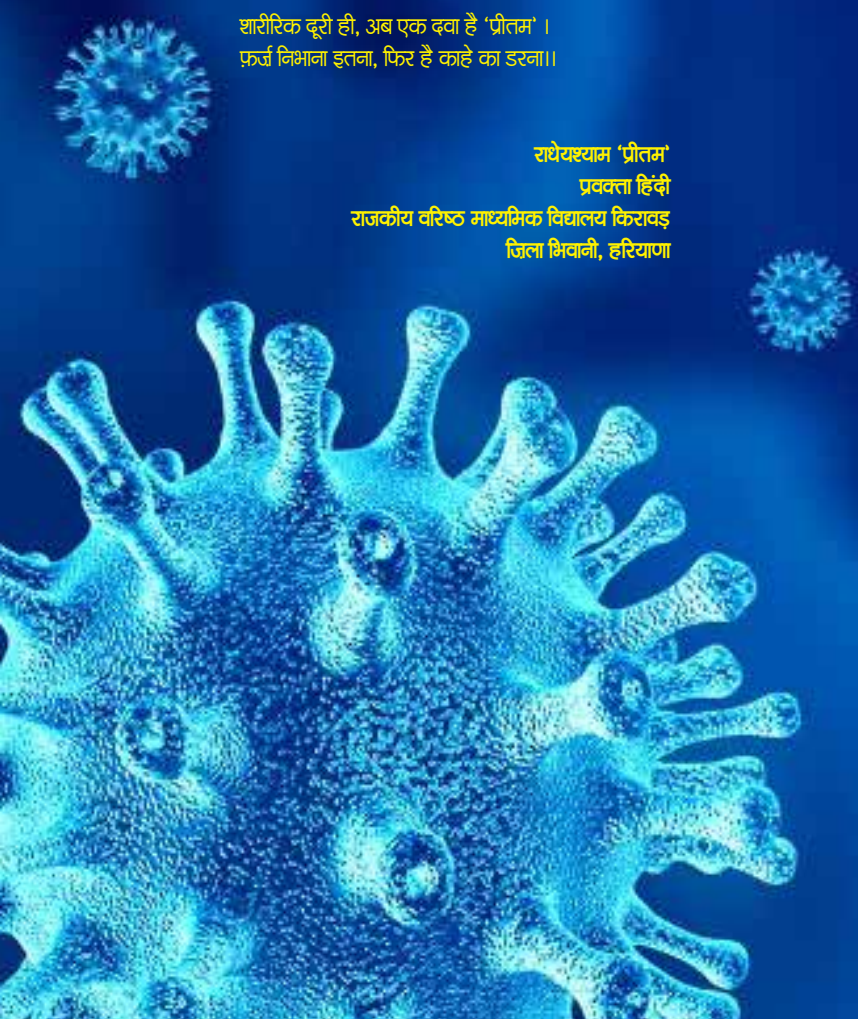

जीवन की जंग, कोरोना के संग

घूँट गरल का पीना होगा
कोरोना संग जीना होगा
साफ - सफाई , सोशल डिस्टैंसिंग
अपना अस्तर खुद सीना होगा

जब तक आए नहीं दवाई
अपना खयाल रखो सब भाई
कैद हुए अब काम चलेना
नये सिरे से जीना होगा

फालतू आना बंद करो जी
फालतू जाना बंद करो जी
जब बहुत जरूरी काम हो कोई
केवल तभी आना-जाना होगा

सीधे कोई चीज न पकड़ो
अनुशासन में खुद को जकड़ो
मास्क, ग्लव्ज और सेनेटाइज़र
जीवन अनमोल नगीना होगा

कहीं से आओ, कहीं पर जाओ
ना छुओ, ना हाथ लगाओ
दिल से अब तुम करो नमस्ते
ना कोई मेल-मलीना होगा

अब हम बिल्कुल नहीं डरेंगे
कोरोना से खूब लड़ेंगे
जीवन की गति ना रोकेंगे
अब हमको ऐसे जीना होगा

-डॉ. जगदीप शर्मा 'राही'
प्राचार्य
रा.मॉडल संस्कृति व.मा.विद्यालय
बेलरखा, जींद, हरियाणा

क्या आप जानते हैं ?

प्यारे बच्चो! आप सभी जानते हैं कि कोरोना वायरस के संक्रमण के फैलाव के कारण आज पूरे विश्व के सामने चिंता की स्थिति बनी हुई है। इसी कारण आपके स्कूल भी बंद हैं। क्या आप जानते हैं कि इस वायरस के संक्रमण के क्या लक्षण हैं। यदि नहीं तो आइये मैं आपको बताती हूँ-

कोरोना वायरस आपके फेफड़ों को संक्रमित करता है। इसके दो मूल लक्षण होते हैं बुख़ार और सूखी खाँसी। कई बार इसके कारण व्यक्ति को साँस लेने में भी दिक्कत पेश आती है। इस वायरस के कारण शरीर का तापमान 37.8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है जिस कारण व्यक्ति का शरीर गर्म हो सकता है और उसे ठंडी महसूस हो सकती है। व्यक्ति को शरीर में कँपकँपी भी महसूस हो सकती है। इसके कारण गले में खराश, सिरदर्द और डाएरिया भी हो सकता है। हाल में आए एक ताज़ा शोध के अनुसार कुछ खाने पर स्वाद महसूस न होना और किसी चीज़ की गंध का महसूस न होना भी कोरोना वायरस का लक्षण हो सकता है। माना जा रहा है कोरोना वायरस के लक्षण दिखना शुरू होने में औसतन पांच दिन का वक्त लग सकता है, लेकिन कुछ लोगों में ये वक्त कम भी हो सकता है।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

बाल कविताएँ

कोरोना

हाथ धो पल-पल
हाथ धो मल-मल ।
मुँह पर लगा मॉस्क
नमस्कार कर संभल ।।

घर से मत निकल
भीड़ देख बच निकल ।
सर्दी, खाँसी, ज़ुकाम
बुखार कोरोना सिग्नल ।।

सावधानी रख हरपल
मुसीबत जाएगी टल ।
संयम और सर्तकता
महामारी का हैं हल ।।

इधर-उधर मत मचल
प्यारे घर चल घर चल ।
हम स्वस्थ-जग स्वस्थ
कोरोना होगा असफल ।।

गोपाल कौशल
नागदा, मध्यप्रदेश

कोरोना 'ए बी सी डी'

'ए' फॉर आर्मी, 'बी' फॉर भारत
बाहर हैं कोरोना घर से निकल मत।
'सी' फॉर कोरोना, 'डी' फॉर डॉक्टर
धरती के भगवान कहलाते हैं डॉक्टर ।।

'ई' फॉर ऑय, 'एफ' फॉर फेस
रख सोशल डिस्टेंस, करें मिसाल पेश।
'जी' फॉर गाइड,'एच' फॉर होम
कोरोना हारेगा, रहें हम स्टे होम।।

'आई' फॉर आइसोलेशन, 'जे' फॉर जोकर
सुरक्षित रहेंगे, साबुन से हाथ धोकर।
'के' फॉर किचन, 'एल' फॉर लाइफ
डाइट पर रखो ध्यान, अनमोल है लाइफ ।।

'एम' फॉर मॉस्क, 'एन' फॉर नेट
लक्षण होने पर तुरंत कराएँ चेक।
'ओ' फॉर आउट, 'पी' फॉर पॉजिटिव
रख सावधानी, कोरोना को करें नेगेटिव ।।

'क्यू' फॉर क्वारेंटाइन, 'आर' फॉर रेड
बाहर निकलें तो चढ़ेंगे कोरोना की भेंट।
'एस' फॉर सैनेटाइज़र, 'टी' फॉर ट्री
प्रोटोकॉल तोड़ने वालों को डंडे फ्री।।

'यू' फॉर यूनिट, 'वी' फॉर वेन
घर में रहकर तोड़ें कोरोना की चेन।
'डब्ल्यू' फॉर वॉच, 'एक्स' फॉर एक्सरे
वक्त है घर में रहने का बाहर हैं खतरे।।

'वाय' फॉर वायरस,'जेड' फॉर जीरो
हमारी सुरक्षा में तैनात कर्मी हैं हीरो।
डॉक्टर, पुलिस, मीडिया, सफाईकर्मी
तत्पर हैं करने कोरोना वायरस को जीरो।।

गोपाल कौशल
दुर्गा निवास बस स्टेंड
नागदा, जिला धार, मध्यप्रदेश
99814-67300

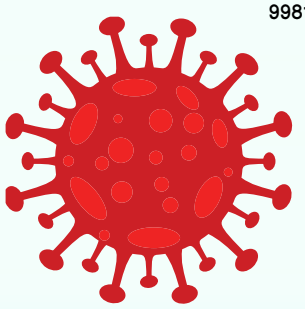

गीदड़ राजा

एक जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। सभी जानवर आपस में मिलजुल कर रहते थे। शेर जंगल का राजा था। सभी जानवर शेर के आदेशों का पालन करते थे।

एक दिन शेर ने सभी जानवरों की मीटिंग बुलाई। सभी जानवर इकट्ठे हो गए। शेर ने कहा कि अब मैं इस जंगल में नहीं रह सकता। मुझे यहाँ से जाना पड़ेगा। सभी जानवर मन ही मन सोचने लगे कि अब इस जंगल का राजा कौन होगा? सभी जानवर एक दूसरे की ओर देखने लगे। उनमें से कुछ जानवर कहने लगे कि भालू को राजा बना दिया जाए तो ज्यादा अच्छा होगा क्योंकि यह ज्यादा अनुभवी है। तभी अन्य जानवरों ने कहा कि नहीं यह तो इस जंगल में अभी कुछ समय पहले ही आया है। यह जंगल का राजा नही हो सकता। अंत में सभी जानवरों ने गीदड़ को राजा बनाने पर सहमति जताई। क्योंकि गीदड़ इस जंगल में सबसे वरिष्ठ है, इसको इस जंगल में रहते हुए काफी समय हो गया है हालांकि गीदड़ को जंगल के कानून व अन्य कार्यों का ज्ञान कम ही था।

गीदड़ के राजा बनते ही उसने सभी जानवरों पर अधिकार जमाना शुरू कर दिया। जंगल में प्रतिदिन झगड़े होने लगे। कुछ जानवरों ने गीदड़ को समझाने की कोशिश की लेकिन उसकी समझ में कुछ नहीं आता।

गीदड़ को जंगल का राजा बनने पर बहुत घमंड हो गया था। लेकिन दूसरे जंगल के जानवरों से वह बहुत डरता था। जब कभी दूसरे जंगल के जानवर उस जंगल में आते थे तो वह बिलकुल सहम जाता था लेकिन उनके चले जाने के बाद वह फिर से अपने जंगल के जानवरों पर अधिकार जमाना शुरू कर देता।

सभी जानवर गीदड़ से बहुत परेशान थे। कुछ समय बाद एक अन्य शेर उस जंगल में आ गया। शेर को देखते ही गीदड़ बहुत डर गया और भागकर अन्य जानवरों के बीच हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। सभी जानवरों ने गीदड़ को सांत्वना देते हुए कहा कि डरो नहीं, हम आपके साथ है। हम सब मिलकर इसका सामना करेंगे। गीदड़ ने सभी जानवरों से माफी माँगी और सभी के साथ मिलकर रहने लगा तथा शेर को जंगल का राजा बना दिया गया।

शिक्षा- मिले हुए पद का सम्मान करें, घमंड नहीं।

- कविता

प्राथमिक अध्यापिका, राजकीय प्राथमिक विद्यालय- सराय अलावर्दी, गुरुग्राम, हरियाणा

पहेलियाँ

1.बड़े कान हैं रंग सफेद,
सदा घास मैं खाता हूँ।
छोटा नन्हा होकर भी मैं,
ऊँची छलाँग लगाता हूँ।

2.दूर बादलों में जाकर भी,
हाथ तुम्हारे रहती हूँ।
करो इशारा उधर ही जाऊँ,
मुँह से कुछ न कहती हूँ।

3.दूर बहुत हम रहते हैं,
नहीं पकड़ में आते हैं।
दिन में नहीं दिखाई देते,
रात को देखे जाते हैं।

4.करो अँधेरा मुझे भगाओ,
करो उजाला साथ में पाओ।
जैसा चाहे मैं बन जाऊँ,
हाथ तुम्हारे कभी न आऊँ।

5 गर्मी में सब मुझसे डरते,
सर्दी में करते हैं बात।
मैं जब आऊँ दिन हो जाता,
जाऊँ तो हो जाती रात।

उत्तर :- 1.खरगोश 2.पतंग 3.तारे 4.परछाई 5. सूर्य

- डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल
सेवानिवृत्त अध्यापक, शिक्षा विभाग
हरियाणा

निराले गगन

ओ निराले गगन
भोले भाले गगन
साथ मिल गीत यह
गुनगुना ले गगन।

मुस्करा दे ज़रा
तो मुझे सुख मिले
खिलखिलाऊँ हँसूँ
तो मेरा दिल खिले।

कोई किस्सा सुना
जो हो तुझने बुना
इस तरह दिल सभी के
चुरा ले गगन।

बॉल जैसा यह सूरज
सलोना लगे।
चाँद तारों का झुरमुट
खिलौना लगे।

बादलों से लड़ूँ
खूब ऊँचे चढ़ूँ
अपने आँगन में मुझको
बुला ले गगन।

काली काली घटा
गुनगुनाने लगी।
इंद्रधनुषी छटा
झिलमिलाने लगी।

मत गिरा बिजलियाँ
खोल दे खिड़कियाँ
भेज बादल सभी की
दुआ ले गगन।।

डॉ0फहीम अहमद
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग,
महात्मा गांधी मेमोरियल
पी.जी.कालेज,
सम्भल -244302 (उ.प्र.)

पेड़-पौधों से सीखें विषम परिस्थितियों में भी डटे रहना

एक बहुत पुरानी घटना याद आ रही है। हमारे घर के सामने गली के दूसरी ओर जो चौपाल थी उसमें छत से बरसात का पानी निकलने के लिए एक मोरी बनी हुई थी। मोरी के रास्ते में, जो एकदम सपाट था, छत से कोई दो-ढाई फुट नीचे दीवार पर ही पीपल का एक पौधा उग आया। बरसात के दिनों में कोई बीज बहकर मोरी के रास्ते आया और उस जगह पर आकर अटक गया। उसे अंकुरित होने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ मिल गईं तो उसने वहीं अपनी जड़ें जमा लीं। उस अंकुर में दो पत्तियाँ भी निकल आईं जो धीरे-धीरे कुछ बड़ी हो गईं लेकिन पौधे को जड़ें फैलाने के लिए पर्याप्त अपेक्षित स्थान नहीं मिल पाया। उसका दस-बारह इंची तना कालांतर में अपेक्षाकृत कुछ मोटा होता रहा लेकिन पत्तियों की संख्या पाँच-छह से ज्यादा कभी नहीं हो पाई। न तो पौधे को जड़ें फैलाने के लिए ही पर्याप्त स्थान मिलने की संभावना थी और न ही अन्य किसी तरीके से पर्याप्त पोषण मिलने की कोई संभावना थी। फिर भी कई सालों तक वह वहीं डटा रहा। उसकी कुछ जड़ें दीवार पर फैली हुई थीं जो साफ दिखलाई पड़ती थीं। उसकी जड़ें उसके तने के विपरीत दिशा में नीचे जमीन में गहराई में फैलने की बजाय उसके तने के मूल के पास तने के समानान्तर दीवार पर फैली हुई थीं।

महीन सूत बराबर मात्र दो-चार जड़ों के सहारे वह पीपल का पौधा दीवार से जुड़ा या सटा हुआ था। कई बार सोचता हूँ कि क्या उसे पौधा कहना उचित होगा? बरसात के दिनों में उसके पत्ते कुछ हरे और चमकदार दिखलाई पड़ते थे। शेष पूरे साल कमजोर और पीले-पीले ही नजर आते थे। हर बार पतझड़ के दौरान वो भी अपनी पहले से ही बेजान हो चुकी इन पत्तियों को गिरा देता और उस पर भी कुछ दिनों के लिए चमकीली कोंपलें लहलहाने लगतीं लेकिन पत्तियों की संख्या कभी बढ़ नहीं पाई। कई बार लगता था इस बार जरूर ये पौधा किसी दिन या तो तेज आँधी में उखड़कर धराशायी हो जाएगा या फिर तेज धूप व लू के थपेड़ों से झुलसकर वहीं उलटा लटक जाएगा। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। इस पौधे के जीवट को देखकर हैरानी होती थी। कई बार उसकी दशा को देखकर दुख भी होता था तो उसके विषम परिस्थितियों में डटे रहने के दमखम को देखकर ईर्ष्या भी होती थी। हम जब तक वहाँ रहे वो पौधा भी दृढ़ता से जड़ें जमाए दिखलाई पड़ता रहा। संभव है वो आज तक वहीं पर डटा हुआ अपनी नन्ही-नन्ही विजय-पताकाएँ फहरा रहा हो।

कई बार उस पौधे की याद आती है विशेष रूप से जब विषम परिस्थितियों से आमना-सामना होता है या दूसरे लोगों की विषम परिस्थितियाँ देखने-सुनने में आती हैं। यदि हम पेड़-पौधों से अपनी तुलना करें तो स्पष्ट होता है कि हमारे सामने अपने अस्तित्व को बचाए रखने और विकास करने के अनेक विकल्प उपलब्ध होते हैं जबकि पेड़-पौधों के पास ऐसा कोई विकल्प नहीं होता। वे एक बार जहाँ उग गए उन्हें हमेशा के लिए वहीं के होकर रह जाना पड़ता है। वे न अपनी इच्छा से इधर-उधर जा सकते हैं और न प्राकृतिक प्रकोप से ही बच सकते हैं। उनकी स्थिति ही ऐसी होती है कि सरदी हो या गरमी अथवा आँधी-तूफान हो या ओलावृष्टि वे स्वयं की रक्षा करने में पूरी तरह से असहाय होते हैं। उन्हें हर प्राकृतिक मार सीधे अपने बदन पर झेलनी पड़ती है। वे किसी से भोजन-पानी नहीं मांग सकते। परेशानी हो तो भी चीख-चिल्ला नहीं सकते। विषम परिस्थितियों में जंगली जानवर भी अपना भोजन पाने के लिए नई जगहों पर जा सकते हैं और भागकर अपनी जान बचा सकते हैं लेकिन पेड़-पौधे नहीं। वे बिना पानी के भी जब तक संभव हो सूखी धरती अथवा किसी दीवार पर भी डटे रहते हैं।

विषम परिस्थितियों में हम अन्यत्र जा सकते हैं। धूप से बचने के लिए हम छाया में जा सकते हैं। गरमी, सरदी, बरसात, आँधी-तूफान व ओलावृष्टि से बचने और हमेशा आराम से रहने के लिए अपनी स्थिति व सुविधानुसार घर बना सकते हैं। शरीर को गरमी-सरदी से बचाने के लिए उचित प्रकार के कपड़े पहन सकते हैं। दूसरी जरूरी सुविधाएँ जुटा सकते हैं। अपनी पसंद का खाना खा सकते हैं और अपनी पसंद का काम-धंधा कर सकते हैं। एक काम अच्छा नहीं लगे तो कोई दूसरा काम खोज सकते हैं। किसी एक क्षेत्र में सफलता नहीं मिले तो कोई दूसरा क्षेत्र आजमा सकते हैं। कुछ करने की इच्छा रखने वालों के लिए आज पूरी दुनिया के दरवाजे खुले हुए हैं। एक पेड़ अथवा पौधे के पास अपनी स्थिति बेहतर बनाने का एक भी विकल्प नहीं होता। अपेक्षित सफलता मिलने तक हमारे पास अनेकानेक विकल्प उपलब्ध होते हैं। फिर भी हम परिस्थितियों के सामने घुटने टेक दें तो इसमें दोष परिस्थितियों का नहीं हमारा होता है। जब जीवन के लिए अनिवार्य मूलभूत सुविधाओं के अभाव के बावजूद दीवार पर लटका हुआ एक मामूली सा पौधा सालों तक डटा रह सकता है तो सुविधाओं और विकल्पों की भरमार के बावजूद हम क्यों नहीं ऐसा कर सकते?

संकट के समय हम किसी से मदद मांग सकते हैं। सरकार और समाज भी एक सीमा तक कमजोर व जरूरतमंदों की मदद के लिए तत्पर रहते हैं जिसका लाभ हम भी उठा सकते हैं। किसी से उधार लेकर काम चला सकते हैं। अपेक्षित तकनीकी जानकारी का अभाव है तो भी हम किसी विशेषज्ञ की सेवाएँ लेकर अपना कार्य सुचारू रूप से कर सकते हैं। शारीरिक दुर्बलता अथवा रुग्णता की स्थिति में हम अपना उपचार करवा सकते हैं। अपने आपको स्वस्थ रखने के लिए स्वास्थ्य के नियमों का पालन कर स्वयं अपने स्वास्थ्य को उत्तम बना सकते हैं। अपने व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास कर सकते हैं। हम संगठित होकर बड़े से बड़े कार्य सरलतापूर्वक कर सकते हैं। हम हर हाल में अपनी परिस्थितियों को बेहतर बनाने का प्रयास कर सकते हैं। हम अपनी रिहाइश अथवा कारोबार बदल सकते हैं। लेकिन पौधों के लिए ये कठिन ही नहीं असंभव है। जब एक पौधा अत्यंत विषम परिस्थितियों में भी अपने अस्तित्व को बचाए रख सकता है तो अनेक विकल्पों के बावजूद हम ऐसा क्यों नहीं कर सकते? परिस्थितियाँ चाहे कितनी भी विषम क्यों न हों हमें उनके सम्मुख हथियार डालने की बजाय डटे रहकर नए विकल्पों की तलाश में जुट जाना चाहिए।

सीताराम गुप्ता
ए.डी.-106-सी, पीतमपुरा,
दिल्ली-110034
फोन नं. 09555622323
srguptazy@yahoo.co.in

तस्वीर का रहस्य

हर्ष के स्कूल में नये प्रिंसिपल सर आए थे। उन्होंने कार्यभार ग्रहण करने के बाद अपने कक्ष को चारों तरफ से देखा। फिर एक दीवार पर खाली जगह को देखकर वे मन ही मन मुस्कुराये। कक्ष के बाहर सबसे पहले तो उन्होंने अपनी नेम प्लेट लगवायी। जिस पर लिखा था एसएन सिंह। यानी कि प्रिंसिपल सर का नाम था एसएन सिंह। थोड़ी ही देर बाद सिंह सर ने अपने कक्ष में उस दीवार की खाली जगह पर एक तस्वीर टाँगी। स्कूल के स्टाफ सदस्य उस तस्वीर को देखकर हैरान थे। क्योंकि सामान्य-सी उस ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीर में एक पुरानी सी साइकिल रिक्शा पर एक पाँच-छः साल का बच्चा पढ़ता हुआ दिखाया गया था। लेकिन उस तस्वीर के बारे में कोई उनसे पूछे, इतनी हिम्मत अभी किसी में नहीं थी।

प्रिंसिपल सर ने स्टाफ की मीटिंग लेने के बाद सभी कक्षा मॉनिटर्स को भी अपने कक्ष में बुलवाया। हर्ष भी नवीं कक्षा का मॉनिटर था। इसलिए उसे अपने नये प्रिंसिपल सिंह साहब से मिलने का अवसर मिल गया। हर्ष को भी प्रिंसिपल रूम में लगी अनोखी तस्वीर देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके दोस्त भी प्रिंसिपल सर की उस तस्वीर की चर्चा कर रहे थे। हर्ष के मन में इस तस्वीर का रहस्य जानने की इच्छा जाग्रत हो गयी।

एक दिन हर्ष ने अपने पापा से कहा, 'पापा..पापा हमारे स्कूल में एक नये प्रिंसिपल सर आए हैं। उन्होंने अपने कक्ष में एक अनोखी तस्वीर लगा रखी है।' 'कैसी तस्वीर हर्ष?' उसके पापा ने पूछा। इस पर हर्ष ने तस्वीर के बारे में सब कुछ बता दिया। उसके पापा ने काफी सोच-विचार करने के बाद कहा, ' बेटा प्रिंसिपल सर जैसे बड़े पद वाले आदमी ने कोई सामान्य सी तस्वीर लगायी है तो इसके पीछे कोई न कोई अच्छी बात जरूर होगी। वरना कौन ऐसा करता है।' हर्ष को पापा से भी तस्वीर के रहस्य का जवाब नहीं मिला था।

पाँच सितंबर के दिन हर्ष के स्कूल में शिक्षक दिवस समारोह का आयोजन था। स्कूल के विधार्थियों ने अपने स्कूल के टीचर्स का खूब मान-सम्मान किया। हर्ष से जब स्टेज पर अपने विचार रखने के लिए बुलाया गया तो उसने प्रिंसिपल सर की ओर देखते हुए कहा, ' प्रिंसिपल सर से मैं एक सवाल पूछना चाहता हूँ। सर अपनी मंजूरी दें तो।' सभागार में उपस्थित सभी यह सोचने लगे कि पता नहीं हर्ष सर से क्या सवाल पूछेगा। ' क्यों नहीं.. पूछो बेटा ...क्या पूछना चाहते हो?' प्रिंसिपल सर ने मुस्कुराते कहा। हर्ष ने पूछा, 'सर आपने अपने कक्ष में एक तस्वीर लगायी हुई है ... उस तस्वीर में एक पाँच वर्ष का बच्चा पुरानी सी साइकिल रिक्शा में बैठा पढ़ता दिखाई दे रहा है। इस तस्वीर का आपके कक्ष में लगाने का क्या कारण है?' हर्ष का ये सवाल सुनकर प्रिंसिपल सर कुछ पल के लिए चुप रहे। फिर उन्होंने कहा, 'बेटा हर्ष... तुमने ये प्रश्न पूछ कर वो हिम्मत का काम किया है जो अभी तक किसी ने नहीं किया है। मैं भी चाहता था कि कोई मुझसे इसके बारे में पूछे, और फिर मैं इसके पीछे की कहानी आप सब बच्चों को सुनाऊँ।' ' पीछे की कहानी..? हर्ष ने आश्चर्य से पूछा। प्रिंसिपल सर बोले, 'हाँ.. बेटा पीछे की कहानी। दरअसल ये तस्वीर मेरे बचपन की है। मेरे पिताजी एक साइकिल रिक्शा चलाते थे। वे मुझे पढ़ा-लिखा कर बड़ा आदमी बनाना चाहते थे। एक बार वे मुझे इसी स्कूल में दाखिला दिलाने लाए थे। लेकिन गरीबी के कारण मेरा दाखिला इस स्कूल में नहीं हुआ। थक-हार कर मेरे पिताजी ने म्युनिसिपल्टी के एक स्कूल में मुझे डाल दिया। मेरा परिवार शहर के बड़े से नाले के पास बनी झुग्गी में रहता था। हमारी झुग्गी ज्यादा बड़ी नहीं थी। इस कारण मुझे झुग्गी में पढ़ने की जगह नहीं मिलती थी, तब मैं अपने पिताजी जी के रिक्शे में बैठकर पढ़ाई किया करता था। उन्होंने बड़े कष्ट उठाकर मुझे पढ़ाया-लिखाया और इस काबिल बनाया कि मैं आज आप के सामने उसी स्कूल में प्रिंसिपल बनकर आया हूँ जिसमें कभी मुझे दाखिला नहीं मिला था।' 'आप अपने कक्ष में इसे क्यों लगाते हैं?' हर्ष ने पूछा। प्रिंसिपल सर ने जवाब दिया -'बेटा यह तस्वीर मुझे अपने अतीत की याद दिलाती है और निरंतर मेहनत करने की प्रेरणा देती है। इसे मैं जब देखता हूँ तो मेरे पिताजी की वो पुरानी रिक्शा याद आती है जिसकी कमाई से मैं इतना बड़ा हुआ हूँ । जीवन में आदमी कितना ही बड़ा क्यों न हो जाए, उसे अपने पुराने दिन याद रखने चाहिए।' ये सुनकर विद्यालय का सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। हर्ष के साथ-साथ अब सारे स्कूल को साधारण सी लगने वाली तस्वीर का असाधारण रहस्य पता चल चुका था।

-गोविंद भारद्वाज
प्रधानाचार्य

2020

अप्रैल व मई माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 अप्रैल- एप्रिल फूल
2 अप्रैल- रामनवमी
5 अप्रैल- भारतीय राष्ट्रीय समृद्धी दिवस
6 अप्रैल- महावीर जयंती
7 अप्रैल- विश्व स्वास्थ्य दिवस
10 अप्रैल- गुड फ्राइडे
14 अप्रैल- डॉ बी.आर.अम्बेडकर जयन्ती
22 अप्रैल- विश्व पृथ्वी दिवस
23 अप्रैल- विश्व पुस्तक दिवस
25 अप्रैल- परशुराम जयंती
29 अप्रैल- अन्तरराष्ट्रीय नृत्य दिवस
1 मई- अंतरराष्ट्रीय श्रम दिवस
3 मई- विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस
7 मई- बुद्ध पूर्णिमा
8 मई- विश्व रेडक्रॉस दिवस
11 मई- राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस
12 मई- अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस
15 मई- अंतरराष्ट्रीय परिवार दिवस
21 मई-आतंकवाद विरोधी दिवस
23 मई- विश्व कछुआ दिवस
25 मई- ईद-उल-फितर
26 मई- गुरु अर्जुन देव शहीदी दिवस
31 मई- विश्व तंबाकू निषेध दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Covid-19: Online classes and the digital divide

Abhiroop Mukhopadhyay

As the Covid-19 infections rise in India, there is justified pressure to keep universities closed. Online teaching is something many institutions are contemplating, but do the Indian students have the network bandwidth for online learning? In this post, Abhiroop Mukhopadhyay argues that internet access at home is pitifully low in India, with 'day scholar' students, particularly those whose households belong to rural India, having the worst home internet access problems. Online teaching is therefore a non-starter for most institutes.

The fear of Covid-19 outbreak has shut down schools and universities in India. Online teaching is something many institutions are contemplating, but do the Indian students have the bandwidth for online learning? Preliminary data analysis indicates that online teaching is a non-starter for most students and institutions in India!

'Don't worry, Zoom into their lives with online classes!' This has been the war cry of many a university during the current lockdown. Most Deans look hopefully at an online solution to the unexpected advent of Covid-19. The thought that nags all is that while it would be fairly easy to connect to one set of students, reaching others through the internet would be tough. Then, not only would pedagogy be compromised, but the inequity in terms of what one can deliver to students becomes glaring: a digital divide that is evident in teaching resources that a student has access to. That many public institutions have not even tried the online option point to such problems is becoming a source of real worry to administrators.

The matter is not so clear cut: while inequality of access to anything is ubiquitous in India, most students who reach tertiary institutions in India are likely to be a selected group of people, often the most privileged among their respective social groups. Perhaps it is possible to reach these students through the internet. But what are the facts?

Difference between at-home and in-general access to internet

According to data collected by the National Sample Survey as a part of the Survey on Education (2014), only 27% of households in India have some member with access to internet. Access to internet does not necessarily mean that a household actually has internet at home. In fact, only half of the households (47%) that have any access to internet own a computing device (including a smartphone). While direct estimates on how many households have internet access at home are hard to get, one can make a rough estimate by assuming that those who have internet at home report some internet access in general, and report possession of a device that can be used to go on the web. Using this definition, only 12.5% of the households of students

in India have internet access at home. There is an urban-rural divide: 27% have access in urban areas and only 5% in rural areas. Given the current crises, this does not auger well for holding online classes for students who have gone back home. It is perhaps this view that makes people apprehensive about online classes.

The distinction between home and in-general access to internet is important during these times. The gap opens up starkly for some states of India. While 51% of rural households in Kerala have access to the internet through a myriad of sources, only 23% of rural households have access at home; the difference is even starker for states like Andhra Pradesh where 30% of rural households in Andhra Pradesh have access to internet but only 2% are likely to have access at home. In states like West Bengal and Bihar, which traditionally have a large number of migrant students, only 7-8% of rural households have any to access to internet; the proportion that have access at home being a miniscule number. Differences in internet access among urban households across states of India are less stark; however, that internet access at home can still be serious constraint among urban households is apparent as states like Bihar and West Bengal have only 18 and 21% (respectively) of urban households who can access the web at home.

As pointed out above, an argument can be made that students in tertiary education are a selected group, hence their connectivity at home may be much better. Around 85% of children who belong to urban households and study in universities have access to the internet, but only 41% are likely to have access at home; among children from rural households, there is internet access at home for only 28% of them. Such low access is a big worry as 55% of children studying in universities are from rural households. Thus online teaching to such children through the internet would rule out teaching to a large proportion of children in rural

India.

Many universities and institutes in this country have residential programmes. Almost 5 million students – constituting 15% of all university-level students – live away from their homes. A substantial chunk of them (55%) are from rural households. The current crisis has meant that hostels have been evacuated and students have been asked to go back home. These students are one of the primary prospective recipients of online teaching. These students are indeed a more selected lot but almost 48% of them do not have internet access at home. Only 42% of students who reside in rural areas have home access to the web, while 69% of such students who reside in urban areas can get online from home.

Reason for low home internet access

Among rural households, the problem seems to be ownership of devices as more than half of the households of such children do not own a smartphone or computer. This problem is less severe among urban households, as 71% of such households do own devices, so the constraint there comes from access to an internet connection.

The higher home internet access for students who stay in hostels relative to the overall access among all university students (reported above), imply that the group that in fact has the worst home internet access problems are 'day scholar' students, especially those whose households belong to rural India. How does one connect to such day scholars? While it is not clear whether they travel to cities for studying, at least 30% of such people with no home internet access in rural areas study in institutions that are more than 5 km away from their homes.

What needs to be done if universities remain closed for long?

To conclude, internet access at home is pitifully low in India. This is a combination of low internet coverage in India as well as the fact that many households do not own smartphones that can get them on the internet. As the Covid-19 infections rise in India, and there is justified pressure to keep universities closed, one must be mindful of these numbers when suggesting online teaching. While the long-term strategies may involve increasing ethernet connectivity, or subsidising data on mobiles, it would seem that device ownership is as much a worry, especially for children coming from rural places. If universities remain closed for a long time, it is important for the universities to subsidise cheap smartphones for students to get on with the business of teaching. This is in addition to any subsidies that need to be paid for bandwidth (assuming that it is a surmountable problem). Without such help, online teaching is a non-starter for most institutes of India.

Indian Statistical Institute, Delhi Centre
abhiroop@isid.ac.in

World Book and Copyright Day

Dr. Shivani Kaushik

Books are our best friends. We learn a lot from them. Books have the unique ability both to entertain and to teach. Good books tone up our intellectual taste. They remove our ignorance and add to our knowledge. They enrich our experience and sharpen our intellect. 23rd April is celebrated as World Book and Copyright Day, also known as World Book Day by the United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization (UNESCO) to promote reading, publishing and copyright. The first World Book Day was celebrated in 1995. This date, 23rd April, was decided by UNESCO as it is the anniversary of death of great writers like Miguel de Cervantes, William Shakespeare and Inca Garcilasco de la Vega.

World Book and Copyright Day is celebrated worldwide to recognise the scope of books as a link between the past and the future, along with being a cultural and generational bridge. The day has become a platform for people across the globe, especially the stakeholders of the literary world including authors, publishers, teachers, librarians, public and private institutions, NGOs and the mass media to come together to promote literacy and help everyone get access to educational resources. Each year, UNESCO and other international organizations representing the three major sectors of the book industry - publishers, booksellers and libraries, select the World Book Capital for a one-year period, effective from 23rd April each year. The city of Kuala Lumpur in Malaysia was selected as the World Book Capital for 2020 because of the strong focus on inclusive education, the development of a knowledge-based society and accessible reading for all parts of the city's population. With the slogan- Caring through reading- the program focuses on four themes: reading in all its forms, development of the book industry, infrastructure, inclusiveness and digital accessibility and empowerment of children through reading.

Numerous events are organized on this day every year but in 2020, due to the COVID-19 virus, the events are cancelled. The educational institutions are closed and the people are staying at home. It is the time when the power of books can be used to its maximum advantage to combat isolation, expand horizons and creativity. It is a time to help children grow as readers. A lot of good books are available on the internet. The Central and State Governments are also putting in a lot of efforts to make their books and content available online for students. The teachers are also sharing their lectures and other resource material with students through the internet. We all must maintain a positive attitude in this difficult time which can be done only with the help of books.

Subject Expert
SCERT Haryana
Source: en.unesco.org

STAYCATION

"Going nowhere, staying home is the grand adventure that adds meaning to everything else"

Smt. RUPAM JHA

We all have fond memories of vacations. As children we would yearn for summer holidays as it would give us a chance to visit our grandparents in their native village or hometowns. What with luscious mangoes, litchis, watermelons and musk melons and of course meeting our cousins. Society progressed and villages and hometowns were replaced by British built hill stations, adventure sports and exotic resorts. Foreign shores have always been special for the Indian traveler and the next new holiday destination was that.

But in this rigmarole of travel and sightseeing what hid behind the closet was the charm of staying at home. Bringing that charm back to us is the word Staycation, when you stay back at home for your destination holiday.

Oh how I long for the old world charm of staying at home. There is creativity in me just bursting to come out. Where is my easel? My paint brushes want to tango on the canvas. The myriad hues which I have captured in my mind during my wanderlust of travel are being reflected on my paintings. I cannot contain my creativity to the canvas alone, there are glass panes, even walls and of course tee shirts and mugs to be painted. Plus best out of waste activities like painting old jars to make them into flower vases.

In this epoch and era, can technology not be by our side. Online classes on how to play the guitar or some dance steps can be learnt. Hey! Wait, exercise and blood circulation is important so let us sign up for some yoga, some zumba. Make videos of the same with yourselves as the star performers, share with friends. They will thank you for innovative ideas of the exercise regime.

Let's play Scrabble on the internet. This way, we not only enhance our communication skills, language skills but we are also able to connect with friends. Ludo, an all time favourite can also be played. All this without venturing out in the heat. A web party can follow, I am sipping my homemade lemonade but I see my friend is gulping down cold coffee.

Culinary skills have remained unexplored so far. Wait, do not order in, just DIY(do it yourself) . Seeking solace in YouTube, one looks up an easy way to toss up pasta. A smoothie accompanies it. Sprouts too are a healthy option and not difficult at all. But it sure requires patience. Grandma's recipes and slow cooking is next on the anvil. The dilemma follows, can I do it or not . Hey! Wait a second; I am granny's favourite, so I can do it.

Play safe, an inner voice tells me. I do listen and make some lip smacking aloochaat, I will let you into a dark secret, Mom contributes in terms of chutneys, whipping, churning and allied ingredients. I do assemble and plate up. Whew! That was a close shave. Now I am back to baking and preparing hung curd sandwiches.

Can anyone keep us away from the outdoors, what to do? I know, we can try our hand at gardening. Herbs are what are being talked of, so a herbal garden it shall be. We can start with basics such as aloevera, curry patta and bryophyllum. Small offshoots of the mother plant can be used. Wheat grass, coriander and mint follow suit. Wheat grains and coriander seeds are used and so are sprigs of mint. Never forget to water your green friends daily. Cut an onion into six pieces and place it in a jar, watch with amazement as spring onions emerge. We add to our vocabulary two new words, aeroponics and hydroponics. Do use Google to find out more about them.

Micro green is a fairly new and easy concept in kitchen gardening. Use one of the takeaway boxes, make a hole in it, fill some soil and plant some edible seeds. Keep it in a damp area of your kitchen and see the greenery grow from flax seeds, carrot and pumpkin seeds, full of nutrients and waiting to be devoured by you.

A virtual library as a companion for long, lazy afternoons. Concerts by international and local singers, games on Whatsapp, all go to fill our days in human company from the safe confines of our homes.

All the above mentioned fun filled activities have been suggested by experts to be part of the Lockdown Dairies of students. This way they are meaningfully engaged and learn along the way.

"Reading gives us someplace to go when we have to stay where we are"

Subject Expert
SCERT Haryana

Mental Health Of Children In Coronavirus Lockdown

Poonam Yadav

With schools shut due to the corona virus pandemic, children have seen their usual routines disrupted and are separated from their peer groups.

There is no recreational outlet for the children either. This has led many of them to feel more cut off from their friends and having no outlet to release all their physical energy or just play.

Amongst the constant negative news of the pandemic worldwide, we have been grappling with an increase in the number of cases of anxiety, depression, phobias and stress among the youth. Children with existing mental health concerns such as anxiety, panic attacks, obsessive-compulsive disorder or attention deficit hyperactivity disorder are more vulnerable to developing new symptoms or worsening of existing emotional or psychological concerns. \

WARNING SIGNALS OF MENTAL HEALTH CONCERNS IN CHILDREN

Parents should be alert and recognise the red flags or warning signals for mental health concerns in their children. They can be as follows-

- Persistent low or irritable moods
- Feeling overwhelmed all the time with hypersensitivity or crying spells.
- Lack or loss of interest in almost everything.
- Persistent negative or fearful thoughts with helplessness, hopelessness or worthlessness
- Ruminating, obsessive thoughts, images or feelings that cannot be blocked which are disturbing in nature.
- Repetitive behaviour or rituals that cannot be controlled
- Anxiety symptoms with restlessness, feeling on edge all the time, breathlessness, palpitations or nausea.
- Changes in eating or sleeping patterns with disturbed sleep or nightmares.

- Lethargy, fatigue and inability to concentrate and focus.
- -Multiple somatic or physical symptoms with no real medical reasons, such as headaches, backaches, dizziness, blurring of vision, joint pains etc.
- Social withdrawal and addiction to screen time or social media.

HOW CAN WE HELP?

Parents can do much to support children with mental health issues who are more likely to suffer from the effects of the lockdown than others.

1. Reassure children that this is a temporary phase and that it is a beautiful way to spend precious quality time with their parents and family members, who are otherwise busy with office or work in general.
2. Explain to them that social distancing is the best way to curb the virus from spreading and affecting people that they love. They need to understand that this is a worldwide phenomenon that's never happened before and that everyone is in this together around the globe.
3. Establish the importance of collective responsibility at home. This will help them feel that they are doing something important and meaningful for a larger outcome and will not feel isolated or alone.
4. Help them stay connected with family members, relatives and friends through various mediums such as video calls, online chats, social media or simple telephonic conversations.
5. Do ensure that screen time is restricted and that they do not get addicted to any form of television watching, social media or gaming.
6. Restrain and restrict disturbing news through the TV, articles, WhatsApp group and be mindful of the conversations that we have around them
7. Help them verbalise their fears and anxieties with regards to what is happening so that all their doubts or unrealistic, irrational thoughts are negated and questions are logically answered.
8. Set up a routine and schedule for children at home for online schoolwork, playtime, self-studies or recreational activities such as board games, music, screen time, hobbies or cooking and other household help.
9. Bring about creativity and humour to make this difficult situation a memorable and pleasant one for them.

We're all in this for the first time, and we're all learning. You can let your kids know that, with all honesty, COVID-19 will not last forever. We are all in this together.

Subject Expert
SCERT Haryana

Cultivating Adaptability: Pandemic Coping Skill

Dr. Himanshu Garg

"Progress is impossible without change, and those who cannot change their minds cannot change anything".— George Bernard Shaw

The Corona virus pandemic has brought chaos to lives and economies around the world. Especially Education sector also has been affected a lot. There are negative vibrations all over the world due to this pandemic. Complete Lockdown affected our normal daily routine. We, in the first few weeks of lockdown were feeling low and tearful. We had plenty of time to do anything we want but we were surrounded by boredom every time. We could not imagine our life in this type of situation. All had a long list of questions in mind. We all were so worried because our life stopped with a back gear suddenly. This was normal adaptation Phase. Nobody accept change easily. It's human common nature. We forgot that we are living in the era where we have plenty of resources. It's just a magic of our mind that could give satisfaction in this terrible situation.

Now a days, we are doing all the work from home, students have continued their studies from home. We are experiencing a completely new mode of work and learning new skills. Even a number of organizations, colleges,

and schools are conducting online competitions i.e. Quiz, poster making, slogan writing, rangoli, essay writing and many more to enhance students' skills. Doordarshan retelecasted a number of old programmes i.e. Ramayan, Mahabharata, Shaktimaan etc. for all age groups to learn moral values from those serials.

Our hobbies changed with age, lifestyle or situation. After few weeks of lockdown, we realised, it's the perfect time to take-up new hobbies as well as to rediscover old hobbies that took a backseat due to the paucity of time or lifestyle. In this time of social distancing, we have enough time for the long lost hobbies that can be painting, singing, dancing, instrument playing, cooking, book reading, gardening etc. They can be your escape from boredom, stagnation and stress. Recalling old memories by watching wedding videos and albums are also a good option. We have found ways to earn, to enjoy, to live well in this situation. Grandparents are happy as they are surrounded by their children and grand children all the time. Ladies are learning new recipes from YouTube and busy in trying and sharing those dishes. Working women feeling cheerful as they are spending quality time with their family. Students are also feeling glad as there is no restriction to wake up early and no bulky bags. They can do their homework with their own schedule. Now we all completely adapted this schedule. In fact, we have no spare time to waste.

This lockdown taught us many lessons. But the most important one is how to adjust even with the worst situation and how to adapt new schedule comfortably. Change can come into our lives as a result of a crisis, as a result of choice or just by chance. We cannot avoid the situations. Life cannot stop for any sake. The more we resist change the tougher our life becomes. Now we adapted this lockdown situation completed, but remember soon everything will be fine and again we will face change. This change will backtrack our life to the normal situation. We will again find hard to accept that change. So understand this circle of nature and adapt to that situation too. The earlier we adapt to the situation, the happier we are. So be a real soldier of the nation just by spending quality Lockdown time at home.

<himanshujind@yahoo.com>

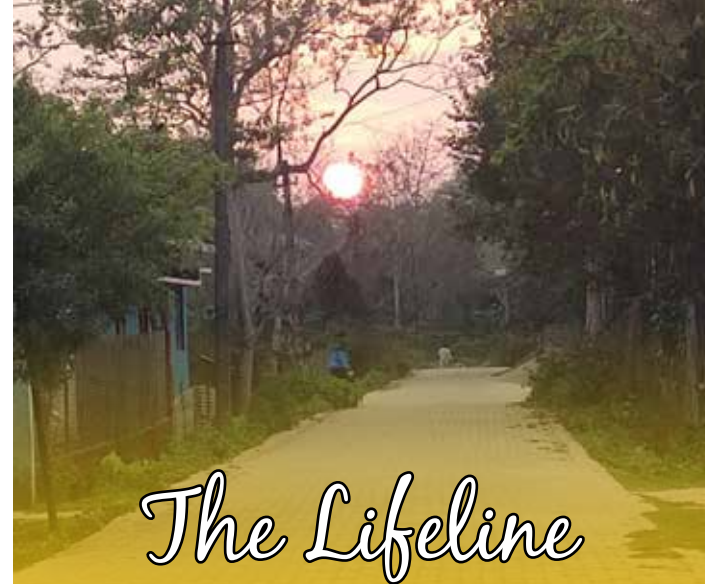

The Lifeline

I stand alone, on the dreary land,
Battling with my own fear,
Seeing happiness running away from the world,
With not a soul with joy or cheer

I stand alone, on the dreary land,
Knowing to myself, being fully aware,
This life of mine will come to an end,
And it's nothing, but a nightmare

I stand alone, on the dreary land,
Imagining my wonderful past,
Now here I am, standing alone,
Seeing your cruelty, being aghast.

I stand alone, on the dreary land,
Where once I stood blissfully,
Where once I had dozen admirers,
Where once I stood with dignity

I stand alone, on the dreary land,
Where once wind floated nonchalantly,
Where once I had, my own friends,
And where rain poured endearingly.

I stand alone, on the dreary land,
Watching you, wistfully,
Coz you are the one, who made me friendless,
Who killed my companions viciously.

Oh humans! Open your eyes,
Look up to me and see
I am your lifeline and your only hope
Yes, I am a tree.

Shabih Fatima
VIII-A
Ahlcon Intl. School.

The Magic of a Heartbeat

I gave you a gift
The secret of birth
The breath of life
To enjoy your time on Earth

The solid ground to hold you up
The soft grass to cushion your fall
The gentle breeze to caress your cheek
And swaying trees to shade the sun
The wide, wide ocean for some fun.
Yet, you forgot it all
When you stood tall.
Taller than you, were the buildings you raised
Mushrooming in a concrete maze
You entertained life in brazen ways.
You closed every nook, cranny and crevice
The sky cried tears of acid rain
To reach Earth Mother, but in vain.
You drove a hard bargain
Hacksaws into green limbs
Steely teeth, bite for bite
As you destroyed Mother Earth's might.

You sold Earth's children like market ware
The trees of the rain forest you dared to bare
Out to the highest bidder, you screamed from your lungs
To whoever you deemed fitter.

Your body, you sculpted like an Adonis
Without a thought for what was amiss
Oh, what pride for a few moments of adulation and bliss.
Your children cried but you had no time
Quietened their uproar with a dime
Lulled their senses to sleep
Just as you were in it, too deep.

Mother Nature watched with a beneficent gaze
You stifled her breath with pollution and haze
Spewing your ambitions in fire and fume
Oh, so proud to add to your plume
Mother Nature was so doomed.

So she gave you a gift
Of a different kind
To bring you back to the right frame of mind
In that stillness, in that loss of time
You may know again the magic of a heartbeat
The value of life
Which you had lost in ambition and strife.

By Purobi Menon

Quarantine Times

What to do to kill the time
How to perform life's mime
The four walls I am between
How to pass the quarantine?

I don't watch the clock anymore
I don't open my doors anymore
No longer I remember the routine
How to pass the quarantine?

The screen of the TV of got me bored
No more books excited to be on board
Read all of them; watched every scene
How to pass the quarantine?

Sleep is more but dreams are none
Mirror says," He's not the one!"
Just lower and t-shirt; no suit or jean
How to pass the quarantine?

Now are known the rates of the thing
When you don't know much of cooking
How to cook and cook what cuisine
How to pass the quarantine?

Stairs, terrace, balcony and window
Corners of home where else to go
The grass was never that green
How to pass the quarantine?

Chirping of birds, space for beast
Cooler the breeze; purer the feast
The air has been never that clean
How to pass the quarantine?

Wallets got lighter, weights gained
All contributing, none complained
In such times, we mustn't get mean
How to pass the quarantine?

Rajan Batheja

'Life teaches us to make good use of time, while time teaches us the value of life'

Nirmal Gulia

A mindset for this moment: a great time of self-reflection for educators

Planned and Purposeful Self- reflection, a Practical Approach, can be informative, generative and at its most powerful and transformative.

'We don't learn from experience-we learn from reflecting an experience'-John Dewey

Effective teachers are first to admit that no matter how a good lesson is their practice can always be improved. Self -reflection allows teachers to move from just experiencing into understanding which they often feel helpless due to lack of adequate time. A teacher's quality to reflect on what, why and how they do things; and to adopt and develop their excellence in teaching is the one quality above all that makes them really good. When teachers take time to analyse and discuss the activities in their classrooms from a distance, they can identify more than just what worked and what didn't. They are able to look at the underlying principles and beliefs that define the way that they work. This kind of self -awareness is a powerful ally for a teacher in improving teaching strategies and enhancing learner centered teaching.

There are a few avenues l would encourage you to explore:

Spend time talking to your colleagues about your findings and ask them about their suggestions. They may have the same issue in their classrooms and can offer you some ideas on how do things differently. Obviously it creates an environment of collaboration, teachers can team-up, drawing an experiences helps in developing the best practices in schools and classrooms. Besides that they may go online and read up on effective techniques as Chalk lit App, Diksha App, LEP pedagogy or other learning Apps. It may open up new perspectives and techniques that you had not considered before.

The ultimate goal of self-reflection and profitable utilization of the present time is to gain the insight you need to take your instruction to the proverbial next level as the next class rolls around, you'll have a much better wider Toolkit that can gauge your understanding.

Thoughts and actions must be transmitted and received for better learning.

Let's be the active participant and keen observer to make the campaign a success' -Ghar se Padhao.

Lecturer in English
Diet, Machhrauli, Jhajjar
(Haryana)

Help someone when they need it : ethics are at forefront

Pawan Kumar

Now-a-days the world is facing a global pandemic with enormous personal, societal and economic consequences that are unprecedented in the last decades. The novel corona virus, SARS-Cov-2, and the associated disease COVID-19, has attacked countless individuals in more than 173 countries and territories worldwide, India is one of them.

'We all are one'

This exactly what I have observed, feel and realize while rushing around for others' happiness. My conception on ethics, morality seems to fall flat before the dispositions of people, doing the right thing at the right place in the right time. Our actions indeed are the sole medium of expression of our attitude and behaviour. I'm compelled to think that Ethics can give real and practical guidance to our lives - honesty, trustworthiness, responsibility guide us along a pathway to deal more effectively with ethical dilemmas by eliminating those behaviours that do not confirm to our sense of right and wrong, the goal is to determine-what is good, both for the individual and the society as a whole.

Salute to all the corona warriors whose only root concept is to work for the welfare of humanity & its values. Our doctors, nurses, paramedical personnel, cleaners and Police personnel. A government for the People must depend for its success on the intelligence, the morality, the justice and the interest of the People themselves.

We can make a real difference by following the instructions, showing acts of kindness and offering our time to those that are in dire need.

Strength is built when strength is tested.

Teachers are helping the students from home and persons who are volunteering and involved for the sake of humanity providing shelter, food and protective equipments to the needy, besides the commendable work by the Government.

A man does what he must that is the lesson of today's time as Ethics and equity do not change with the calendar.

(JBT Teacher)
Government Model Sanskriti,
Senior Secondary School, Ladain
(Jhajjar)

Humans in a cage: the Earth rejoices

Rakesh Agrawal

Crystal clear water in the world famous canals of Venice, with dolphins having fun in it.

Azure sky almost all over the world, that was never so blue before that the sparking chain of snowy mountain peaks appeared like a garland around it.

Blue, green, yellow, orange and rainbow-colored birds were flying high in that blue sky without any fear of artificial, metallic birds.

So were the flowers spreading a tapestry of dreams on the green carpet, surrounded by tall conifers, pines and deodars.

People in Nara, Japan reported seeing deer that usually stay in the park roam out onto the streets.

Whales were spotted in Bombay High, Arabian Sea off Mumbai Coast, India.

The Yamuna water quality improved in Delhi, so did the sacred Ganges in the holy city of Banaras!

Our Earth, a sub-atomic particle of the fathomless universe, rather universes, the only place hitherto known to humankind, having life, was finally breathing.

Indeed living.

After having faced the onslaught on its resources by a single species, albeit the most developed, the most evolved, the most ingenious and innovative and also the most self-centered and most cunning, one among the millions, this Blue Dot houses.It could tolerate no more and decided to strike back when the most primitive one, not even a life, but a link between the living and non-living struck and struck hard, so hard that this species forget to run, fly and swim; got confined within the boundaries of concrete, mud, tin and thatch, called homes, very much like animals it loves to keep on the wooden and iron jails, rechristens as the cage!

The Earth is taking a sigh of relief and appears to be on a strike for the much-needed repairs.

With the humans remaining confined to their cages, their homes divided into 200 holes holding with the locks of passports and visas, suddenly started becoming one with these iron rods started melting away like the sticks of lac.

It is anything, but an enemy as it has no guns, leave aside the weapons of mass destruction that these 'apostles' of peace posses, enough to obliterate this Blue Dot many times.

But, this miniscule Blue Dot couldn't take any longer and declared a strike to teach us a lesson.

The trillion dollar question is: will, we, the Homo sapiens, would learn any lesson from this pandemic and fundamentally alter our ways of living and be just a guest along with other species on this Blue Dot?

Remorsefully, the answer is a resounding no!

Human grit and determination, coupled with an extremely innovative

acumen, would soon, maybe, within a year, would develop a vaccine and declare a victory over the enemy.

The entire world media is just engaged in disusing the spread of the pandemic, its impacts and efforts to win this war. But, no one is dissecting the reasons behind it, what policies and actions are responsible for it, lessons learnt and strategies to avoid the repeat of any such pandemic in future.

This wasn't the first pandemic to face the humankind and won't be last either. Just a little over hundred years, at the end of the World War I, the world saw Spanish Flu, lasting from 1918 to 20, killing over 50 million people, but neither it could stop the World War II, nor dropping of Little Boy and Fat Man over Hiroshima and Nagasaki.

Same was the story of SARS in this millennium: 2002-04 & Swine Flu of 2009. Manufacturing and selling arms, including the weapons mass destruction remains a big business. So does destroying natural resources.

Since the mantra of human success is to earn the profit, measured in dollars, Euros, yen and rupees.

This would be just a hollowed dream to think that this mantra would change into empathy and coexistence, although one must hope that the post-corona world would be more sympatric not just to the fellow citizens and shed the caste, class, race and religious prejudices against the fellow citizens, but also to the life per se and wouldn't be as blind with religiosity as before, but would be lightened with the inner light of spirituality.

It can be safely said that all non-human species and nature is enjoying the freedom from the clutches of humans at the moment, that would be just short lived, but there is no harm in day-dreaming!

agrawal.ri@gmail.com

The Other Side

A piece of sunlight
Dry, piercing, poisonous
Slanting
Fallen on his home
That became illuminated
With hope.
Desire.
Trust.

Hope to get a day
A day of full stomachs
A day of quenched thirst
A day of blissful sleep
A day of peace
A day of dreams
A day of desire
A day of trust.

Millions of tired feet
Broken spirits
Shattered souls
Limping on the melted, blacken roads
Sitting at the altar of hunger
Facing crematories
Crematories of concrete
Cement, mud and sludge
Trying to reach on the other side
Of oblivion
Before the bells ring

Flashlights on their blackened faces
Lamps light their black sky
Where no piece of sunlight
Dry, piercing, poisonous
Slanting
Dares to illuminate
Their part of
The blacked sky
On a bright afternoon.

Rakesh Agarwal

Amazing Facts

1. The Mona Lisa has no eyebrows.
2. Hot water will turn into ice faster than cold water.
3. The sentence, “The quick brown fox jumps over the lazy dog” uses every letter in the English language.
4. The strongest muscle in the body is the tongue.
5. Ants never sleep!
6. “I Am” is the shortest complete sentence in the English language.
7. Coca-Cola was originally green.
8. When the moon is directly overhead, you will weigh slightly less.
9. Camels have three eyelids to protect themselves from the blowing desert sand.
10. There are only two words in the English language that have all five vowels in order: “abstemious” and “facetious.”
11. The name of all the continents end with the same letter that they start with.
12. TYPEWRITER is the longest word that can be made using the letters only on one row of the keyboard.
13. Minus 40 degrees Celsius is exactly the same as minus 40 degrees Fahrenheit.
14. The Guinness Book of Records holds the record for being the book most often stolen from Public Libraries.
15. People say "Bless you" when you sneeze because when you sneeze, your heart stops for a millisecond.
16. It is physically impossible for pigs to look up into the sky
17. The "sixth sick sheik's sixth sheep's sick" is said to be the toughest tongue twister in the English language.
18. “Rhythm” is the longest English word without a vowel.
19. Like fingerprints, everyone's tongue print is different.
20. If you sneeze too hard, you can fracture a rib. If you try to suppress a sneeze, you can rupture a blood vessel in your head or neck and die.
21. Each king in a deck of playing cards represents great king from history.
    Spades - King David
    Clubs - Alexander the Great,
    Hearts - Charlemagne
    Diamonds - Julius Caesar.
22. It is impossible to lick your elbow.
23. 111,111,111 x 111,111,111 = 12,345,678,987,654,321
24. If a statue of a person in the park on a horse has both front legs in the air, the person died in battle.
    If the horse has one front leg in the air, the person died as a result of wounds received in battle.
    If the horse has a all four legs on the ground, the person died of natural causes.
25. What do bullet proof vests, fire escapes, windshield wipers and laser printers all have in common? - All invented by women.
26. This is the only food that doesn't spoil. What is this? - Honey.
27. A crocodile cannot stick its tongue out.
28. A snail can sleep for three years.
29. All polar bears are left handed.
30. Butterflies taste with their feet.

www.greatfacts.com/

The Unseen

I see them now everywhere,
Once invisible spokes of factories.
It was decreed, stay off streets safe at home.
But ousted by tenant's greed; streets became their home.

They built our cities with blood and sweat.
But we built them out with walls instead.
They looked up to us as we locked down,
But we locked them out and let them down.

We worried about our rotis being round,
While in circles for food they wandered around.
We exchanged recipes and book PDFs,
But we failed in food security and PDS.

We worried about getting cakes and exotic fruits.
While the fruits of the loom lay wasted and brute.
We exchanged music tracks of Rock and Metal.
While they slept forever on rocky railway tracks of metal.

In the skies I hear their cries of grief,
Even the evil Covid wind brings no relief.
Lining side walks like scraggly hedges.
In the melting tarmac of time their footprints etched.

I see them now everywhere,
With every cough and sneeze,
I fear this stealthy, uneasy breeze.
That blows right under our noses undiagnosed.

Seeing the deluge flow across our lands we shruged our shoulders.
Dashed them like sea foam against harsh craggly boulders.
Dumped them like garbage across borders without any norms,
Even nature revolted with untimely hailstorms.

Our houses we sealed and sanitised,
But we sprayed them like parasites.
We locked ourselves in cosy cages at home.
But left them out with wild animals to roam.

We worried about our morning walks,
While miserable marathon miles they walked.
Carrying children and aged on their bony hips,
Wounded hearts and dry parched lips.

Meagre belongings bundled on their heads.
Starving, exhausted some dropped dead.
Crushed, they left the cities never to return.
Life's blast furnace burned them to ashes in urns.

But i see them now everywhere,
As shattered dreams turn into nightmares.
They refuse to return; only their poor dead would dare,
To haunt our dreary, bare warehouses.

- by Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

आदरणीय संपादक जी,
नमस्कार।
'शिक्षा सारथी' का गतांक पढने का अवसर मिला। पढ़ कर मन गदगद हो गया। यह अंक असीम ज्ञानवर्धक व रोचक पाठ्य सामग्री से भरा हुआ है। मैं 'शिक्षा सारथी' के सम्पादक-मंडल को रोचक अंक के लिए बधाई देता हूँ और इस बात की खूब प्रशंसा भी करता हूँ कि आपको रोचक एवं ज्ञानवर्धक लेख चयन करने में महारत हासिल है। इस अंक में अभिव्यक्ति और माध्यम के प्रायोगिक आयाम बहुत ही सराहनीय लगे। भाषा शिक्षण पर शिक्षकों का नजरिया भी उम्दा लेख लगा। अंक में राष्ट्रीय भाषा हिन्दी के सम्मान में लिखा हुआ लेख भी प्रशंसनीय था। अंक में छोटी-छोटी कहानियाँ व कविताएँ भी बेहद रोचक थीं। पूरा अंक पढ़ने के बाद ऐसा प्रतीत हुआ कि वास्तव में ही 'शिक्षा सारथी' बेहद रोचक और ज्ञानवर्धक है। पत्रिका के भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ और सम्पादक को बहुत-बहुत बधाई।

दलबीर मलिक
एलिमेंटरी स्कूल हैडमास्टर
राजकीय माध्यमिक विद्यालय झिवंरहेडी-1
कुरुक्षेत्र

आदरणीय संपादक महोदय,
सप्रेम नमस्कार।
जनवरी-फरवरी के अंक में प्रकाशित 'भाषा शिक्षण पर शिक्षकों का नज़रिया' सारगर्भित लेख था। अनुभवी शिक्षकों द्वारा लिखा गया, अलग-अलग बिन्दुओं पर गहन अध्ययन का परिणाम था। यदि सभी अध्यापक अपने बच्चों को यूँ बारीकियाँ समझाएँ तो निःसंदेह भाषा दिवस, हिंदी भाषा दिवस मनाना सार्थक होगा। समर्पित अध्यापक साथियों को नमन।

श्याम लाल धानीया
प्राथमिक शिक्षक
हाँसी-1

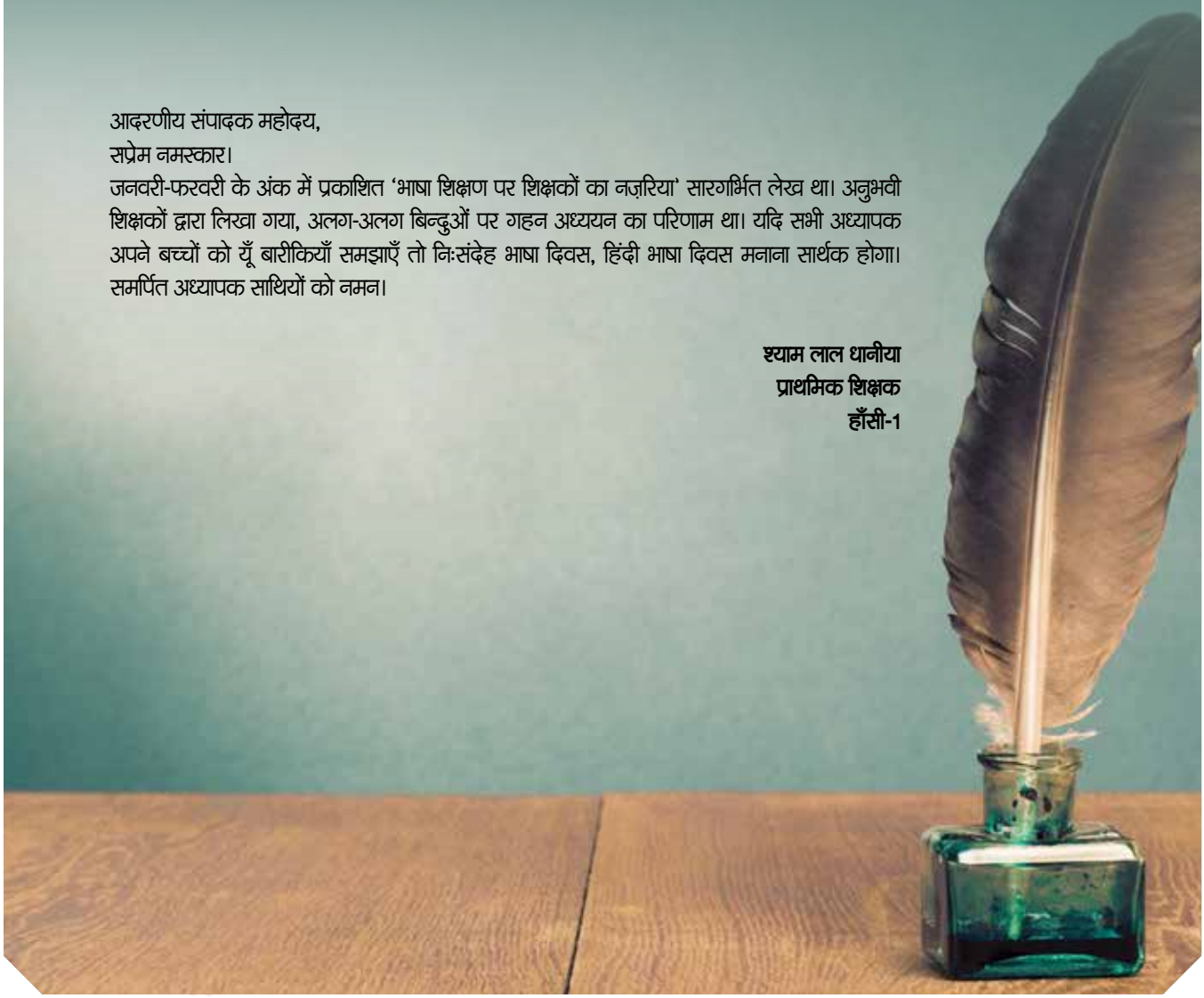

सबसे मिलिए प्रेम से

सबसे मिलिए प्रेम से, लब पर ले मुस्कान।
सच्चे मानव की यही, होती है पहचान।।

शूल लगे जब पाँव में, लेना स्वयं निकाल।
और निकालेंगे अगर, सौदा हो तत्काल।।

सेवा करना सीखिए, हो आदर सत्कार।
मन सबका ये जीत ले, प्रेम भरा व्यवहार।।

धोखा देना पाप है, समझो इसको आप।
जीवन के किस मोड़ पर, लग जाएगा श्राप।।

जाने पर माने नहीं,अद्भुत लिए विचार।
ठोकर खाकर मानता, होता जब लाचार।।

प्रेम सदा पुलकित करे, करे पुष्प बौछार।
जीवन तो अभिराम है, खुले अगर मन द्वार।।

कौन यहाँ है श्रेष्ठ जन, कौन करे उपकार।
सबका मालिक एक है, कर्मों का आधार।।

राधेयश्याम 'प्रीतम'
प्रवक्ता हिंदी
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय किरावड़
जिला- भिवानी, हरियाणा

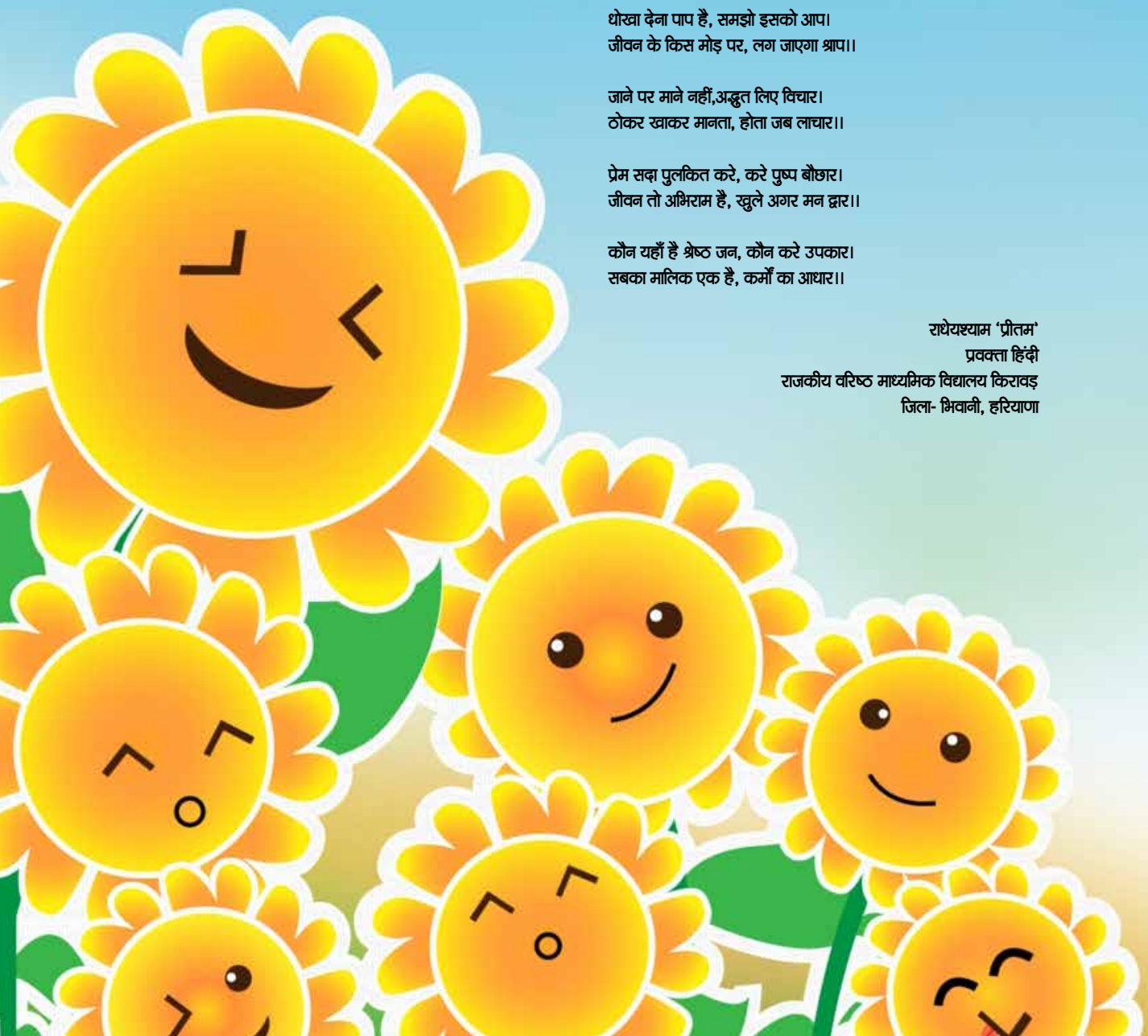

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

हरियाणा सरकार

दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम

लॉकडाउन के दौरान

टेलीविजन से पढ़ें

एजुसेट से पढ़ें

लॉकडाउन में टी.वी. के उपयोग से दूरवर्ती शिक्षा उपलब्ध करवाने वाला हरियाणा देश का पहला राज्य बना

लॉकडाउन के चलते विद्यार्थियों के लिए 3S का मंत्र है :

- STAY AT HOME
- SCHOOL AT HOME
- STUDY AT HOME

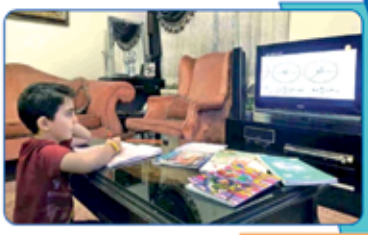

हरियाणा एजुसेट प्रसारण हेतु चैनल नम्बर

FW FASTWAY	296, 297, 298, 299	SITI DIGITAL	617, 618, 619, 620
DEN	514, 515, 519, 521	DDC CABLE	714, 715, 719, 110
Free Dish	119, 127, 128, 131	STAR CABLE	489, 490, 491, 492
JioTV		hathway	476, 477, 478, 490

NCERT के SWAYAM PRABHA के लिए चैनल नम्बर

VIDEOCON d2h	475, 476, 477
airtel digital TV	437, 438, 439
TATA sky	946, 947, 948, 949, 950
dishtv	2028, 2029, 2030, 2031, 2032

शिक्षक प्रतिदिन फोन/व्हाट्सएप के माध्यम से छात्रों से संपर्क करके उनके प्रश्नों को हल करेंगे

अधिक जानकारी के लिए
http://www.haryanaedusat.com

- लॉकडाउन अवधि के दौरान छात्रों के शैक्षणिक नुकसान को रोकने के लिए हरियाणा एजुसेट के माध्यम से टेलिविज़न से जुड़ा
- राज्य भर के सरकारी तथा निजी स्कूलों में पढ़ने वाले कक्षा पहली से बारहवीं के 52 लाख छात्रों के लिए ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म
- पुनः प्रसारण सुविधा के साथ हिन्दी और अंग्रेजी में मॉडयूल उपलब्ध
- NEET एवं JEE की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिए विशेष प्रबन्ध

स्कूल शिक्षा विभाग, हरियाणा

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा | www.prharyana.gov.in | @cmohry @DiprHaryana

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114